इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		दिसम्बर 2021	
16	गुरुवार	त्रयोदशी	भरणी
17	शुक्रवार	चतुर्दशी	कृत्तिका
18	शनिवार	पूर्णिमा	रोहिणी
19	रविवार	पूर्णिमा	मृगशिरा
20	सोमवार	प्रतिपदा	आर्द्रा
21	मंगलवार	द्वितीया	पुनर्वसु
22	बुधवार	तृतीया	पुष्य
23	गुरुवार	चतुर्थी	आश्लेषा
24	शुक्रवार	पंचमी	मघा
25	शनिवार	षष्ठी	पूर्वाफाल्गुनी
26	रविवार	सप्तमी	उत्तराफाल्गुनी
27	सोमवार	अष्टमी	हस्त
28	मंगलवार	नवमी	चित्रा
29	बुधवार	दशमी	स्वाती
30	गुरुवार	एकादशी	विशाखा
31	शुक्रवार	द्वादशी	अनुराधा
		जनवरी 2022	
1	शनिवार	त्रयोदशी/चतुर्दशी	ज्येष्ठा
2	रविवार	अमावस	मूल
3	सोमवार	प्रतिपदा	पूर्वाषाढ
4	मंगलवार	द्वितीया	उत्तराषाढ
5	बुधवार	तृतीया	श्रवण
6	गुरुवार	चतुर्थी	धनिष्ठा शतभिषा
7	शुक्रवार	पंचमी	पूर्वाभाद्रपद
8	शनिवार	षष्ठी	उत्तराभाद्रपद
9	रविवार	सप्तमी	रेवती दिन/रात
10	सोमवार	अष्टमी	रेवती
11	मंगलवार	नवमी	अश्विनी
12	बुधवार	दशमी	भरणी
13	गुरुवार	प्रतिपदा	कृत्तिका
14	शुक्रवार	द्वितीया	रोहिणी
15	शनिवार	तृतीया	मृगशिरा

तीर्थंकर कल्याणक

17 दिसम्बरः भगवान अरनाथ जन्म कल्याणक
18 दिसम्बरः भगवान संभवनाथ तप कल्याणक
21 दिसम्बरः भगवान मल्लिनाथ जन्म तप कल्याणक
30 दिसम्बरः भगवान चन्द्रप्रभ जन्म तप कल्याणक
30 दिसम्बरः भगवान पार्श्वनाथ जन्म तप कल्याणक
01 जनवरीः भगवान शीतलनाथ ज्ञान कल्याणक
12 जनवरीः भगवान शान्तिनाथ ज्ञान कल्याणक
13 जनवरीः भगवान अजितनाथ जी ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

18 दिसम्बरः रोहिणी व्रत
14 जनवरीः देवदर्शन दिवस
14 जनवरीः रोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

18 दिसम्बर : 07/05 बजे से 13/49 बजे तक ।
26 दिसम्बर : 07/09 बजे से 31/09 बजे तक ।
30 दिसम्बर : 24/34 बजे से 31/11 बजे तक ।
31 दिसम्बर : 07/11 बजे से 22/04 बजे तक ।
02 जनवरी : 07/07 बजे से 16/23 बजे तक ।
11 जनवरी : 07/09 बजे से 11/10 बजे तक ।
12 जनवरी : 14/00 बजे से 31/09 बजे तक ।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः दिसम्बर-19,22,26,27,31 जनवरी 5,10
मशीनरी प्रारंभ : दिस.-22,27,31, जनवरी-5,10,17
वाहन खरीदनेः दिस.-22,27,29, जनवरी-5,10,15

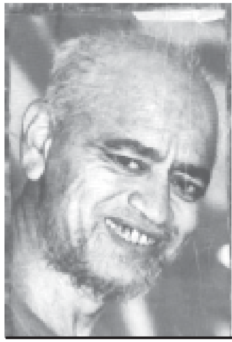

संस्कार सागर

• वर्ष : 24 • अंक : 273 • दिसम्बर 2021
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2078 • शक सं. 1942

लेख

• यश-सुख दायी दान 08
• अनात्मा से आत्मा की ओर 10
• जैन दर्शन और प्रमाद आधारित चिंतन 14
• श्वेतपिच्छाचार्य आचार्य श्री विद्यानंद 16
• जैनतीर्थ नैनागिरि में संस्थापित संयम कीर्तिस्तंभ 22
• वैशाली महोत्सव 38
• वरिष्ठ नागरिकः छोटी छोटी ध्यान देने योग्य बातें 41
• अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद को मिला आचार्य श्री विद्यासागर जी मंगल आशीर्वाद 43
• संस्मरण विचित्र किन्तु सत्य 48
• 14 अगस्त 2021 हुई क्षुल्लक दीक्षायें जबलपुर 52
• पिच्छि का परिवर्तन 53
• शरीर के स्वेद ग्रंथियो का महत्वपूर्ण योगदान व उनकी देखभाल 56
• जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच 63

बाल कहानी

• सड़क पर माँ 59

कविता

• जेब फाड़ती लूट मची है 24
• हिंसा ज्वाला 28
• चेतन ज्योति जलाई 40
• आखरी अल्फाज 42
• अमृत उत्सव 50

कहानी

• प्रभात बेला 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13 चलो देखें यात्रा : 20 • आगम दर्शन :25 • पुराण प्रेरणा : 27 • माथा पच्ची : 27 • कैरियर गाइड : 28 दुनिया भर की बातें : 29 • इसे भी जानिये: 34 •दिशा बोध : 35 • आओ सीखें : जैन न्याय : 36 वरिष्ठ नागरिक : 41 • हमारे गौरव : 51 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 58 • बाल संस्कार डेस्क : 59 • संस्कार गीत व बाल कविता : 60 • समाचार : 61

प्रतियोगिताएं : जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच :63 : वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल–9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें । बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के

- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
- भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
- आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
- कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, बदली भाषा शीर्षक से संस्कार सागर नवम्बर के अंक में दृष्टि गोचर हुये व्यवहार को कैसे बदला जाये इस तथ्य के तरीके को जेहन में कहानी के माध्यम से उतार दिया गया। रीना ने अपनी व्यवहार कुशलता का परिचय दिया। रीना ने भाषा को मोबाइल गेम से दूर हटाने के लिये जिस मनोवैज्ञानिक पद्धति को अपनाया वह सचमुच में आज के बच्चों को सुधारने के लिये कारगार सिद्ध होती है। रीना के माध्यम से जो शैर प्रस्तुत किया गया है कि **हिना रंग लाती है पत्थर से पिसने के बाद आदमी बदलता। ठोकर खाने के बाद** यह बहुत ही मनस्पर्शी लगा।
कहानी की भाषा बहुत ही सरल सुबोध है कथावस्तु चुस्त और क्रमबद्ध तर्क संगत है कहानी पठनीय अनुकरणीय और मोबाईल गेम की लत से बर्बाद होने वाले लोगों के लिये सुधरने की गहरी प्रेरणा देती है।

मनोज जैन, सांवरमति

• सम्पादक महोदय, विगत माह एयर इंडिया कंपनी को टाटा सन्स ने पुनः 68 वर्ष बाद 18 हजार करोड़ की बोली जीतकर खरीद लिया
इससे पहले सन् 1954 में भारत सरकार ने एयर इंडिया कम्पनी का अधिग्रहण किया था यह अधिग्रहण उस समय भी न्यायिक नहीं माना गया था किन्तु अपना दबदबा बनाने की दृष्टि से सरकार ने अधिग्रहण कर लिया था वर्तमान में 7 हजार करोड़ की देनदारी एयर इंडिया के पास थी एयर इंडिया को घाटे से उभरना आज भी एक चुनौती है बिना अनुभव के सरकार ने अधिग्रहण तो कर लिया था किन्तु कुशल संचालन नहीं कर पाये यदि यही कम्पनी का समय रहते निजीकरण कर दिया जाता तो बेहतर होता। **भ्रष्टाचार और लालफीता शाही से किसी भी कम्पनी का कुशल संचालन करना संभव नहीं है।**

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, कश्मीर घाटी का इतिहास त्रासदी रहा है और यही त्रासदी एक बार फिर विगत माह से दोहराती नजर आ रही है एक सरकारी स्कूल में आतंकियों ने घुसकर सिक्ख और हिन्दु अध्यापकों को चिन्हित करते हुये मौत के घाट उतार दिया। इस कश्मीर की जड़ कट्टरवादी मजहबी विचारधारा हैं। कश्मीर से लेकर अफगानिस्तान तक जो कुछ घटित हो रहा है वह आने वाले दिनों में सुरक्षा के सामने चुनौती ही हैं कश्मीर में सिक्ख और हिन्दु अल्पसंख्यक हैं और इन अल्पसंख्यकों के साथ जो व्यवहार हो रहा है वह कट्टर पंथ की एक सिर्फ वानगी है अगर समय रहते शक्ति का परिचय नहीं दिया गया तो कश्मीर हिन्दु और सिक्खों से शून्य हो जायेगा। इस स्थिति को रोकने के लिये सरकार को हर संभव प्रयास करने होंगे।

अभिषेक जैन, गांधीनगर

• सम्पादक महोदय, **करूणा महल के स्थाई स्तंभ अहिंसा** अजित जलज जी का लेख दृष्टि गोचर हुआ लेखक ने अहिंसा की भावना से जोड़ने का गम्भीर प्रयास किया है मैत्री को अहिंसा का स्वागत द्वार बताया गया है तथा गुणीजनों में प्रेम और दीनदयाल कृपालु भजमन जैसी चौपाई के माध्यम से पुनः अहिंसा का आधार करूणा को रेखांकित किया है साधना का शिखर माध्यस्थता बताते हुये यह बताया कि गांधी जी अंग्रेजों से घृणा नहीं करते थे इसी लिये गांधी जी ने अहिंसा के आधार पर अपनी जीवनचर्या बनाई थी और वे अहिंसा के विश्वस्तरीय प्रचारक सिद्ध हुये भारत देश में उन्हें अपना राष्ट्रपिता स्वीकार किया है लेखक ने विशिष्ट तारतम्य स्थापित किया है।

अमित जैन, खुरई

भक्ति तरंग

मैं चरनन का चेरा
राग-काफी

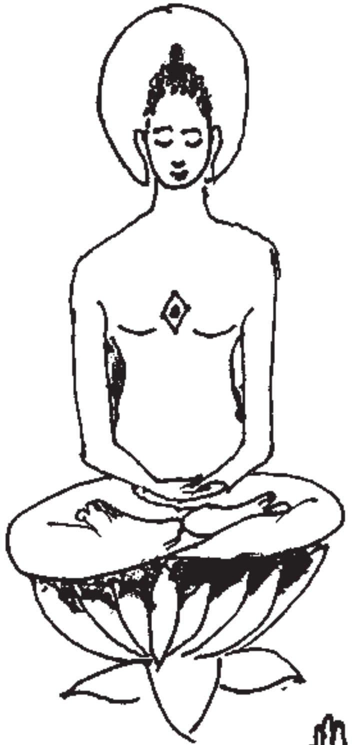

सीमंधर स्वामी,
मैं चरनन का चेरा।
इस संसार असार में कोई,
और न रक्षक मेरा ।। सीमंधर ।।
लख चौरासी योनिमें मैं,
फिरि फिरि कीनों फेरा ।
तुम महिमा जानी नहिं प्रभु,
पाया दुःख घनेरा ।।1।। सीमंधर ।।
भाग उदयतैं पाइया,
अब कीजे नाथ जिनेश।
बेगि दया करि दीजिये
मुझे अविचल थान बसेरा ।।2।। सीमंधर

नाम लिये अध ना रहे
ज्यों ऊगें भान अंधेरा।
भूधर चिन्ता ही न कोई
समरथ साहिब तेरा ।। सीमंधर

हे सीमंधर स्वामी ! मैं आपके चरणों का दास हूँ, सेवक हूँ, भक्त हूँ। इस नश्वर, सारहीन संसार में मेरी रक्षा करने वाला, रक्षक और कोई भी नहीं है। 84 लाख योनियों में बार-बार जन्म लेकर फिरता रहा हूँ पर आपकी महिमा को आपके गुणों को नहीं जाना, इस कारण तीव्र दुःखों को भोगना पड़ा हैं। अब मेरा भाग्योदय हुआ हैं कि आपके प्रति भक्ति जागृत हुई हैं। हे नाथ ! अब मेरा निबटारा कर दीजिये। शीघ्र ही कृपाकर अविचल स्थान सिद्ध-शिला पर मुझे अक्षय निवास प्रदान कीजिये। जैसे सूर्य के उदय होने पर अंधकार मिट जाता है, उसी प्रकार आपका नाम स्मरण करने से पाप नहीं ठहरते, वे नष्ट हो जाते हैं। भूधरदास कहते हैं कि जिसके स्वामी की ऐसी सामर्थ्य है उसको फिर कौन सी चिन्ता शेष रह सकती है अर्थात् नहीं रह सकती।

संस्कार प्रवाह

जैन धर्म दर्शन में "शोध-अभियान" की आवश्यकता

जैन धर्म अपने साहित्य के विपुल भण्डार से शोधार्थियों को सदैव आकर्षित करता रहा है जैन शास्त्र भण्डारों में काव्य, दर्शन, धर्म, अध्यात्म, सिद्धान्त, आचार्य, विज्ञान, मनोविज्ञान, समाज, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व, गणित, संगीत, आयुर्वेद, भौतिकी, रसायन, ज्यामिति, क्षेत्रमिति, भाषा विज्ञान, जैसे महत्वपूर्ण विषयरत्नों से भरा हुआ एक महासागर है। इस महासागर में डुबकी लगाकर नवीन मौलिक और प्रमाणिक विषयों को खोजा जा सकता है जैनों ने शोध प्रवृत्ति को सदैव प्रोत्साहित तो किया है किन्तु सम्यक् आधार प्रस्तुत नहीं किया है। आज पुनः एक ऐसे संगठन की आवश्यकता है जो शोध प्रवृत्ति को समीचीन आधार प्रस्तुत करे यद्यपि समाज में कई शोध संस्थान कार्य कर रहे हैं जबकि कुछ संस्थानों के मात्र बोर्ड लगे हैं उनके पास अच्छी लाइब्रेरी है किन्तु अच्छे शोध मार्ग दर्शकों की कमी खटकती रहती है। शोध को आधार देने वाले विद्वान डॉ. हीरालाल, नाथूराम प्रेमी, पं. कैलाशचंद सिद्धान्त शास्त्री, डॉ. ए.एन. उपाध्ये, डॉ. नेमिचंद शास्त्री ज्योतिषाचार्य, डॉ.महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, डॉ. जगदीशचंद जैन, अगरचंद नाहटा जैसे ख्याति प्राप्त विद्वानों ने जो शोध के लिये दिशा दी है उस पर कार्य होना अभी बाकी है।

डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन जैसे इतिहास विदों ने जो शोध के लिये भूमि तैयार की है वह सदैव स्मरणीय रहेगी बस अवश्यकता इस बात की है कि जैन शोध कार्य के लिये मार्गदर्शकों का समय-समय पर सम्मेलन होता रहे अथवा उनका एक दूसरे से संवाद स्थापित होता रहे तो निश्चित तौर पर शोध अभियान नये कीर्तिमानों को स्थापित अवश्य करेगा।आज भी आवश्यकता है कि एक ऐसी सूची तैयार की जाये जिसके माध्यम से शोध में गति और स्थायीपना पैदा हो सके **श्रुत सिद्धान्त शोध पीठ** शोध अभियान का ध्वज लेकर अपने कदम आगे बढ़ा रहा है।

यश-सुख दायी "दान"

✻ डॉ. महेन्द्र कुमार जैन मनुज, इंदौर ✻

अनुग्रह की भावना अर्थात् स्वयं अपना और दूसरे के उपकार की भावना से धनादि द्रव्यों का त्याग दान है। दान देने से दाता को पुण्य संचय होता है यह स्वोपकार है तथा जिन्हें दान दिया जाता है उसके सम्यग्ज्ञान आदि की वृद्धि होती है यह पर का उपकार है। और दान की विधि विशेष, दान में दिया गया द्रव्य विशेष, दान दाता विशेष और दान ग्रहणकर्ता विशेष के कारण से दान में विशेषता आती है।

सामान्य रूप से त्याग की आवश्यकता हर क्षेत्र में है। रोग की निवृत्ति के लिये, स्वास्थ्यत की प्राप्ति के लिये, जीवन जीने के लिये इतना ही नहीं मरण के लिये भी त्याग की आवश्यकता है। जो ग्रहण किया है उसी का त्याग होता है। पहले ग्रहण फिर त्याग यह क्रम है। यदि ग्रहण नहीं है तो त्याग भी नहीं होगा।

जो वस्तु अपनी नहीं है, उसमें मेरा पना छोड़ना, त्याग कहलाता है। वह त्याग जब सम्यग्दर्शन के साथ होता है, तब **उत्तम त्याग धर्म** कहलाता है। कई जगहों पर त्याग को दान के पर्यायवाची शब्द की तरह प्रयोग किया जाता है। परंतु दोनों में कुछ अंतर इस प्रकार है- त्याग पर (दूसरी-खोटी) वस्तु की मुख्यता से किया जाता है, दान अपनी वस्तु की मुख्यता से किया जाता है।

त्याग और दान दोनों अवस्थाओं में दोनों ही मुख्य हैं- श्रावक जब तक पर वस्तुओं में अपने पन का त्याग नहीं करेंगे तब तक उन्हें सम्यग्दर्शन नहीं होगा और साधु जब तक स्वयं में लीनता रूप स्वयं को चारित्र का दान नहीं करेंगे तब तक वह वास्तविक साधु नहीं कहलायेंगे।

दान के मूल 4 भेद हैं- **1. पात्रदान, 2. दयादान 3. अन्वयदान, 4. समदान।** पात्रदान मुनि, आर्यिका, ऐलक, क्षुल्लक आदि धर्मपात्रों को दान **पात्रदान** हैं। महाव्रतधारी मुनि, अणुव्रती श्रावक, व्रतरहित सम्यग्दृष्टि दान के पात्र हैं। इनको दिया जाने वाला दान 4 प्रकार का है। **1. आहारदान, 2. ज्ञानदान, 3. औषधदान, 4. अभयदान।** मुनि, आर्यिका आदि पात्रों को यथा विधि भक्ति, विनय आदर के साथ शुद्ध भोजन कराना आहारदान है। मुनि आदि को ज्ञानाभ्यास के लिये शास्त्र-अध्यापक का समान जुटा देना **ज्ञानदान** है। मुनि आदि व्रती त्यागियों के रोगग्रस्त हो जाने पर उनको निर्दोष औषधि देना, उनकी चिकित्सा (इलाज) का प्रबंध करना, उनकी सेवा सुश्रुषा करना **औषधदान** है। वन पर्वत आदि निर्जन स्थानों में मुनि व्रती त्यागियों को ठहरने के लिये गुफा मठ आदि बनवा देना जिससे वहाँ निर्भय रूप से ध्यान आदि कर सकें, **अभयदान** है।

दयादान या करूणादान-दीन दुःखी के दुःख दूर करने के लिये आवश्यकता के अनुसार दान करना दयादान है। यदि कोई दुखी दरिद्री भूखा हो तो उसको भोजन कराना चाहिये, यदि निर्धन विद्यार्थी हो तो उसको पुस्तक छात्रवृत्ति (वजीफा) ज्ञानाभ्यास का साधन जुटा देना चाहिये। गरीब रोगियों को मुफ्त दवा बाँटना उनके लिये चिकित्सा का प्रबंध कर देना, यदि दीन दरिद्र दुर्बल जीव का कोई सता रहा हो तो उसकी रक्षा करना, भयभीतर जीव का भय मिटा कर निर्भय करना, नंगे को वस्त्र देना, प्यासे को पानी पिलाना तथा अन्य किसी विपत्ति में फंसे हुये जीव का करूणा भाव से सहायता करना, किसी अनाथ का पालन पोषण करना, विधवा-अनाथिनी की सहायता करना, निर्धन लड़के-लड़कियों का विवाह सम्बंध करा देना, यह सब दयादान या करूणादान है।

समदान-समाज, जाति बिरादरी में सब व्यक्ति एक समान होते हैं। धनी धनहीन का भेद होते हुये भी सबके अधिकार बराबर होते हैं। उनमें छोटा बड़ापन नहीं होता, अतः समाज उन्नति के लिये जो धन खर्च किया जावे, प्रेम संगठन बढ़ाने के लिये जो द्रव्य लगाया जावे यह सब समदान है। जैसे-धर्मशाला बनवाना, विद्यालय पाठशाला खोलना, प्रीतिभोज करना, सभा समिति स्थापित करना, प्रचारकों द्वारा प्रचार करना इत्यादि। **अन्वयदान**-अपने पुत्र, पुत्री, भाई बहिन, भानजे, भतीजे आदि सम्बन्धियों को द्रव्य देना अन्वयदान है।

इन चारों दानों में से पात्रदान भक्ति से दिया जाता है। करूणादान दयाभाव से किया जाता है। समदान सामाजिक प्रेम से किया जाता है। और अन्वयदान सम्बंध के स्नेह से दिया जाता है।

सबसे उत्तम शुभफल पात्रदान से प्राप्त होता है। जैसे बड़ का बीज तिल से भी छोटा होता है किन्तु उसको बो देने पर बट का बड़ा भारी छयादार वृक्ष पैदा हो जाता है उसी तरह धर्म पात्रों को दिया गया थोड़ा सा भी दान बड़े भारी शुभ फल को प्रकट करता है। पात्रदान से दूसरी श्रेणी पर करूणादान है क्योंकि करूणादान में हृदय की दयाभावना फलती-फूलती है अहिंसा भाव का विकास होता है, जिससे धार्मिक परम्परा को प्रगति मिलती है। चौथी श्रेणी का अन्यवयदान है क्योंकि इसमें लौकिक स्वार्थ की भावना मिली रहती है। दान देते समय दाता के हृदय में न तो क्रोध की भावना आनी चाहिये, न अभिमान जाग्रत होना चाहिये, दान में मायाचार तो होना ही नहीं चाहिये। ईर्ष्याभाव से दान देने का भी यथार्थ फल नहीं मिलता। साथ ही किसी फल या नाम-यश की इच्छा से दान करना भी प्रशंसनीय तथा लाभदायक नहीं। **दाता को शांत, नम्र, सरल, निर्लोभी, सन्तोषी, विनीत होना चाहिये।** कीर्ति तो दान देने वाले को अपने आप मिलती ही है फिर कीर्ति की इच्छा से दान करना व्यर्थ है। दान देते समय सदा यह उदार भाव होना चाहिये कि जिसको दान दे रहा हूँ उसका कल्याण हो। दान देने से पुण्य कर्म का संचय होता है जिससे परलोक सुधरता, है इस कारण दान से स्व-उपकार होता ही है।

अनात्मा से आत्मा की ओर

❊ डॉ. प्रतिभा जैन (भाचावत), इंदौर ❊

जन्म देती रहे यह धरा, ऐसे ही महापुरुषों को।
जो सिंचित करते रहे मानवता की भूमि को, जय महावीर जय महावीर।

अहिंसा प्रधान एवं जनहित प्रेरक धर्म के रूप में सदा से जैन धर्म की अपनी विशिष्ट महत्ता रही है। जैन संस्कृति सदैव जनहित की भावना से अनुप्राणित रही है। जैन धर्म के प्रवर्तकों ने जाति-वर्ग-देश आदि से परे रहकर जन-जन को सम्यक ज्ञान-दर्शन-चारित्र का धर्मोपदेश देकर मोक्ष प्राप्ति की धर्म देशना देकर भव्य जीवों को मुक्ति पथ की ओर अग्रसर किया।

मनुष्य संसार का एक बुद्धिमान प्राणी है। अपनी बुद्धि का उपयोग कर इसने अपने जीवन को अधिक से अधिक अच्छा बनाने की कोशिश की है और आज मानव अपनी बुद्धि की बदौलत हर क्षेत्र (वैज्ञानिक, भौतिक, सामाजिक, चिकित्सा जगत आदि) में आगे बढ़ता जा रहा है। वह सैकड़ों हजारों वर्षों से निरंतर दौड़ता आ रहा है, लेकिन सुख-शान्ति के लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाया। इसका मुख्य कारण है प्राणी की आत्मरूप-विस्मृति। जिस प्रकार मदिरा पीकर व्यक्ति आत्म विस्तृत हो जाता है, उसी प्रकार यह प्राणी भी अनादिकाल से मोह रूपी मदिरा को पीकर अपने शुद्ध आत्म-स्वभाव को भूल रहा है। अपनी आत्म-विस्मृति एवं मिथ्या बुद्धि के कारण दुःख से मुक्ति का एक भी उपाय उसे नहीं सूझता हैं क्योंकि उसकी अंतदर्ष्टि शुद्ध नहीं है। जो अनेक प्रकार के विकल्पों से उद्वेलित है, उसके लिये नाना प्रकार के सम्यक् सम्पूर्ण शास्त्र व्यर्थ हैं। जैसे यदि किसी अंधे व्यक्ति के सामने करोड़ों दीप प्रदीप्त कर दें तो वह उसके लिये व्यर्थ हैं।

जब कभी किसी को काल लब्धिवश मोह का उन्माद कुछ उपशांत होता है, तब वह आत्म स्वरूप को समझने को प्रयत्न दर्शन करता है। उस समय उसे अनुभव होता है कि हे आत्मन्! तुम्हारा स्वभाव तो स्वयं अनंत सुख है। सावधान हो जाओ। तुम अपने अंदर की शक्तियों का विकास करो और तुम्हारे सुख के मार्ग में जो बाधक है उन्हें सदा के लिये उखाड़ फेंको। आत्म-स्वातंत्रय के लिये सर्वात्मना स्वाश्रयी बनो। आध्यात्मिक साधना व्यक्ति की आत्म-विस्मृति एवं मिथ्यादृष्टि का खंडन करती है और उसे पूर्णतया सुखी एवं स्वतंत्र बनाने के लिये स्वावलम्बन के पथ पर अग्रसर होने का निर्देश करती है।

जैन दर्शन इस दृश्यमान और परोक्ष सत्तात्मक विश्व को चेतन ओर जड़ (धर्म, अधर्म, आकाश, काल, पुद्गल) दो प्रकार के तत्वों का पिंड मानता है जो अनादि और अनंत है। प्रत्येक द्रव्य अपने गुण पर्यायों का स्वामी है और प्रति क्षण परिवर्तित होता रहता है। परिवर्तन अर्थात उनमें उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य का होना। जीव, धर्म, अधर्म, आकाश, काल और पुद्गल इन छः द्रव्यों में सदैव सदृश परिणमन होते हैं पर जीव और पुद्गल द्रव्यों में ऐसा न होकर सदृश और विसदृश, शुद्ध और अशुद्ध परिणमन होते हैं। इस तरह जीव द्रव्य जब तक संसार में है और कर्म

बंधन से आबद्ध है तक तक यह भी अशुद्ध परिणमन करता है। पर पदार्थों को अपनाता है, इनमें इष्ट-अनिष्ट की कल्पना करता है, अपने विशुद्ध चैतन्य स्वरूप को छोड़कर स्वयं को अन्य अनात्मीय भवों का कर्ता मानता हैं और आत्म-ज्ञान से इतर अनात्मीय में ही तन्मय रहता है, परन्तु जैसे ही इसे अपने आत्म स्वरूप का बोध होता है। यह पर वस्तु से क्रमशः अपना ममत्व दूर कर लेता है और कर्म बंधन से विमुक्त होकर विशुद्ध आत्म चैतन्य में रमण करने लगता है। यह विशुद्ध परिणमन है। अतः कहा जा सकता है कि अनातमा में आत्माभिमान बंध है अनात्मा से आत्माभिमान का दूर होना मोक्ष है।

जैन दर्शन जिन दर्शन अर्थात् आत्मदर्शन का रूपान्तर है। अतः इसमें आत्मा की दशाओं का, उसकी बद्ध और अबद्ध स्थितियों का और उसके कारणों का बहुत विशुद्ध और विधिवत विश्लेषण हुआ है। इस दर्शन ने व्यक्ति स्वातंत्रय को स्वीकार कर स्वावलम्बी वृत्ति को प्रश्रय दिया है।

आत्मा के सम्बन्ध में विभिन्न दार्शनिकों ने गहन चिंतन किये हैं और अपनी स्वतंत्र मान्यतायें स्थापित की है, परन्तु वे सब एकांत दर्शन पर आधारित है। जैन दर्शन में आत्म-स्वरूप का अनेकान्त दृष्टि से विवेचन किया गया है। आचार्य नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने जीव की व्याख्या करते हुये कहा है कि जीव अन्य द्रव्यों की तरह स्वतंत्र है और स्वातंत्र्य को प्राप्त करना उसका स्वभाव सिद्ध अधिकार है पर उसका अज्ञान ही उसमें अपराधी है और जीव की यह अज्ञानमूलक दुर्बलता स्व-पर विवेक के बिना दूर नहीं हो सकती। अज्ञानता दूर होते ही जीव अपनी अंध दशा और उससे मुक्त होने के प्रश्न पर विचारता हुआ ज्ञानमय अर्थात पूर्ण स्वातंत्र्य सम्पन्न हो जाता है।

जैन दर्शन में बंध का अर्थ जीव और कर्म का पारस्परिक सम्बन्ध माना गया है। ये मानते हैं कि जीव और कर्म पुद्गल का अनादिकाल सम्बन्ध ही अज्ञान है, बंध है और उसका वियोग ही ज्ञान है, मोक्ष है। अतः मुमुक्षु को अनात्मा में आत्मबुद्धि का निराकरण के लिये प्रयास करना चाहिये। क्योंकि आत्मा का परिपूर्ण सुख भोगोपभोग में नहीं है बल्कि भौतिक भोगों से विमुख हो कर आत्मा के शुद्ध-बुद्ध आत्म मरण में है। भोगेषणा तो अनंत है। ज्यों-ज्यों प्राणी भोग भोगता है, तृष्णा और आकुलता उतनी ही वृद्धिगत होती जाती है। कवि कहते हैं-

भोगन की अभिलाष हरण को त्रिजग सम्पदा थोरी।

आत्म विवेक द्वारा ही इस विषय की चाह को उपशांत एवं उपक्षीण किया जा सकता है।

आगे कवि कहते हैं कि तू भी ध्यान न रख सका कि

तन धन स्वजन नहीं है तेरे, नाहक नेह लगायो।
क्यों न तजे बाल समामृत, जो नित संत सुहायो॥

पर आज के भौतिक युग में मानव ने अपने आत्मरूप को भुलाकर पर से नाता जोड़ लिया है। और अपने को सुखी मान रहा है।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा है कि समस्त भौतिक और मानसिक दुःखों का मूल व्यक्ति की भोगा शक्ति में है। यदि हम मानव जाति को स्वार्थ, हिंसा, शोषण, भ्रष्टाचार एवं तज्जनित दुःखों से

मुक्त करना चाहते हैं तो हमें भौतिकवादी दृष्टि का त्याग कर के आध्यात्मिक दृष्टि का विकास करना होगा। कवि कहते हैं कि मानव को हर पल यह सोचना चाहिये कि

जीवन का क्या अर्थ यहाँ है, क्यों कंचन-सा तन पाया है,
क्या तुम समझ सके हो,क्यों नर भूतल पर आया है।

इस संसार में मनुष्य जन्म तो स्व पर कल्याण के मिलता है। यानि जिस प्रकार जल में पड़ा हुआ जहाज स्वयं तैर जाता है तथा अपने आश्रय में आये हुये प्राणियों को सागर पार करा देता है उसी प्रकार तू भी स्वयं सन्मार्ग पर चलकर अपनी आत्मा का कल्याण कर तथा अपने संपर्क में आने वाले अन्य प्राणियों को भी उसी मार्ग पर चलने को प्रेरित कर उनके उद्धार में भी सहायक बन।

समय समय पर महापुरुष आये हैं और उन्होंने जीवन को समग्रता से स्वीकार किया है तथा समग्रता से स्वीकार करने की प्रेरणा दी है जैसे हम महावीर को देखते हैं, बुद्ध, राम, कृष्ण को देखते हैं तो पता चलता है कि किस तरह से शून्य से प्रारम्भ होकर अंत तक पहुँच सकते हैं। भगवान महावीर के समग्र जीवन को उनकी साधना पद्धति को किसी एक ही शब्द में कहना हो तो वह है-वीतरागता। यही साधना का प्रारम्भ बिंदु है और यही अंतिम बिंदु भी। जो अंतर है वह पूर्णता और अपूर्णता का है। वीतराग भाव की क्रमिक विकास धारा साधना है और कभी क्षीण न होने वाली पूर्णता साधना का अंतिम बिंदु सिद्धि है।

आत्म दृष्टि के वैभव से सम्पन्न साधक के पास किसी प्रकार की भित्ति नहीं रहती, उसकी दृष्टि सदा अमर जीवन और अविनाशी आनंद की ओर लगी रहती है। भेद विज्ञान आत्मा का विवेक होने पर परमात्मा का आत्मीयता की ओर उसकी अडिग, अडोल श्रद्धा जागृत होती है और वह आत्मा के सिवाय अन्य वस्तुओं को परकीय मानता है। उसमें कभी भी आत्मीय बुद्धि नहीं करता। संसार के रिश्ते नाते सभी उसे मिथ्या प्रतीत होते हैं और वह सोचता है -

हम न किसी के, कोई न हमारा, झूठा है जग का व्योहार।

व्यावहारिक जगत में हम देखते हैं कि मनुष्य राग, स्नेह करने वालों को सज्जन मानता है और द्वेष रखने वालों को दुर्जन। पर निश्चय नय की दृष्टि से राग-द्वेष दोनों ही आत्म की वस्तु नहीं है। ये सब अचेतन कर्मों के विकृत भाव है।

विशुद्ध अवस्था में कोई भी भेद बुद्धि (मेरा-तेरा, आत्मा-परमात्मा आदि) नहीं रहती है। विशुद्ध आत्मानुभूति के क्षणों में सम्यर्क दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र जैसे आत्म विकल्प भी शेष नहीं रह जाते हैं। उस समय तो चैतन्य अपनी विशुद्ध अवस्था में विद्यमान रहता है और पुद्‌गल अपने विशुद्ध पौद्गलिक स्वरूप में। अतः कहा जा सकता है कि मानव की सम्पूर्ण अज्ञानता का आधार उसकी अपनी भूलभरी मूढ़बुद्धि है। अपने को सुखी बनाने के लिये उसे शुद्धात्मानुभूति को साथ या सामने रखकर ही अग्रसर होना चाहिये। इसी में उसका कल्याण है।

तू भक्तों के मनमंदिर में, सदा विराजित है स्वामी।
वीर जिनेश्वर तेरे पथ का, सदा रहे जग अनुगामी।।

ऊर्जा वर्धक योगासन

तानासनः सीधे खड़े हो जाये। बायें पैर को दायें के पीछे बायी तरफ रखें। पैर जमीन से कुछ ऊपर रहे। बायी पिंडली पर दाये पैर के अन्तभाग को रखें। दोनों हाथों को बांसुरी बजाने वाली स्थिति में रखे इस आसन में अपनी क्षमतानुसार रूके। श्वास-प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभ- इसके अभ्यास से नाड़ियाँ शक्ति शाली होती है। इसके अभ्यास से एकाग्रता बढ़ती है ध्यान आसानी से लगता है।

शवासनः आसन पर पीठ के बल पर लेट जायें। हाथ शरीर से 6 इंच की दूरी पर व पैरों में एक से डेढ़ फीट की दूरी रखें, शरीर को एकदम ढीला रखें। हथेली का रूख आसमान की ओर रखें। आँखे बन्द रखते हुये अपनी श्वास पर ध्यान रखें। श्वास-प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभः जिस प्रकार बैटरी डिस्चार्ज होने के पश्चात् चार्ज हो जाती है उसी प्रकार थकान के पश्चात् शवासन करने के शरीर चार्ज हो जाता है।

तानासनः पीठ के बल लेट जायें। दोनों हाथों व पैरों को लंबाकर आसन में मिलायें, दोनों हाथों को ऊपर की ओर ताने व पैरों को नीचे की और ताने। श्वास-प्रश्वास छोड़ते हुय सामान्य अवस्था में आ जायें।

लाभः इसके अभ्यास से पाचन संबंधी विकार, रीढ़ के विकारों में चमत्कारी लाभ होता है। रीढ़ की चिकित्सा में जो लाभ फिजियोथेरेपिस्ट द्वारा वजन लटकाने से होता है, वही लाभ तानासन से होता है।

नोकासनः पीठ के बल लेट जायें। दोनों पैरों व हाथों को सामने फैलाते हुये धड़ व सिर के साथ ऊपर उठायें। पूरे शरीर को कूल्हे पर संतुलित करते हुये कुछ देर रुकें कुछ समय रूकने के बाद धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में लेट जायें, पूर्ण स्थिति में श्वास-प्रश्वास सामान्य रखें।

लाभः मांसपेशियों व जोड़ों को यह आसन शिथिल करता है। यह आसन स्नायविक दुर्बलता व पाचन संबंधी विकारों के निदान में सहायक है।

जैन दर्शन और प्रमाद आधारित चिंतन

✻ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✻

आलस्य अवहेलता असावधानी गलती भूल लापरवाही ये सभी प्रमाद शब्द के पर्यायवाची शब्द हैं प्रमाद शब्द की उत्पत्ति **प्र** उपसर्ग मद् धातु और धन प्रत्यय से हुई है। जैन आचार्यो ने प्रमाद का अर्थ कुशलता से भी लिया है। कुशलता का अर्थ सही उचित, समझदार, चतुर, और प्रवीण से लिया गया है। जागरूकता पूर्वक अपने कर्म दत्तचित्त हो जाने को ही दार्शनिकों ने कुशल शब्द को उपयुक्त माना है। तत्वार्थ सूत्र ग्रंथ में जैन आचार्य उमास्वामी जी ने सर्वप्रथम प्रमाद शब्द का प्रयोग करते हुये पाप का आधार प्रमाद घोषित किया है। **प्रमत्त योगात् प्राण व्यपरोपणं हिंसा।** अर्थात् प्रमाद पूर्वक अथवा असावधानी अयत्नाचार पूर्वक किया हुआ कार्य हिंसा का आधार बनता है। किसी प्राणी की मृत्यु हो या न हो किन्तु प्रमाद पूर्वक किया हुआ कार्य हिंसा के दोष से जीव को लिप्त अवश्य ही करता है। संयम से प्रमाद आने पर संयम चितकवरा हो जाता है। अर्थात् संयम और संयम में शिथिलता दोनों साथ-साथ चलने लगती है।

प्रमाद के भेदों पर जैन साहित्य में गंभीर विमर्श किया गया है। मुख्य रूप से प्रमाद के चार भेद किये गये हैं। 1. इंद्रिय 2. कषाय 3. विकथा 4. निद्रा प्रणय। इंद्रिय के पाँच भेद उपलब्ध होते है। 1. स्पर्शन 2. रसना 3. घ्राण 4. चक्षु 5. कर्ण ये पाँचों इंद्रिय के भेद हैं तथा कषाय के प्रमुख चार भेद होते हैं - 1. क्रोध 2. मान 3. माया 4. लोभ तथा विकथायें भी मुख्य रूप से चार होती है। 1. भोजनकथा 2. राज्यकथा 3. चोरकथा 4. स्त्री कथा तथा निद्रा व प्रणय। भेद की दृष्टि से संयोगी भंग बनाकर परस्पर में गुणा करने पर प्रमाद के अस्सी भेद हो जाते हैं तथा इन्हीं प्रमाद के उपभेद तथा भेद प्रभेद करने पर इंद्रिय और मन को मिलाने पर इंद्रिय के छह रूप हो जाते है तथा कषाय के पच्चीस भेद हो जाते हैं । अनन्तानुबंधी क्रोध मान माया लोभ अप्रत्याख्यान 4. क्रोध मान माया लोभ, प्रत्याख्यान 4- क्रोध मान माया लोभ, संज्वलन 4- क्रोध मान माया लोभ, हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्री वेद, पुरुष वेद, नपुंसक वेद। तथा विकथाओं का विस्तार भी पच्चीस रूप में प्राप्त होता है। विकथा के पच्चीस भेद निम्न प्रकार हैं। 1. राजकथा 2. भोजनकथा, 3. स्त्रीकथा, 4. चोरकथा 5. धन 6. बैर,7. फरखण्डन 8. देश 9.कण्ट 10. गुणबंध 11. देवी 12. निष्ठुर 13. शून्य 14. कन्दर्प 15. अनुचित 16. भंड 17. मूर्ख 18. आत्मप्रशंसा 19. परिवाद 20. ग्लानि 21. परपीडा 22. कलह 23. परिग्रह 24. साधारण 25. संगीत। इसके आगे निद्रायें पांच होती है। वे निम्न प्रकार हैं। 1. निद्रा 2. निद्रा-निद्रा 3. प्रचला 4. प्रचला प्रचला 5. स्तानमृद्धि तथा प्रणय दो प्रकार के होते है- मोह और प्रणय इन सबका क्रमचय संचय करने पर साढ़े सैतीस हजार 37500/- प्रमाद के भेद हो जाते हैं।

1. कषाय 25×25 विकथा =625
2. 625×6 (पांच इन्द्रिय व एक मन) = 3750/-
3. 3750×5 (निद्रा)= 18750/-

4. 1850×2 (मोह, प्रणय)=37500/-

इस प्रकार से प्रमाद के भेदों का विस्तार 37500 हो जाता है। यह प्रक्रिया संयोगी भंगो के आधार पर सिद्ध होती है।

प्रमाद के प्रभाव और बाधाएँ - आध्यात्मिक दृष्टि से प्रमाद संयम की पूर्णता में सदैव बाधक रहता है तथा प्रमाद के द्वार पापों की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। ध्यान की सिद्धि प्रमाद के रहते कभी संभव नहीं हो पाती है। कर्म बंध की प्रक्रिया में प्रमाद का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। आचार्य कुन्दकुन्द देव ने जीव के गुणस्थानों के विभाजन प्रमाद और अप्रमाद के आधार पर किया है। पहले से छटवें गुण स्थान तक प्रमाद प्रधान रूप से अस्तित्व में रहता है सप्तम गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक जीव अप्रत्त रहता अर्थात् अप्रत्त संयत, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण सूक्ष्म साम्पराय, उपशांत मोह, क्षीणमोह, सयोग केवली, अयोग केवली, इन गुण स्थानों में जीव प्रमाद को जीतकर आत्मा की श्रुत अवस्था को प्राप्त करता है जब तक जीव प्रमाद अवस्था में अपने परिणामों को भ्रमित करता रहता है तब तक वह ध्यान की परम अवस्था को प्राप्त नहीं कर सकता है। ध्यानयोग की साधन में सबसे बड़ा यदि कोई बाधक होता है तो प्रमाद होता है। आचार्य शुभचंद्र जी ने अपने ज्ञानार्णव ग्रंथ में लिखा है कि एक बार मैं यह मान सकता हूँ कि गधे के सींग हो सकते हैं और आकाश में फूल हो सकते हैं किन्तु घर में रहते हुये गृहस्थ के प्रमाद को जीतकर ध्यान कि सिद्धि नहीं कर सकता हूँ।

प्रमाद का मनोवैज्ञानिक पक्ष- मन और प्रमाद का गहरा संबंध होता है मन की थकान और अरुची से प्रमाद की उत्पत्ति होती है किन्तु प्रमाद का प्रकटीकरण शरीर से होता है मन की अरूची असावधानी अनउत्साह शरीर पर प्रभाव डालता है इंद्रिय की प्रवृत्ति मन से अवश्य प्रभावित होती है। संवेदना विषय ग्रहण होने पर भी मन की अरूची होने पर विषय का सम्यक् प्रकार से ग्रहण नहीं हो पाता है। तथा अंतः करण में ध्यान विभ्रंश होता है। इस कारण से व्यक्ति की एकाग्रता भंग होती है, यही एकाग्रता का भंग होना मनोविकारों को जन्म देता है और उन मनोविकारों में विकथा आग में घी का काम करती है विकथा प्रमाद का प्रमुख स्तंभ है। विकथा सिर्फ वचनों से नहीं होती है अपितु वचन से विकथा का प्रकटीकरण होता है, विकथा का कच्चा चिट्ठा तो मन में तैयार होता है मन चंचल नहीं होता किन्तु विकथा और पंचेन्द्रिय के विषयों का आकर्षण मन को चंचल कर देता है। सुख आत्मा में है बाह्य विषयों में नहीं है किन्तु बाह्य विषयों में सुख की मान्यता और अवधारणा प्रमाद की जननी बनती है।

प्रमाद बंध और आश्रव का प्रमुख कारण है संपूर्ण साधनाओं को प्रमाद ही मूल्य शून्य कर देता है मोक्षमार्ग से भटकाकर संसार की पद्धति में लगाने वाला प्रमाद ही होता है जो प्रमाद को जीतने का सतत प्रयास करते हैं वे ही सच्चे साधक होते हैं अन्यथि एक क्षण की चूक सदियों तक सजा दिलाती है।

श्वेतपिच्छाचार्य आचार्य श्री विद्यानन्द

❋ डॉ. अरविन्द जैन, भोपाल ❋

आज भी ऐसी किवदंती है कि तपस्या देखनी हो तो आचार्य विद्यासागर जी की ओर ज्ञान देखना हो तो आचार्य विद्यानंद जी की।

आपका जन्म 22 अप्रैल 1925 को हुआ था। आप जैन धर्म के एक वरिष्ठ मुनि आचार्य, प्रमुख विचारक, दार्शनिक, लेखक, संगीतकार, संपादक, संरक्षक और एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी जैन धर्म साधु हैं जिन्होंने अपना समस्त जीवन जैन धर्म द्वारा बताये गये अहिंसा व अपरिग्रह के मार्ग को समझने व समझाने में समर्पित किया है। वह आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज के परम शिष्य हैं और उन्हीं की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से कन्नड़ भाषा में लिखे हुये कई प्राचीन ग्रंथों का सरल हिन्दी व संस्कृत में अनुवाद कर चुके है । उन्होंने जैन धर्म से संबंधित कई किताबें और लेख भी प्रकाशित किये हैं।

कन्नौज, (उत्तरप्रदेश) में स्थित दिगम्बर जैन मुनि विद्यानन्द शोधपीठ की स्थापना उन्हीं के नाम पर की गई है जो कि आज भी भाषा सम्बंधित शोध का केन्द्र बिन्दु है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं विद्वान साहू शांति प्रसाद जैन और डॉ. जयकुमार जी उपाध्याय उन्हीं के परम शिष्यों में से है। दिल्ली स्थित अहिंसा स्थल की स्थापना भी उन्हीं के करकमलों द्वारा की गई है।

कर्नाटक के सीमान्त ग्राम शेडवाल में 22 अप्रैल 1925 को एक शिशु का जन्म हुआ। शेडवाल ग्राम के वासियों व शिशु की माता सरस्वती का जन्म हुआ है। यही शिशु सुरेन्द्र कालान्तर में आगे चलकर अलौकिक पुरुष दिगम्बर मुनि विद्यानन्द बने।

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय जब सम्पूर्ण विश्व कलह, क्लेश, अज्ञान, हिंसा और अशान्ति की समस्याओं से जूझ रहा था, ठीक उसी समय मानवता व विश्वधर्म अहिंसा की पताका लेकर आगे बढ़ा।

सम्पन्नता भरे जैन ब्राह्मण परिवार के शिशु सुरेन्द्र का बचपन सामान्य था। सातगौड़ा पाटिल उनके बालसखा थे। वेदगंगा और दूधगंगा नदियों में क्रीड़ा में संलग्न दोनों बालसखा अच्छे तैराक बन गये। नदियों का कुशल तैराक सुरेन्द्र संसार सागर का कुशल तैराक सिद्ध हुआ। दानवाड़ में शिक्षा के दौरान सुरेन्द्र की रुचि पढ़ाई लिखाई की अपेक्षा खेलकूद में अधिक रही। खिलाड़ीपन की भावना और नेतृत्व क्षमता के कारण सुरेन्द्र अपने साथियों के बीच बहुत लोकप्रिय थे। चुनौतियों और खतरों से जूझने वाले सुरेन्द्र में स्वाभिमान व संकल्पशक्ति भी कूट-कूट कर भरी हुई थी।

भाषाओं के अध्ययन में सुरेन्द्र की गहरी रूचि रही। दानवाड़ में उसकी प्रारम्भिक शिक्षा मराठी के माध्यम से हुई। इसके बाद उसे शेडवाल के स्कूल में भर्ती किया गया जहाँ शिक्षा का माध्यम कन्नड़ था। उन्हें कन्नड़ स्कूल से हटाकर शांतिसागर आश्रम में भर्ती करा दिया। वहाँ शिक्षा का माध्यम मराठी था, अतः सुरेन्द्र की प्रतिभा निखर आई। आश्रम ने उसके व्यक्तित्व को परिपक्व किया। उसमें अनूठी कर्तव्यनिष्ठा जागी। पीड़ितों और दुखीजनों की मदद करना उसके

स्वभाव में शामिल था।

वास्तव में सुरेन्द्र का व्यक्तित्व आरम्भ से ही विलक्षण था। दूसरों को सुख सुविधा देने में आनंन्द आता था। उम्र में अपने से छोटों को मदद करना, रोगियों की देखभाल करना तथा दीन दुखियों को ढाढस बाँधना सदैव ही उसे ऐसे काम अच्छे लगते थे। नियति सरेन्द्र को जीवन पथ पर अभीष्ट दिशा की ओर ले जा रही थी। सुरेन्द्र को मात्र भौतिक उपलब्धियों से कभी संतोष नहीं हुआ। उसके मन में चलने वाला अंतर्द्वंद्व उसे किसी बड़े उद्देश्य की दिशा में बढ़ने का स्मरण कराता रहता था।

अपने असली लक्ष्य की तरफ बढ़ते जाने की इनकी इच्छा अडिग थी। धर्म की तरफ उसकी रूझान और वैराग्य वृत्ति छुटपन में भी स्पष्ट नजर आती थी। आजीविका की तलाश में वह पुणे पहुँचे। वहाँ उन्हें अपने मौसा जी की मदद से सैन्य सामग्री बनाने वाले कारखाने में काम मिल गया। इसे भाग्य की विडम्बना नहीं तो क्या कहा जाये कि जिसे भविष्य में अहिंसा का उपदेश देना था, उन्हें अपनी आजीविका के लिये हथियारों के कारखाने पर निर्भर होना पड़ा। कुछ दिनों बाद ही उन्हें एक बिस्कुट फैक्ट्री में काम मिल गया। पुणे में रहते हुये, सुरेन्द्र व्यापक वैचारिक सम्पर्क में आयें। राष्ट्र के मुक्ति युद्ध में शामिल हो गये। वह गांधी जी के विचारों से प्रभावित हुये और ये विचार उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन जाये।

बीमारी के कारण वह शेडवाल पहुँच गये। वहाँ उनका सारा समय चिन्तन मनन में बीतने लगा। गन्तव्य को पहचानने और अंधकार को चीरकर प्रकाश में आने की तड़प उनमें थी। नये कर्तव्य पथ और उदात्त जीवन शैली की खोज के लिये उनके मन द्वारा भी खोज का अनवरत क्रम जारी था। सन् 1942 में जब भारत छोड़ो का देशव्यापी आन्दोलन चला तो सुरेन्द्र भी इसके आह्वान से अछूते नहीं रह सके। संसार के अनुभवों ने, जो प्रायः कड़वे थे, उन्हें अनासक्ति की ओर मोड़ दिया। वैराग्य और ज्ञान के पथ पर सुरेन्द्र की निर्णायक यात्रा शुरु हो गई, यह सन् 1945 की बात थी। अगले ही वर्ष 1946 में एक अद्भुत संयोग हुआ। संयममूर्ति ज्ञानसूर्य महामुनि आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी ने शेड़वाल में वर्षायोग किया। आत्मिक शान्ति के इस मनोज्ञ अवसर से मानो सुरेन्द्र का पुनर्जन्म ही हुआ।

सुरेन्द्र प्रतिदिन मुनि श्री के वचन सुनते और आत्मा के आनन्द में निमग्न हो जाते। आधुनिक वेशभूषा में रहने वाले इस क्रांतिकारी युवक ने सादगी को अपना जीवन क्रम बना लिया। परिचित, मित्र व परिजन इस परिवर्तन को देखकर चिंतित हुये परन्तु कोई भी सुरेन्द्र के मन की थाह नहीं पा सका।

नियमित रूप से ज्ञान साधना के लिये आने वाले इस सुन्दर युवक की तरफ आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी का ध्यान जाना स्वाभाविक था। सुरेन्द्र की ज्ञान पिपासा और तर्कणा शक्ति ने उन्हें प्रभावित किया। वे बड़े प्रेमपूर्वक सुरेन्द्र से चर्चा करते और उसके विचारों को सुनकर हर्षित होते। एक दिन बातों की बातों में सुरेन्द्र ने मुनि श्री के सामने मुनि दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की।

क्षुल्लक दीक्षाः मुनि श्री महावीर कीर्ति जी प्रसन्न तो मुनि श्री महावीर कीर्ति जी प्रसन्न तो

हुये, किन्तु 21 वर्ष की तरूणावस्था को देखकर किंचित् झिझके और बोले माता-पिता की अनुमति प्राप्त कर लो, काम आसान हो जायेगा। ग्रामवासियों के लिये उनका अन्तिम उपदेश चल रहा था। लोगों के मन में एक ही प्रश्न करवट ले रहा था कि सुरेन्द्र अब क्या करेंगे ? मुनि जी की पदयात्रा शुरु हुई और लोगों ने देखा कि शिष्य सुरेन्द्र उनके अनुगामी हुये। लोगों ने सुरेन्द्र को समझाया, प्रश्न किये परन्तु उगते हुये सूरज को कोई भला हथेली से रोक सकता है ? वे तमदड्डी पहुँचे। उन्होंने आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी से पुनः दीक्षा की प्रार्थना की। फाल्गुन सुदी तेरस 1946 को उनकी वर्णी दीक्षा क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति के नाम से सम्पन्न हुई। सन् 1946 कुंडलपुर से 1962 तक वे शिमोगा में अपने 17 चातुर्मास पूर्ण करने के उपरांत उन्होंने दिगम्बर मुनि दीक्षा लेने की इच्छा प्रकट की।

अपने जैन दर्शन एवं शास्त्र व्याख्यान के लिये लोकप्रिय अनुयायियों धर्मावलंबियों को जब यह बात मालूम हुई तो उन्होंने क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति जी महाराज को एक पालकी में बिठाकर अपने कंधों पर उठाकर एक जुलूस के रूप में नगर भ्रमण कराया।

उन्दापुर में वर्ष 1946 तक में शिमोगा वह पूर्ण 17 चातुर्मास से पहले जा रहा है अंत में शुरु के रूप में मुनि विद्यानंद द्वारा आचार्य देशभूषण जी में वर्ष 1963 उन्होंने इतना लोकप्रिय बनने के लिये व्याख्यान और ब्रीफिंग पर जैन शास्त्रों कि उसकी 15 चातुर्मास में बेलगाम था उत्साह के साथ मनाया जाता है और अपने अनुयायियों को पालकी पर उसे पर वहाँ कंधों लिया और उसे शहर के चारों और उसे लागू करने के लिये जनता के लिये वर्ष 1960 में ।

मुनि दीक्षाः 17 साल कठोर तप एवं जैन आचार्य संघ के अनुशासन और मार्गदर्शन में दिल्ली के चांदनी चौक क्षेत्र की लच्छूमल जी धर्मशाला 10 जुलाई 1963 का पावन दिन, पूज्य आचार्य रत्न श्री देशभूषण महाराज के समक्ष क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति ने मुनि दीक्षा प्रदान करने के लिये प्रार्थना की तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। 22 जुलाई 1963 दिल्ली जैन पंचायत के पंच, साहू शान्तिप्रसाद जी एवं श्रीमती रामरानी जैन के सहयोग से क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति ने पुनः अपने संकल्प को अपेक्षाकृत अधिक दृढ़ता के साथ दोहराया तो आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज ने शुभ नक्षत्र एवं मुहूर्त देखकर बृहस्पतिवार 25 जुलाई 1963 को क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति जी को एक भव्य आयोजन कर विधि विधान पूर्वक मुनि विद्यानंद के रूप में दीक्षा दी ओर अपने संघ में सम्मिलित कर लिया।

श्वेतपिच्छिका आचार्य मुनि श्री विद्यानंद जी : 24 जुलाई 2010 को सिद्धांतचक्रवर्ती परमपूज्य आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज ने कुन्दकुन्द भारती में आयोजित एक धर्मसभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि- प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभनाथ के समय से यह मुनि परम्परा निर्बाध रूप से चली आ रही है। साधु और श्रावक एक दूसरे के पूरक है। निश्चय और व्यवहार धर्म यह दो अलग अलग हैं । सूतक और पातक पालना व्यवहार धर्म है।

अनेक महापुरुषों पर संकट आये हैं। भगवान आदिनाथ को भी अशुभ कर्मों ने नहीं छोड़ा और 6 महीने तक आहार की विधि नहीं मिली। अभी कुछ समय पहले ही दिगम्बर साधु समुदाय

पर सरकार की ओर से मयूर पंख पर प्रतिबंध लगाने की बात को लेकर समाज में चिंता व्याप्त हो गई, क्योंकि आदिकाल से दिगम्बर साधु की मुद्रा मयूर पिच्छि एवं कमण्डलु ही है।

जब 2 मई 2010 में दिगम्बर जैन साधुओं पर संकट आया। सरकार ने मयूर पंख पर प्रतिबन्ध लगाने का अध्यादेश प्रसारित किया, जिस कारण जैन समाज में हडकम्प मच गया, क्योंकि मयूर पिच्छि तो जैन साधुओं का प्रतीक चिन्ह है। ध्यातव्य है कि आचार्य श्री ने मयूर पंखों के प्रतिबंध अध्यादेश के विरोध में माननीया श्रीमती सोनिया गांधी जी, माननीय डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री, डॉ. एक वीरप्पा मोईली (विधि एवं कानून मंत्री), एवं श्री जयराम नरेश (पर्यावरण एवं वन विभाग मंत्री) को पत्र लिखवाकर और पत्रो के साथ आगमो के अनेक कारण प्रमाण, पुरातत्त्वों से प्राप्त अनेक चित्र आदि प्रामाणिक सामग्री भेजनकर यह सिद्ध किया कि यह मयूर पंख धार्मिक चिन्ह के रूप में मान्य है। अतः इस पर प्रतिबंध हटाना ही उपयुक्त है।

यद्यपि किसी भी धार्मिक चिन्ह पर प्रतिबन्ध लगाना असंवैधानिक है। सरकार ने इसको स्वीकार किया और प्रतिबंध वापस ले लिया। मयूर पंख पर प्रतिबंध की सूचना विदेशों में रहने वाले जैन भक्ता को भी मिली, उन्होंने तत्काल वहाँ से श्वेत मयूर पंख भारत भिजवाये और उनसे निर्मित एक श्वेतपिच्छी तैयार की गई।

उनको श्वेत पिच्छी भेंट की गई और पूज्य उपाध्याय श्री प्रज्ञसागर जी ने कहा कि आचार्य श्री जी का श्वेतपिच्छाचार्य होगा। उपस्थित समुदाय ने उसकी अनुमोदना करते हुये श्वेतपिच्छाचार्य के अलंकरण के साथ जयघोष का उच्चारण किया। अब से आचार्य श्री का विरूद्ध हुआ। श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंद मुनिराज।

आचार्य श्री विद्यानंद 1987, 28 जून 1987 को एक भव्य आयोजन में आचार्य रत्न श्री देशभूषण जी महाराज ने मुनि विद्यानंद को आचार्य पद प्रदान किया।

सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानंद 1979, 17 दिसंबर 1979 इंदौर चतुः संघ

एलाचार्य श्री विद्यानंद जी 17 अगस्त 1978 को दिल्ली में भव्य आयोजन के तहत आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी ने एलाचार्य उपाधि प्रदान की।

उपाध्याय श्री विद्यानंद जी 8 दिसंबर 1974 में एक आयोजन के तहत दिल्ली में आचार्य रत्न श्री देशभूषण जी ने उपाध्याय के रूप में सम्मानित किया।

मुनि श्री विद्यानंद 1964, आचार्य रत्न श्री देशभूषण जी 25 जुलाई 1963 को दिल्ली में एक भव्य आयोजन कर अपने संघ में मुनि श्री विद्यानंद के नामकरण से सम्मिलित किया।

क्षुल्लक श्री पार्श्वकीर्ति जी 1946, 15 अप्रैल 1946 कर्नाटक में अपने वर्षायोग चातुर्मास के अंतर्गत आचार्य महावीर कीर्ति जी ने युवा श्री सुरेन्द्र उपाध्याय को क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति के रूप में ब्रह्मचर्य पूर्ण क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की और अपने संघ में शामिल कर लिया।

वयोवृद्ध आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज ने जैन समाज के अंदर व्याप्त कुरीतियों के प्रति जन जागरण का कार्य कर भाँतियों को दूर किया।

चलो देखें यात्रा

सम्मेदशिखर जी की संस्थायें

सम्मेदाचल महापर्वत तथा शाश्वत निर्वाणभूमि है। अनन्त तीर्थंकर अपनी अमृतवाणी और दिव्य दर्शन से इस तीर्थ को पवित्र बना चुके हैं। वर्तमान चौबीसी के 20 तीर्थंकर यहाँ से मोक्ष गये हैं। पर्वत पर जल मंदिर व चोपडाकुण्ड पर भी मंदिर है। मधुवन तलहटी में अनेक भव्य जिनालय व धर्मशालायें पर्वत वन्दना के लिये डाक बंगले पर यात्रियों के रहने की सुविधा है।

प्रबन्ध व्यवस्था: संस्था श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर कमेटी बीसपंथी कोठी।

अध्यक्ष: श्री अजयकुमार जैन, देवाश्रम, आरा (06122221258)

मंत्री: श्री अरविन्द आर, दोशी मुम्बई

मेलामंत्री: श्री महावीर प्रसाद सेठी (06557-235889)

प्रबन्धक: श्री सुधाकार के अन्नदाते (09860016913)

आवागमन के साधक: रेल्वे स्टेशन 23 किमी. गिरिडीह -32 किमी. बस स्टेण्ड- गिरिडीह

पहुँचने का मार्ग- गिरिडीह से मेन लाईन पर मधुवन से गया कलकत्ता मार्ग पर।

सरलतम मार्ग- पारसनाथ रेल्वे स्टेशन से मधुवन

क्षेत्र पर उपलब्ध सुविधायें आवास: कमरे (अटैच बाथरूम), 280 कमरे (बिना बाथरूम)- 300, हॉल-30, गेस्ट हाउस- 15 यात्री ठहरने की कुल क्षमता-4500।

भोजनशाला: नियमित सशुल्क एवं निःशुल्क

विद्यालय: है, औषधालय: है, पुस्तकालय: है।

टेलीफोन: बीसपंथी कोठी- 06558-232228, 232209, 098014335991, 07739397175

विशेष जानकारी: बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर जी शाश्वत निर्माण भूमि होने के कारण तीर्थराज की संज्ञा से विभूषित है। इसकी गरिमा के अनुरूप इस क्षेत्र पर सर्वाधिक तीर्थयात्री आते हैं। फलतः अनेक जिनालयों , धर्मशालाओं यात्री निवासों का मधुवन तलहटी में निर्माण किया गया हैं। इन जिनालयों एवं धर्मशालाओं आदि की व्यवस्था हेतु अनेक संस्थायें। कमेटियाँ कार्यरत है । इनमें से प्रमुख संस्थायें एवं उनके दूरभाष नम्बर निम्नलिखित है ।

शिखर जी:

1 श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी कोठी- 06558-232291, 232292, 08651950768

2 मध्यलोक संस्थान: 06558232257, 09471972887

3 उत्तरप्रदेश प्रकाशभवन: 06558, 232366,67,71, 09431509723

4 श्री दिगम्बर जैन शाश्वत भवन: 06558-232377, भोजनशाला: 232314,

5 श्री दिगम्बर जैन म्यूजियम शोध समिति: 06558-232253, 9631003339

6 आचार्य सुमतिसागर, त्यागीवृत्ति आश्रम- 06558-232261, 9431885291

7 राजस्व डाक बंगला-09431973270

8 दि. जैन यात्री निवास तीर्थक्षेत्र कमेटी: 06558232265, 8102761253

9 दि. जैन तारण तरण कोठी: 09431973981, 9608190111

10 दि. जैन लमैचू मैत्रीय भवन: 06558232403, 9425336353

11 श्री अणिंदा पार्श्वनाथ भवन: 06558232215, 09423165703

12 सन्मति साधना सदन-06558-232218

13 श्री दिगम्बर शाश्वत बिहार निहारिका:06558232358, 9431395497

14 श्री भारतीय दिगम्बर जैन त्रियोग आश्रम: 06558232252

15 श्री कुन्दकुन्द कहान नगर: 06558232449, 07250536682

16 गुणायतन: 06558-232438, 0852169430, 9471580119

17 भरत कुसुम मोदी भवन: 0887112656, 06558-232347

18 भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी: 06558-232270, 09431387704

19 आ. शान्तिसागर धाम: 8292797023, 0925953391

20 जहाज मंदिर (सराक भवन): 09431532387

21 धर्ममंगल जैन विद्यापीठ: 05658232230, 232306

22 भोमिया भवन: 06558-232203, 09431506203

23 कच्छी धर्मशाला: 06558-232225, 09431506208

24 दि. जैन समवशरण मंदिर- 09905339602

25 दि. जैन तीस चौबीसी भवन- 09430165495

ईसरी बाजार- पारसनाथ रेल्वे स्टेशन के समीप धर्मशालायें हैं जिनमें चार जिनालय, वृत्ती आश्रम एवं समाधि स्थल गणेश प्रसाद वर्णी, जिनेन्द्र प्रसाद वर्णी एवं महिला आश्रम हैं।

1 बीसपंथी कोठी ईसरी बाजार: 06558233258, 0943078446

2 तेरापंथी कोठी ईसरी बाजार: 06558233228, 08969166934

3 उदासीन आश्रम ईसरी बाजार: 09308125312, 943035083

जैन तीर्थ नैनागिरि में संस्थापित संयम कीर्ति स्तंभ

✻ सुरेश जैन, (आई.ए.एस), भोपाल ✻

श्री मन्नाकनरेन्द्र वन्दित पदः श्री पार्श्वनाथः प्रभु,
र्यत्रागत्य शशास भव्यनिकरं सद्धर्मतत्वं चिरम्।
तन्नवा यत्र तपः प्रतिग्ममचिरं याताः शिवं शाश्वतं,
वरदत्तादि मुनीश्वरा गुणधरा ध्वस्ताष्टकर्मव्रजाः ।।
नमामो रेशन्दी गिरि मघविघाताय खलु तम् ।।

नैनागिरि स्तुतिः पण्डित पन्नालाल जैन

लक्ष्मी से युक्त इन्द्रों तथा चक्रवर्तियों से जिनके चरण वन्दित थे ऐसे पार्श्वनाथ भगवान ने जहाँ आकर बहुत समय तक भव्य जीवों के समूह को समीचीन धर्म की देशना दी और जहाँ कठिन तप तपकर गुणों के धारक इन्द्रदत्त, गुणदत्त, वरदत्त, सायरदत्त और मुनीन्द्रदत्त मुनिराज अष्टकर्मों के समूह को नष्ट कर शीघ्र ही अविनाशी मोक्ष को प्राप्त हुये थे। निश्चय से पाप नष्ट करने के लिये नैनागिरि (रेशन्दीगिरि) जैन तीर्थ को हम प्रणाम करते हैं ।

दीक्षासुशिक्षाप्रमुखैः प्रयत्नैः, संपोषितानां सुतनिर्विशेषं।
निर्ग्रंथ प्रियशिष्यकल्याणभूमिः, नैनागिरिं तं तीर्थ नमामि।।

नैनागिरि वंदनाः पण्डित शिवचरणलाल जैन

दीक्षा, श्रेष्ठ कल्याणकारी शिक्षा आदि प्रयासों द्वारा निर्ग्रन्थ आचार्यों ने जिन प्रियशिष्यों का पुत्रवत् संपोषण किया है, उनकी कल्याणकारी भूमि श्री नैनागिरि तीर्थ की मैं वन्दना करता हूँ।

गत शताब्दि में आध्यात्मिक क्रांति के जब आचार्य विद्यासागर जी के बुन्देलखण्ड के हृदय स्थल में स्थित नैनागिरि (रेशंदीगिरि) तीर्थ पर तीन चातुर्मास तथा चार शीतकालीन प्रवास हुये हैं। और शताधिक युवक/युवतियों को आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत दिये है। उनके संयम स्वर्ण दीक्षा वर्ष में विशाल संयम कीर्ति स्तंभ स्थापित किया गया है।

आचार्य श्री के वरिष्ठ शिष्य मुनिवर प्रमाणसागर जी ने गत दशाब्दि के अस्सी के दशक में ब्रह्मचारी और ऐलक के रूप में नैनागिरि में रहकर असाधारण साधना की हैं। उनके दार्शनिक चिंतन का सूत्रपात नैनागिरि की वरदत्त गुफा में और समीपस्थ सिद्ध शिला पर बैठकर हुआ है। उन्होंने पूरे देश में शताधिक कीर्ति स्तंभों की स्थापना के माध्यम से जैन संस्कृति को चिरस्थायी स्वरूप प्रदान किया है और अपने गुरु की कीर्ति में शताधिक गुनी वृद्धि की है। हमने और हमारे साथी, नैनागिरि तीर्थ के न्यासी तथा सुप्रसिद्ध पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. एस.के. जैन ने प्रमाणसागर जी से नैनागिरि में संयम कीर्ति स्तंभ स्थापित करने के निवेदन किया और उन्होंने तुरंत ही सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान की। उनकी प्रेरणा तथा हमारे आग्रह

से हमारे अभिन्न मित्र और देश के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री पन्नालाल जी बैनाड़ा, आगरा द्वारा इस समुन्नत संयम कीर्ति स्तंभ की स्थापना की गई। निश्चित ही यह स्तंभ गुरुदेव विद्यासागर जी की मुक्त हँसी, खुशी और यादों की खुशबू पूरे देश में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में सहस्त्रों वर्षो तक फैलाता रहेगा।

यह उल्लेखनीय है कि संयम कीर्ति स्तंभ का भूमि पूजन 7 मई 2017 को आर्यिका तपोमति जी के सान्निध्य में श्री अशोक कुमार जी जैन, ठेकेदार, बण्डा और उनके साथियों द्वारा किया गया था। उन्होंने तथा बण्डा की पूरी जैन समाज ने कीर्ति स्तंभ के स्थल को विकसित करने के लिये और संबंधित कार्य संपन्न कराने हेतु पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया है। अतः उन सबको हार्दिक साधुवाद।

भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के अध्यक्ष तथा बैनाड़ा जी के समधी माननीय श्री निर्मल जी सेठी ने नौका में बैठकर महावीर सरोवर के दक्षिण तट पर 1 नवम्बर, 1981 को नैनागिरि में आचार्य श्री की प्रेरणा से समवशरण मंदिर का शिलान्यास किया था। शिलान्यास के कुछ समय बाद अस्सी के दशक में ही समवसरण मंदिर के निर्माण के लिये श्री निरंजनलाल एवं श्री रतनलाल बैनाड़ा ने बड़ी राशि प्रदान की थी। आपके द्वारा श्री सिंघई सतीशचन्द्र केशरदेवी जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, नैनागिरि को भी सहयोग प्रदान किया गया था।

भूतल पर स्थित इस कीर्ति से जैन संस्कृति की कीर्ति थल के साथ-साथ जल और नभ में भी फैलेगी। हमारे मुनिवरों , प्रतिष्ठाचार्यों ओर विद्वानों की राय के अनुसार पूरे देश में निर्मित कीर्ति स्तंभों में भगवान पार्श्वनाथ के समवसरण क्षेत्र के केन्द्र बिन्दु पर स्थापित इस कीर्ति स्तंभ की लोकेशन सर्वोत्तम है। विशाल चौबीसी मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन मूर्ति के बाई ओर स्थापित यह स्तंभ वरदत्त वन के उत्तरी प्रवेश तथा महावीर सरोवर के दक्षिणी तट की पहाड़ी पर स्थित है। हमारे खगोल वैज्ञानिकों और ज्योतिर्विदों ने बताया है कि जब सूर्य दक्षिणायन होगा तब पूरा कीर्ति स्तंभ महावीर सरोवर में प्रतिबिंबित होगा। सूर्य के उत्तरायण होते ही सूर्य की पूरी किरणों से कीति स्तंभ आलोकित हो उठेगा। गत शताब्दि के सत्तर और अस्सी के दशक में नैनागिरि में चलते-फिरते विद्यासागर जी की स्मृति को जीवंत करेगा। इस परिसर के सौन्दर्यीकरण के सभी तीव्रगति से शीघ्र ही पूर्ण किय जा रहे हैं।

यह संयम कीर्ति स्तंभ अक्षांश 24 डिग्री 18 मिनिट 22 सेकेण्ड एवं देशांश 79 डिग्री 7 मिनिट 7 सेकेण्ड के बीचोबीच समुद्र की सतह से 470 मीटर (1542 फीट) ऊँचाई पर स्थित है। विन्ध्याचल की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में सेमरा पठार नदी के उत्तरी तट पर स्थित नैनागिरि पर्वत पर मकराना मार्बल से बना श्वेत रंग का यह स्तंभ 31 फीट ऊँचा है। इस विशाल स्तंभ में आचार्य श्री की दीक्षा से लेकर अब तक की साधना यात्रा को आकर्षक चित्रों और संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के चुने हुये सुन्दर शब्दों और वाक्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

इस कीर्ति स्तंभ में आचार्य श्री आध्यात्मिक जीवन की पूरी झलक दिखाई देती है।

नैनागिरि में स्थापित यह विशाल संयम कीर्ति स्तंभ जैन सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को नई ऊँचाई दे रहा है। यह स्तंभ आचार्य श्री की ऊँचाई से 6 गुना ऊँचा है। विन्ध्याचय की नैनागिरि पहाड़ी पर स्थित यह स्तंभ तेज हवाओं को झेल सकता है। भूकंप का सहन है। यह स्तंभ राजस्थान के कलाकारों द्वारा वर्तमान कालीन कला के अनुरूप मार्बल स्टोन से बनाया गया है। यह स्तंभ हमारी राष्ट्रीय और वैश्विक महत्वाकांक्षा का प्रतीक है। जैन संस्कृति में बढ़ती आध्यात्मिकता के स्वाभिमान का प्रतीक है। इस स्तंभ के दर्शन करते हुये दर्शनार्थी नैनागिरि पहाड़ी की प्राकृतिक शीतल बहार का आनंद लेते हैं। सिद्ध शिला की पावन माटी को अपने माथे पर लगाते हैं।

नैनागिरि असीम प्राकृतिक ऊर्जा का केन्द्र है। यहाँ विद्यमान शक्ति संपन्न ऊर्जा के कण हमारी कष्टदायक और नकारात्मक तरंगों को नष्ट कर देते हैं। अतः इस आलेख के पाठको से विनम्र आग्रह है कि वे नैनागिरि पधारें। भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन कर आत्मिक शांति तथा आनंद प्राप्त करें और अपने जीवन का चतुर्मुखी विकास करें।

कविता

जेब फाड़ती लूट मची है

❊ सुभाषचंद्र सरल, अशोकनगर (म.प्र.) ❊

कोरोना का कहर मचा है, दुष्ट जनों की लूट मची है
प्रायवेट सभी हास्पिटल्स में, जेब फाड़ती लूट मची है
पहिले पाँच के बीस लेते थे, आज पाँच के पचास खींच रहे
मरीज का घरोंदा उजाड़कर, अपना आलशीन गार्डन सींच रहे
मानव पशु समान हो भूलकर लोभी, अपना टेंक तिजोड़ी भरता आया
जन जन पर संकट आया है, जेबकतरों सी लूट मची है
प्रायवेट सभी हास्पिटल्स में, जेब फाड़ती लूट मची है
लॉकडाउन अच्छा उपाय है, कोरोना पर रोक लगाने का
बेईमानों ने अवसर पाया है, एक से बीस कमाने का
जीवन रक्षक दवाओं की कालाबाजारी, चोर लुटेरे मिलकर कर रहे
लूट-लूट कर नरभक्षी, अपना घर और लॉकर भर रहे
जीवन रक्षक ही भक्षक बन बैठे, बेईमानों की लूट मची है
प्रायवेट सभी हास्पिटल्स में, जेब फाड़ती लूट मची है
शासकीय सभी प्रयास हैं अच्छे, कोरोनो से मुक्ति दिलाने में
हम सचमुच गम्भीर नहीं हैं, कोरोना से मुक्ति पाने में
प्रशासन के आदेशों को माने, एक दूजे से दूरी बनायें
दायित्व कर्तव्य सभी भूल गये, जंगल जैसी लूट मची है
प्रायवेट सभी हास्पिटल्स में, जेब फाड़ती लूट मची है

आगम दर्शन

नयों का दर्पण नयचक्र

दशवी शती में अमृतचन्द्र की टीकाओं की रचना होने पर रामसेन ने तत्त्वानुशासन, नेमिचन्द्र ने द्रव्य संग्रह, अमितगति, प्रथम ने योगसार प्राभृत, ब्रह्मदेव ने द्रव्यसंग्रह और परमात्मप्रकाश की टीका, जयसेन और पद्मप्रभ मलधारीदेव ने अपनी टीकायें तथा पद्यनंदी ने पद्म नंदी, पंच विशंतिका की रचना की। इसके पश्चात ही माइल्ल-धवल ने भी प्रस्तुत ग्रंथ रचा और उसमें नयों के विवेचन के साथ अध्यात्म भी विवेचन किया। उन्होंने अपने द्रव्य स्वभाव प्रकाश को बारह अधिकार में विभक्त किया है - 1. गुण, 2. पर्याय, 3. द्रव्य, 4. पंचास्तिकाय, 5. सात तत्त्व 6. नौ पदार्थ, 7. प्रमाण, 8. नय, 9 निक्षेप, 10 सम्यग्दर्शन, 11. सम्यग्ज्ञान, और 12. सम्यक्चारित्र, इन बारह अधिकारों में भी प्रायः सभी उन आवश्यक विषयों का समावेश हो जाता है। जिनका ज्ञान आवश्यक है। गुण पर्याय, द्रव्य तथा प्रमाण नय की चर्चा में देवसेन के द्वारा आलाप पद्धति में चर्चित सब विषय आ जाते हैं और पाठक को द्रव्य में स्वरूप के साथ गुण, पर्याय और स्वभावों का सम्यग्ज्ञान हो जाता है। इसी तरह नय की चर्चा में द्रव्यार्थिक, पर्यायाथिक नयों के आगमिक तथा अध्यात्म परक भेद-प्रभेदों का ज्ञान हो जाता है। साथ ही एकान्तवाद में दोष बतलाकर अनेकान्तवाद की स्थापना भी की गयी है। यह सब मुख्य प्रतिपाद्यविषय होने से ग्रंथ का लगभग तीन चौथाई भाग रोकता है। शेष भाग में सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के व्यवहार और निश्चय स्वरूपों का कथन प्रायः पंचास्तिकाय के आश्रय से किया गया है। इन प्रकरणों में कुछ ऐसी बाते भी आयी है जो वर्तमान चर्चाओं की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

और वीतरागभाव से उनका अध्ययन करना लाभदायक हो सकता है। आगे उनके सम्बंध में लिखा जायेगा। इस तरह यह एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें स्वाध्योपयोगी प्रायः सब विषय समाविष्ट है। इससे पूर्व जिन ग्रंथों में द्रव्य, गुण, पर्याय तथा नयों की चर्चा है। उसमें सप्ततत्व तथा रत्नत्रय की चर्चा नहीं है और सप्ततत्व तथा रत्नत्रय की चर्चा है तो नयों की विस्तृत चर्चा नही है। अतः अन्य ग्रंथों के होते हुये भी इस ग्रंथ की उपयोगिता निर्विवाद है। और इसे रचकर ग्रंथकार ने एक बड़ी कमी की पूर्ति ही की है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
नवम्बर 2021
बूँद बूँद में नीर भरा है

प्रथम-

जिसको हमने खाली समझा

सार हीन हमने जिसको समझा

उसका कण-कण सदा हरा है

बूंद बूंद में नीर भरा है

श्रीमति अभिलाषा जैन, अहमदाबाद

द्वितीय-

प्रकृति ने कुछ मोती फेंके

सूरज ने थे उनको सेंके

रूप न इनका कभी खरा है

बूंद-बूंद में नीर भरा है

श्रीमति चंचल जैन, शिवपुरी

तृतीय-

गल जायेगी ओस बूंद यह

जग अस्थिरता बतलायेगी यह

अस्थिरत रूप जन्म जरा है

बूंद-बूंद में नीर भरा है।

आशा जैन, भोपाल

वर्ग पहेली क्र. 265
नवम्बर 2021 के विजेता

प्रथम : श्रीमती अंजना जैन, इंदौर
द्वितीय : श्रीमती रजनी जैन, दिल्ली
तृतीय : आरती जैन, गौरझामर

पथरीधन चूर्ण
पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–
1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेनेके बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

पुराण प्रेरणा

दोष ढांके

सद्भूतस्यापि दोषस्य परकीयस्य भाषणम्।
पापहेतुरमोघः स्यादसद्भूतस्य किं पुनः ।।

दूसरे का विद्यमान दोष का कथन करना भी पाप का कारण है फिर अविद्यमान दोष के कथन करते की तो बात ही क्या है ? वह तो ऐसे पाप का कारण होता है जिसका फल कभी व्यर्थ नहीं जाना- अवश्य ही भोगना पड़ता है।

वक्ता श्रोता च पापस्य यन्नात्र फलमश्नुते।
तद्मोघममुत्रास्य वृद्ध्यर्थमिति बुद्ध्यताम् ।।

पाप का वक्ता और श्रोता जो इस लोक में उसका फल नहीं प्राप्त कर पाता है वह मानो परलोक में वृद्धि के लिये ही सुरक्षित रहता है ऐसा समझना चाहिये।

जिस पाप का फल वक्ता और श्रोता को इस जन्म में नही मिल पाता है उसका फल पर भव में अवश्य मिलता है। और ब्याज के साथ मिलता हैं।

स्यजत वालमसत्यमलोद्धतां भजत सत्यवचोनिरवद्यताम्।
निजयशोविशदां सगुणोद्यतां विजयिनी त्विह विश्वविदोदिताम् ।।

इसलिये असत्यरूप दोष से उद्धत वाणी को छोड़ो, और सत्य वचन से उत्पन्न उस निर्मलता का सेवन करो जो अपने यश से विशद है, गुणी मनुष्यों के प्राप्त करने में उद्यत है। इस लोक में विजय प्राप्त करने वाली है और सर्वज्ञ देव के द्वारा निरूपित हैं।

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. अ ण् अ द् म् प् उ ट् आ प
2. आ उ न् अ् र् अ इ व् भ प् र् ण ह
3. आ उ अ त् अ त् अ र् प् र् ण् उ
4. ण र् व् र् व् आ प् अ उ पा
5. आ अ ह् ण् प् उ र् आ म

परिणाम :
नवम्बर 2021: (1) मरण कण्डिका (2) भगवती आराधना (3) विराग स्वरूप विद्यासागर (4) सिद्धि विनिश्चय (5) लघीस्त्रय

केरियर

खगोल विज्ञान में अवसर

खगोल विज्ञान

भूगोल विज्ञान ब्रह्मांड में सभी खगोलीय पिंडो से निपटने वाला विज्ञान है। यह स्वर्गीय निकायों के आंदोलन, प्रकृति और संविधान का अध्ययन है। यह उन कानूनों का भी अध्ययन है जो उन्हें निर्देशित करते हैं , व ऐसे प्रभाव जो एक-दूसरे पर उत्पन्न करते हैं।

भारत ने इस क्षेत्र में आर्यभट्ट और भास्कर जैसे कई विद्वानों, खोज कर्ताओं ने बहुत अच्छा काम किया गया है।

शैक्षिक योग्यताः खगोलीय विज्ञान में करियर के लिये 12वीं के बाद फिजिक्स में बी.एस.सी या गणित में बी.एस.सी इसके बाद उसी विद्या में मास्टर भी कर सकते हैं।

इंस्ट्रूमेंटेशन/एक्सपेरिमेंटल एस्ट्रोनॉमी में करियर बनाने के लिये 10+2 के बाद इलेक्ट्रिकल/इलेक्ट्रॉनिक्स में इंजीनियरिंग कर सकते हैं। पी.एच.डी में योग्यता के लिये ज्वाइंट एंट्रेस स्क्रीनिंग टेस्ट परीक्षा में उपस्थित हो सकते हैं।

कविता

हिंसा ज्वाला

✻ ऐलक सम्यकत्व सागर ✻

फैली हिंसा की ज्वाला को शांति सुधा सम नीर चाहिये
लक्ष्य भेदने अब मानव को गांडीव अर्जुन तीर चाहिये
बहते अश्कों की इबारत समझने को, उर में करूणा पीर चाहिये
दुःशासन के निकट द्रौपदी, लाज बचाने चीर चाहिये
दुनिया के दर्दों को पीने, शिवशंकर सा धीर चाहिये
बारूदी चहुँ और धमाके, हमको बस महावीर चाहिये

■ **1 अक्टूबर**

- माउंट त्रिशूल पर चढ़ाई करने गये 209 सैनिक में से 5 लापता हुये।

- धमतरीः 32 दिन के आंदोलन के बाद महिलाओं ने शराब दुकान बंद कराने में सफलता प्राप्त की।

- सुप्रीम कोर्ट ने किसानों को जंतर मंतर पर सत्याग्रह की अनुमति देने से इंकार किया।

■ **2 अक्टूबर**

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि डी.एन.ए. टेस्ट के लिये किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता है।

-लेहः लद्दाख में भारतीय सेना ने खादी का सबसे बड़ा तिरंगा संस्थापित किया गया इसका आकार 225×150 फिट है।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कृषि कानूनों का विरोध करना राजनैतिक छल है।

■ **3 अक्टूबर**

- मुम्बई से गोवा जा रहे क्रूज में रेव पार्टी मामले में अभिनेता शाहरूख खान के बेटे आर्यन खान को एन.सी.बी ने गिरफ्तार किया।

-टी.एम.सी की ममता बनर्जी ने पश्चिम बंगाल के भवानीपुर का चुनाव जीता।

-काबुलः अफगानिस्तान की सत्ता के बाद मस्जिद के बाहर बम धमाका हुआ 5 लोग मरे कई घायल

■ **4 अक्टूबर**

- सागरः मुम्बई की रेव पाटी में मुनमुन मौजूद थी उनके सागर स्थित घर में ताला पड़ा।

- म.प्र. कांग्रेस के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष ने खंडवा लोकसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ने से इंकार किया।

-गीतकार जावेद अख्तर पर एफ. आई.आर दर्ज हुई उन्होंने आर.एस.एस की तुलना तालीवान से की थी।

■ **5 अक्टूबर**

- 7 घंटे के सर्वर डाउन ने 52000 करोड़ का नुकसान हुआ। 3.5 अरब यूजर्स परेशान रहे हैकर थामस पर एफ.बी.आई ने शक जताया।

-गांधीनगर : शहर के नगर निगम चुनाव में 44 बार्ड में से 41 बार्ड भाजपा ने जीते।

- चीन के 38 फाइटर जेट ताइवान सीमा में घुसे युद्ध जैसे माहौल के लिये चीन जिम्मेदार।

■ **6 अक्टूबर**

- रामायण सीयरल के रावण अरविंद त्रिवेदी का निधन हुआ वे 82 साल के थे

उन्होने 300 गुजराती फिल्मों में काम किया।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा दीपावली का जश्न पटाखों से नहीं फुलझड़ी से मनायें।

- म.प्र. के महाधिवक्ता पुष्पेन्द्र कौरव म.प्र. हाईकोर्ट के जज बने।

■ 7 अक्टूबर

- श्रीनगरः ईदगाह इलाके के सरकारी स्कूल को प्राचार्य सुपिंदर कौर और टीचर दीपकचंद की से आतंकवादियों ने नाम पूछकर हत्या की।

- ज्योतिरादित्य सिंधिया और डॉ. नरोत्तम मिश्र को भाजपा की कार्यसमिति में लिया गया। 344 सदस्यों की कार्य समिति बनाई गई।

■ 8 अक्टूबर

- अफगानिस्तान के कुंदूज शहर में मस्जिद के भीतर बम विस्फोट शिया समूह के 100 से अधिक लोग मरे तथा 100 से ज्यादा घायल हुये।

- पंचकूलाः डेरा सच्चा सौदा सिरसा के रहे प्रबंधक रंजीत सिंह की हत्या के आरोप में डेरा प्रमुख गुरुमीत सिंह दोषी सिद्ध हुये।

- एयर इंडिया को टाटा समूह ने 18000 करोड़ में 68 साल बाद बोली लगाकर खरीदा।

■ 9 अक्टूबर

- पूर्वी लद्दाख में चीन बड़े पैमाने पर निर्माण कर रहा है बात सेनाध्यक्ष ने कही।

- जस्टिस प्रकाश श्रीवास्तव कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जज बने।

- आई.एस. पर अंकुश लगाने में अमेरिका की मदद करने से तालीबान ने इंकार किया।

■ 10 अक्टूबर

- रूस के तातरस्तान इलाके में विमान गिरा पायलट सहित 16 लोगों की मौत हुई।

- भोपाल में जन्में पाकिस्तान में परमाणु के जनक विवादित वैज्ञानिक ए.क्यू.खान का निधन हुआ।

- श्रीनगरः हिन्दुओं व सिखों की हत्या के मामले में 540 संदिग्धों को हिरासत में लिया गया।

■ 11 अक्टूबर

- बिगबॉस अमिताभ बच्चन ने गुटखा कम्पनी से विज्ञापन का करार खत्म किया।

- देश ने कश्मीर में पाँच और जवान शहीद हुये आतंकियों ने घात लगाकर हमला किया। यह हमला पुंछ जिले के मीर जंजाल इलाके में हुआ।

- भारत और चीन सीमा विवाद के 13वें दौर की वर्ता बेनतीज रही।

■ 12 अक्टूबर

- दिल्ली पुलिस ने भारतीय पासपोर्ट वाला पाकिस्तानी आतंकी मो. अशरफ को गिरफ्तार किया।

- शोपियों में मुठभेड़ में सेना ने 5 आतंकी मार गिराये।

- अमित खरे प्रधानमंत्री के नये सलाहकार नियुक्त हुये।

■ 13 अक्टूबर

- म.प्र. के नये महाधिवक्ता प्रशांतसिंह नियुक्त हुये।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 100 लाख करोड़ की गति योजना भेंट की।

- पुलवामा के जाल में सुरक्षाबल से मुठभेड़ में जैशए मोहम्मद के कमांडर एम सौफी को मार गिराया।

■ 14 अक्टूबर

- रवि विजय मलिपथ म.प्र. के 27वें मुख्य न्यायाधीश पद की शपथ ली।

- ढांकाः बाग्लादेश में मंदिरों और पंडालों को निशाना बनाया दंगा भड़काकर 22 जिलों में हिंसा फैली 4 लोगों की मौत हुई।

- ताइबान के कारूशुंग शहर की एक 120 अर्पाटमेंट वाली विल्डिंग में आग लगाने से 46 लोगों की मौत हुई 80 लोग झुलसे।

■ 15 अक्टूबर

- जागरण समूह के चेयरमेन योगेन्द्र मोहन गुप्त का निधन हुआ।

- झाँसी-दतियाः छिनौरा गाँव जा रहे जबारे भी टेक्टर ट्राली पलटने से 11 लोगों की मौत हुई। 15 घायल हुये।

- बांग्लादेश में दुर्गा पूजा पंडालों पर हमले मामले में 100 से अधिक गिरफ्तार हुये एक मंदिर से 18 देशी बम बरामद हुये।

- कृषि कानून विरोधी आंदोलन में दलित युवक लखबीर सिंह (34) युवक के हाथ पैर काटकर शव उल्टा लटकाया गया।

■ 16 अक्टूबर

- पुलवामा व श्रीनगर में 3 हमलों में दो गैर कश्मीरियों की घाटी में जान गई मुठभेड़ में शहीद 2 सैनिक हुये।

-मैहर रोपवे अचानक बंद होने से 100 यात्री 3 घंटे तक हवा में लटके रहे।

- चीन ने पाकिस्तान से कामगारों की मौत मामले में 286 करोड़ रूपये का हर्जाना माँगा।

■ 17 अक्टूबर

- कुलगामा (ज.क.) में 3 बिहारी मजदूरों की अज्ञात आतंकियों ने हत्या की।

- नवजोत सिद्धू ने सोनिया की नसीहत को हवा में उड़ाया और सी.एम. चन्नी पर हमला किया।

- ओमानमेंटी- 20 वर्ल्ड कप का प्रारंभ हुआ।

-केरल में बारिश से तबाही हुई 26 लोगों की मौत हुई।

■ 18 अक्टूबर

- बांग्लादेश के एक गाँव में हिन्दुओं के 60 मकान जलायें।

- गुरुमीत राम रहीम सहित 5 दोषियो को हत्या मामले में उम्र कैद की सजा दी गई।

- सूरतः एक पाँच मंजिला इमारत में लगी आग दो लोगों की मौत हुई।

■ 19 अक्टूबर

- उत्तराखंड में भारी बारिश होने से भूस्खलन और मकान गिरने से 47 की मौत हुई।

-जबलपुर में पुलिस पर जलते पटाखें फेकें मिलिदुन्नबी के जुलूस में उपद्रवी

तत्त्वों ने शामिल होकर बबाल खड़ा किया।

- इजरायल के समुद्र में 900 वर्ष पुरानी तलवार मिली।

■ 20 अक्टूबर

- प्रवासी मजदूरों की हत्याओं में शामिल 4 आतंकी ढेर हुये सतना के कर्णवीर सिंह शहीद हुये।

- कर्नाटक हाईकोर्ट ने कहा कि निकाह अनुबंध है और हिन्दू विवाह संस्कार है।

- क्रूज ड्रग्स पार्टी मामले में शाहरूख खान के बेटे आर्यन खान को जमानत देने से इंकार विशेष कोर्ट ने किया।

■ 21 अक्टूबर

- कोरोना टीकाकरण में भारत 100 करोड़ का इतिहास रचा।

- भिंड-प्रशिक्षण पर निकला वायुसेना मिराज विमान 200 क्रैश हुआ पायलट लेफ्टिनेंट अभिलाष ने पैराशूट के सहारे जान बचाई।

- दक्षिण कोरिया का स्वदेशी अंतरिक्ष रॉकेट का परीक्षण विफल हुआ।

■ 22 अक्टूबर

- 26 जम्मू-कश्मीर के आतंकियों को आगरा जेल शिफ्ट किये गये एन.आई.ए के 6 जिलों में छापे पड़े।

- दक्षिण मुंबई के करी रोड़ इलाके अविध्ना पार्क नाम की 60 मंजिल इमारत में आग लगी 19वीं मंजिल से कूँदे अंकित तिवारी की मौत हो गई।

- बांग्लादेश में हिन्दुओं के खिलाफ हिंसा भड़काने वाला इकबाल हुसैन गिरफ्तार हुआ।

■ 23 अक्टूबर

- इंडोनेशिया के पूर्व राष्ट्रपति सुकर्णो की बेटी दीया मुटियारा सुकमादेवी ने इस्लाम छोड़ने का फैसला किया।

- तुर्की ने अमेरिका कनाड़ा सहित 10 देशों के राजदूतों को एक्टिविस्ट उस्मान कवाला की रिहाई की मांगें करने पर देश से बाहर निकाला।

- स्पीति (हिमाचल) 59 लोगों को 3 फिट फंसे पर्यटकों को 4.5 किमी. चलकर सुरक्षित निकाला।

■ 24 अक्टूबर

-टी-20 क्रिकेट विश्वकप मैच में भारत को पाक ने 10 विकेट से हराया।

- भोपालः बेब सीरीज आश्रम 3 का विरोध बजरंग दल ने किया और निर्देशक प्रकाश झा पर स्याही फैंकी।

- श्रीनगरः गृहमंत्री अमितशाह ने कहा अब जम्मू कश्मीर में 3 परिवार की दादागिरि नहीं चलेगी।

■ 25 अक्टूबर

- फिल्म अभिनेता रजनीकांत को दादा फाल्के अवार्ड दिया गया।

- भारत से मानसून विदा हुआ तथा केदारनाथ में बर्फवारी हुई।

- सूडान में सेना ने अंतरिक्ष सरकार का तख्ता पलटकर कमान अपने हाथ में संभाली।

■ 26 अक्टूबर

- एन.सी.बी ने हाईकोर्ट मुम्बई में आर्यन खान का विरोध करते हुये कहा जांच पटरी से उतर सकती है।

- गुप्त जानकारी लीक करने के मामले में नौ सेना के कमाण्डर को गिरफ्तार किया गया तथा दो सेवा निवृत अधिकारी भी गिरफ्तार किये गये।

- पश्चिमोत्तर पाकिस्तान के कुर्रम जिले में हुये शियासुन्नी दंगे में 11 लोगों की मौत हुई तथा 15 लोग घायल हुये।

■ 27 अक्टूबर

- प्रसिद्ध गांधी वादी डॉ. एस.एन. सुब्बाराव का निधन हो गया। आपने म.प्र. उ.प्र. राजस्थान के 654 डाकूओं का समर्पण कराया था आप 92 वर्ष के थे।

- सुमावलीः कॉंग्रेस विधायक अजब सिंह कुशवाह पर आत्महत्या के लिये मजबूर करने का मामला दर्ज हुआ।

- काठमांडूः चीज जस्टिस चोलेन्द्र शमसेर से वकीलों ने इस्तीफा मांगा उनका आरोप है कि साले को चीफ जस्टिस ने मंत्री बनवाया।

■ 28 अक्टूबर

- सुप्रीम कोर्ट ने पटाखों के निर्माण पर रोक लगाते हुये कहा कि मौज मस्ती के लिये दूसरों के जीवन से खेलने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

-अभिनेता शाहरूख खान के बेटे आर्यन खान को क्रूज ड्रग्स मामले में हाईकोर्ट से सशर्त जमानत मिली।

- डोडा (जे.के) बस खाई में गिरने से 11 लोगों की मोत हुई और 8 घायल हुये।

■ 29 अक्टूबर

- क्षेत्रिय राजनैतिक दलों ने बिना पेन कार्ड के 24.779 करोड़ का चंदा लिया।

- प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता (कन्नड़) का पुनीत राजकुमार का निधन हुआ वे 46 वर्ष के थे।

- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इटली पहुँचे पिदाज गांधी स्मारक पर मोदी से मिलने भारतीय पहुँचे। मोदी मोदी के नारे लगाये।

■ 30 अक्टूबर

- इंदौरः आचार्य विमदसागर जी ने आत्महत्या की। कारण अज्ञात रहे।

-महाशक्ति और धर्मशक्ति पोप फ्रांसिस वेटिकन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मिले।

-क्रिकेट अभिनेता कपिल देव ने कहा कि करोड़ों रूपये भी मिले तो भी गुटखा का ड्रिंक्स का विज्ञापन नहीं करूँगा।

■ 31 अक्टूबर

- जी-20 बैठक में शून्य उत्सर्जन को लेकर ठोस समय सीमा तय नहीं हुई।

- टी-20 क्रिकेट वर्ल्ड कप में न्यूजीलैंड ने भारत को 8 विकेट से हराया।

-दंतवाड़ाः जिले कटे कल्याण थाना इलाके में 5.5 लाख के इनामी तीन नक्सली मुठभेड़ में ढेर हुये।

इसे भी जानिये

भारत के सुपर कम्प्यूटर्स

भारत में सुपर कम्प्यूटर्स का इस्तेमाल ऑटोमोबाईल इंडस्ट्री से लेकर मेडिकल और शिक्षा क्षेत्र में रिसर्च के लिये हो रहा है। भारत के टॉप 5 सुपर कम्प्यूटर्स की बात करें तो उसमें सहस्त्र (के XC40) आदित्य, टीआईएफआर कलर बोसोन, IIT Delhi HPC और परम युवा 2 जैसे सुपर कम्प्यूटर के नाम सामने आते हैं ।

सहस्त्र (क्रे XC40) : सहस्त्र सुपर कम्प्यूटर को बंगलुरू में भारतीय विज्ञान संस्थान में सुपर कम्प्यूटर शिक्षा और अनुसंधान केंद्र (एसईआरसी) रखा गया है। एसईआरसी विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में हाई-परफॉर्मेस कम्प्यूनिंग में मदद करता है। इसका इस्तेमाल एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, मौसम विज्ञान की भविष्यवाणियों और ज्योतिषीय क्षेत्र में होता है।

आदित्य: आदित्य नाम का सुपर कम्प्यूटर इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ ट्रॉपिकल पुणे में है। यहाँ का मौसम विज्ञान विभाग भारत का सबसे सटीक मौसम विज्ञान विभाग है। इस सुपर कम्प्यूटर का इस्तेमाल मौसम के बारे में जानकारी जुटाने के लिये होता है। मानसून के लिये वर्षा चक्रों की भविष्यवाणी करने और वायु गुणवत्ता के पूर्वानुमान के बारे में यह सटीक डाटा देता है। देश में मौसम का पूर्वानुमान यह कम्प्यूटर लगाता है।

टीआईएफआर कलर बोसोन: यह सुपर कम्प्यूटर टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च फैसिलिटी में रखा गया है। इस सुपर कम्प्यूटर को हैदराबाद में तैयार किया गया है। इसका इस्तेमाल सैद्धांतिक भौतिकी और क्वांटम क्रो मोडायनामिक्स पर आधारित रिसर्च के लिये होता है। इसके जरिये ब्रह्मांड के बारे में जानकारी मिलती है।

IIT Delhi HPC: आई आई टी दिल्ली के कैंपस में भारत का सबसे तेज सुपर कम्प्यूटर है। इस सुपर कम्प्यूटर में जो ग्राफिक्स है वह दुनिया के कुछ चुनिंदा कम्प्यूटर्स में ही है। इस सुपर कम्प्यूटर का इस्तेमाल जीव विज्ञान, नैनोसिस्टम, वायुमंडलीय विज्ञान और जैव सूचना विज्ञान के क्षेत्र में शोध के लिये होता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल सिस्टम डाटा एनालिटिक्स, डीप लर्निंग, कम्प्यूटेशनल फिजिक्स, केमिस्ट्री, कम्प्यूटेशनल फ्लूइड डायनामिक्स और मैटेरियल साइंस के क्षेत्र में अध्ययन के लिये भी होता है।

परम युवा 2: परम युवा 2 सुपर कम्प्यूटर को पुणे में सेंटर फॉर डेवलमेंट ऑफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC) में रखा गया है। इसे इंटेल ने तैयार किया है। परम युवा 2 का इस्तेमाल जैव सूचना विज्ञान, अंतरिक्ष, मौसम पुर्वानुमान, भूकंपनीय डाटा विश्लेषण, एयरोस्पेस इंजीनियरिंग, वैज्ञानिक अनुसंधान और दवा के क्षेत्र में होता है। इस कम्प्यूटर को नेशनल नॉलेज नेटवर्क के माध्यम से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान के साथ भी जोड़ा जा सकता है। और हाई-स्पीड डाटा ट्रांसफर हो सकता है।

दिशा बोध

पापकर्मों से भय

1. दुष्ट लोग भय मूर्खता से नहीं डरते, जिसे पाप कहते हैं; परन्तु भद्रजन उससे (पाप से) सदा दूर भागते हैं।
2. पाप से पाप उत्पन्न होता है, इसलिए आग से बढ़कर उससे (पाप से) डरना चाहिए।
3. कहते हैं कि सबसे बड़ी बुद्धिमानी यही है, कि 'शत्रु को भी हानि पहुँचाने से परहेज किया जाय।'
4. भूल से भी दूसरे के सर्वनाश का विचार न करो; क्योंकि न्याय उसके विनाश की युक्ति सोचता है, जो दूसरों के साथ बुराई करना चाहता है।
5. 'मैं गरीब हूँ'' - ऐसा कहकर किसी को पाप कर्म में लिप्त नहीं होना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से वह और भी नीची दशा में पहुँच जायेगा।
6. जो मनुष्य आपत्तियों द्वारा विषाद में पड़ना नहीं चाहता, उसे दूसरों का अपकार करने से बचना चाहिए।
7. दूसरे प्रकार के सब शत्रुओं से बचने का उपाय हो सकता है, पर पापकर्मों का विनाश नहीं होता। विवेकी पुरुष उनका पीछा करके, उनको नष्ट किये बिना नहीं छोड़ते।
8. जिस प्रकार छाया मनुष्य को कभी नहीं छोड़ती, बल्कि जहाँ-जहाँ वह जाता है, उसके पीछे-पीछे लगी रहती है। बस, ठीक इसी प्रकार पापकर्म पापी का पीछा करतेहैं और अन्त में उसका सर्वनाश कर डालते हैं।
9. यदि किसी को अपनी आत्मा से प्रेम है, तो उसे पाप की ओर किंचित् भी न झुकना चाहिए।
10. उसे आपत्तियों में सदा सुरक्षित समझो, जो अनुचित कर्म करने के लिए सन्मार्ग को नहीं छोड़ता।

आओ सीखे : जैन न्याय

स्फोटवाद और उसकी समीक्षा

भतृहरि के वाक्य पदीय ग्रन्थ में स्फोटवाद का उल्लेख विशेष तौर पर है। स्फोटवाद की मूल अवधारणा है कि वर्ण, पद और वाक्य अर्थ के प्रतिपादक नहीं है। यदि वे अर्थ के प्रतिपादक हैं तो समस्त वर्ण अर्थ के प्रतिपादक हैं अथवा व्यस्त अर्थात् अलग-अलग रूप से समस्त अर्थात् सामूहिक रूप से अर्थ के प्रतिपादक हैं। व्यस्त रूप से कोई अर्थ का प्रतिपादन नहीं कर सकते हैं। क्योंकि एक वर्ण सेअर्थ का प्रतिपादन हो जाने के बाद अन्य वर्णों की उपयोगिता समाप्त हो जाती है। यदि समस्त वर्ण अर्थ का प्रतिपादन करते हैं तो यह संभव नहीं है क्योंकि क्रम से उत्पन्न और नष्ट होते वर्णों में समस्तपना या समूहपना होना असंभव है। यदि कोई कहें कि सब वर्ण एक साथ उत्पन्न हो जायेंगे। अतः उनका समुदाय बन जायेगा किन्तु यह कहना ठीक नहीं है। क्योंकि एक पुरुष सब वर्णों को एक साथ उत्पन्न नहीं कर सकता। क्योंकि प्रत्येक वर्ण निश्चित स्थान करण और प्रयत्न से उत्पन्न होते हैं।

1. **संभवत** : कोई गोकार का उच्चारण करें तो दूसरा औंकार का उच्चारण करें तो दोनों समुदाय से गौ शब्द की प्रतीति हो जायेगी किन्तु यह कहना ठीक नहीं है। कारण की निश्चित वर्णो की क्रम से प्रतिपत्ति होने के बाद ही शब्द की प्रतीति होती है।

2. अन्य वर्णों की अपेक्षा ना करके गौ शब्द का अन्तिम वर्ण औ ही अर्थ का प्रतिपादक है किन्तु ऐसा यथार्थ नहीं है। यदि औ शब्द अर्थ का प्रतिपादक हो जाए तो गाकार व्यर्थ हो जाएगा।

निष्कर्ष – ना गा वर्ण से अर्थ की प्रतिपत्ति होती है ना औ से अपितु इन दोनों के बीच में से एक स्फोट तत्व होता है वही अर्थ का प्रतिपादक होता है।

3. स्फोट तत्त्व नित्य होता है। उसे अनित्य नहीं माना जा सकता है। क्योंकि कालान्तर देशान्तर में उसी शब्द की प्रतीति होती है नित्य एक अखण्ड स्फोट ही अर्थ की प्रतिपत्ति में जरूरी है वर्ण ध्वनि उस स्फोट को ही अभिव्यक्त करके नष्ट हो जाती है।

4. **जैन पक्ष –** स्फोटवाद के स्फोटतत्व को अस्वीकार करते हुये जैनाचार्य अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं वे निम्न हैं -

अ) वर्णों के नाश होने से बचे हुये अन्तिम वर्ण से ही अर्थ का बोध हो जाता है अथवा पूर्व वर्ण के अर्थ के ज्ञान सहित अर्थ की प्रतिपत्ति कराता है। इसका क्रम इस प्रकार है कि प्रथम वर्ण का ज्ञान उससे संस्कार की उत्पत्ति फिर दूसरे वर्ण का ज्ञान के संस्कार सहित उस ज्ञान से विशेष संस्कार का जन्म इसी प्रकार तीसरे वर्ण के विषय में भी अर्थ की अन्तिम वर्ण तक यही क्रम चलता रहता है अथवा शब्दार्थ की उत्पत्ति में निमित्त अदृश्य की नियामकता के कारण अविनष्ट (विनिष्ट नहीं हुआ) पूर्व वर्ण का ज्ञान और उनके संस्कार और अन्तिम वर्ण के संस्कार से उत्पन्न स्मृति की सहायता से अन्तिम वर्ण पदार्थ का ज्ञान कराता है। इसी तरह वाक्य भी अर्थ का ज्ञान कराता है। अतः स्फोट की कल्पना व्यर्थ है। क्योंकि स्फोट के अभाव में भी अर्थ का प्रतिपादन होता है।

ब) यदि समस्त ज्ञान समस्त अथवा व्यस्त वर्ण अर्थ का ज्ञान कराने में असमर्थ है तो वे वर्ण स्फोट अभिव्यक्ति के सिवाय कोई दूसरा अविकार नहीं हो सकता है।

स) वर्णों के द्वारा होने वाला यह संस्कार ही उसका स्फोट है या उसका धर्म है।

यदि धर्मों के द्वारा किये जाने वाले संस्कार का नाम ही स्फोट है, तो स्फोट वर्णों के द्वारा उत्पन्न हुआ कहा जायेगा यदि वर्णों के द्वारा उत्पन्न संस्कार उसका स्फोट न होकर धर्म है। यदि धर्म हैं तो वह भिन्न है अथवा अभिन्न यदि धर्म से स्फोट अभिन्न है। तो वर्णों के द्वारा ही उस स्फोट की उत्पत्ति हुई और ऐसा होने से स्फोट अनित्य हो जायेगा। यदि संस्कार स्फोट से भिन्न है तो यह संस्कार स्फोट का है तो यह संबंध नहीं बन सकता है क्योंकि वह उसका उपकार नहीं करता है।

द) यदि संस्कार स्फोट का कुछ उपकार करता है तो वह उपकार से भिन्न है अथवा अभिन्न मानने पर स्फोट अनित्य सिद्ध होगा और भिन्न मानने पर उपकार स्फोट और संबंध नहीं बन पायेगा।

5) स्फोट के संस्कार से क्या तात्पर्य है –

अ) स्फोटक विषयज्ञ ज्ञान होना अथवा स्फोट के ऊपर से आवरण हटना यदि संस्कार से मतलब आवरण हट जाने से हैं तो एक बार आवरण हट जाने पर सर्वदा सब पुरुषों के स्फोट की अभिव्यक्ति का प्रसंग आ जायेगा क्योंकि आपने स्फोट को नित्य एक माना है और यदि स्फोट पूरा ना हटकर आंशिक रूप से हटेगा तो स्फोट सावयव और अनित्य सिद्ध होगा और यदि आप स्फोट को निवारण मानेंगे तो स्फोट निरावरण और सर्वत्र (सब मनुष्यों को उपलब्धि का प्रसंग) होगा।

ब) यदि संस्कार से मतलब स्फोट विषयज्ञ ज्ञान से है तो वह भी ठीक नहीं है क्योंकि जैसे वर्ण अर्थ का ज्ञान नहीं करते हैं वैसे ही स्फोट का ज्ञान भी नहीं कर सकते हैं।

6. वैयाकरण विद्वानों का कहना है कि पूर्व वर्णों के ज्ञान के संस्कार से युक्त आत्मा को वर्ण सुनने के बाद स्फोट की अभिव्यक्ति होती है इस तर्क का खण्डन करते हुये जैनाचार्य कहते हैं कि यदि पूर्व वर्णों के ज्ञान से संस्कार से युक्त आत्मा को अंतिम वर्ण सुनने के बाद पदार्थ का ज्ञान हो जायेगा तो स्फोट की आवश्यकता क्या रही ?

7.ऐसी परिस्थिति में चिदात्मा का नाम ही स्फोट क्यों नहीं रखना चाहिये जिसमें अर्थ स्फुट हो उसे स्फोट कहते हैं अतः चिदात्मा के सिवाय स्फोट नाम का कोई तत्त्व नहीं होगा।

8. वायु स्फोट की अभिव्यक्ति नहीं करती है। यदि वायु स्फोट क्रो अभिव्यक्ति करने लगे तो वर्णों की कल्पना व्यर्थ हो जायेगी क्योंकि वैयाकरण मत वाले वर्णों को ना तो स्फोट की अभिव्यक्ति मानते हैं ना अर्थ की प्रतिपत्ति।

9. वायु की उत्पत्ति से पहले यदि स्फोट का सद्भाव है तो वर्ण अथवा वायु को स्फोट के अभिव्यंजक मानना उचित हो सकता है।

10. स्फोट का सद्भाव किसी प्रमाण से सिद्ध नहीं है।

निष्कर्ष – अतः विचार करने के बाद स्फोट का स्वरूप ही सिद्ध नहीं होता है। इसलिये स्फोट को पदार्थ की प्रतिपत्ति का कारण नहीं माना जा सकता किन्तु गौ आदि शब्द को ही अर्थ प्रतिपत्ति का कारण मानना चाहिये।

वैशाली महोत्सव

* ललित गर्ग, दिल्ली *

जिस भू धरा पर प्रजातंत्र की पहली लालिमा फैली, जहां के जन-तन में वर्द्धमान-गौतम की शिक्षा का प्रसार हुआ, जहाँ की संतानें दया, धर्म, करूणा एवं अहिंसा से आप्लावित हुई, जहां की माटी ने मानव को महामानव यानी भगवान बनने की क्षमता प्रदत्त की। उस पवित्र एवं पावन भूमि कुण्डग्राम को भगवान महावीर की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त हुआ। गौतम बुद्ध की कर्मभूमि, आम्रपाली की रंगभूमि और लोकतंत्र की जननी है इसी धरा पर भगवान महावीर 2617वाँ जन्म महोत्सव भव्य रूप में आयोजित हुआ, जहां भगवान महावीर स्मारक समिति द्वारा निर्मित भव्य महावीर मंदिर में विधि-विधान के साथ महावीर जयंती मनायी गई। वैशाली के ऐतिहासिक महावीर जन्म कल्याणक स्थल बावन पोखर स्थितजैन मंदिर परिसर से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। रात्रि में बिहार सरकार द्वारा त्रिदिवसीय वैशाली महोत्सव का शुभारंभ हुआ। इस दिन संपूर्ण वैशाली नगरी महावीरमय बन गई थी। जहां से दया, धर्म, अहिंसा, करूणा, अनेकांत के स्वर गुंजित हो रहे थे।

दिल्ली से आये सौ जैन धर्मावलंबियों ने प्रातः भगवान महावीर स्मारक समिति के बैनरतले महावीर की पूजा अर्चना की। अष्ट द्रव्य से भगवान की पूजा अर्चना की गई। भजन सम्राट प्रदीप जैन ने जहां भजनकीर्तन प्रस्तुत किये, वहीं प्रो. जयकुमार उपाध्याय ने इस पवित्र स्थान की महत्ता को उजागर करते हुये इसके निर्माण में परमपूज्य आचार्य विद्यानंद जी म.सा. के अनुदानों को विवेचित किया। उन्होंने विधिविधान पूर्वक अनुष्ठान संपन्न करवाया। झंडारोहण, कुबेर आदि की बोलियां बोली गई। यह पवित्र भूमि महावीर के जय नारों से गुंजित हो रही थी। इस भव्य तीर्थ एवं महावीर जन्म कल्याणक भूमि का निर्माण आचार्य विद्यानंद जी की प्रेरणा से दिल्ली समाज के लोगों के प्रयासों से हुआ है। पूर्व रात्री को राष्ट्रीय कवि सम्मेलन एवं पत्रकार सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिसमें देश प्रख्यात कवि श्री चन्द्रसेन जैन (भोपाल), डॉ. रूचि चतुर्वेदी (आगरा), अजय जैन अहिंसा-कटनी आदि ने अपनी कविताओं के माध्यम से भगवान महावीर के जीवन दर्शन की एवं उनकी शिक्षाओं की प्रभावी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर प्रख्यात पत्रकार श्री ललित गर्ग (उदय इंडिया), श्री प्रवीण जैन (साध्य महालक्ष्मी), श्री रामचन्द्र (अमृत इंडिया), श्री नवनीत जैन (सम्मेदाचल) को टाइम्स इंडिया ग्रुप के चैयरमेन श्री पुनीत जैन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश अनिल कुमार जैन ने शॉल, प्रशस्ति पत्र एवं माला प्रदत्त कर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री अनिल जैन कनाडा ने किया। श्री स्वराज जैन तथा अन्य अनेक प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

महावीर जयंती पर निकाली गयी शोभायात्रा में पहले सुबह ही जैन धर्मावलंबियों ने पूजा अर्चना की, उसके बाद शोभायात्रा में सभी शामिल हुये। अहिंसा परमोधर्मः जिओ और जीने दो, मांसाहार का त्याग, शाकाहारी बनें आदि कई तरह के स्लोगन लिखें बेंनर, पोस्टर लिये सभी

यात्रा में लोगों को विभिन्न संदेश दे रहे थे। शोभायात्रा में शामिल दर्जनों बैलगाड़ियों को सजाकर उस पर आकर्षक सैकड़ों जन समुदाय की महिलायें व पुरुष भजन गाते व नृत्य करते चल रहे थे।

भगवान महावीर के जन्म दिवस के अवसर पर श्री जगदीशचन्द्र माथुर ने वर्ष 1945 में वैशाली महोत्सव का शुभारंभ स्थानीय लोगों के सहयोग से किया था, जो आज भी अनवरत आयोजित हो रहा है। इस वर्ष बिहार सरकार ने इस महोत्सव के लिये 70 लाख की राशि प्रदत्तकी। महावीर जयंती और वैशाली महोत्सव के अवसर पर ही भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 23 अप्रैल 1956 को भगवान महावीर स्मारक एवं प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली की आधारशिला रखी थी। ये दोनों संस्थाये शोध संस्थान बिहार सरकार द्वारा संचालित है। इस संस्थान के लिये जमीन स्थानीय लोगों ने दान में दी थी तथा भवन का निर्माण दानवीर साहू शांति प्रसाद जैन ने साहू ट्रस्ट की ओर से करवाकर बिहार सरकार को दान में दिया था।

वैशाली महोत्सव के पहले दिन स्थानीय मछुआ समाज द्वारा चैता गायन की प्रस्तुति की गयी, तत्पश्चात दिल्ली के जैन समाज की महिला टीम द्वारा झूला झूले महावीर लाला गीत पर दर्शकों ने जमकर तालियां बजायी। प्रतीक्षा जैन की भगवान महावीर की जन्म व मोक्ष पर आधारित लोक नृत्य का आनंद उठाया, इसके बाद पद्म श्री सम्मानित गीता चंदन की नाट्य मण्डली के द्वारा भगवान महावीर के अनेकान्त सिद्धांत पर केन्द्रीत भारतनाट्यम की प्रस्तुति को लोगों ने काफी सराहा। इसके संवाद सुधामही रघुनाथन ने लिखे हैं। वैशाली महोत्सव के अवसर पर मेला परिसर में विभिन्न जिलों से आये सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा प्रदर्शनी लगायी गयी है।

पर्यटन मंत्री प्रमोद कुमार ने वैशाली महोत्सव का उद्घाटन करने के बाद उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुये कहा कि ऐतिहासिक स्थल वैशाली में जल्दी ही सांस्कृतिक गांव बनेंगे। पथ निर्माण मंत्री नंदकिशोर यादव ने कहा कि बिहार के सभी पर्यटक स्थलों को एक साथ मिलाने के लिये वैशाली कॉरिडोर सड़क का निर्माण कार्य जल्द ही शुरु किये जायेंगे। सभा को स्थानीय विधायक राजकिशोर सिंह, उमेश सिंह कुशवाह, तिरहुत प्रमंडल के आयुक्त एच.आर श्री निवासन, जिला एवं सत्र न्यायाधीश अनिल कमार जैन, पर्यटन सचिव पंकज कुमार आदि ने संबोधित किया।

दोपहर में वर्तमान वैश्किं परिदृश्य में भगवान महावीर के उपदेश विषय पर प्राकृत जैन शास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली में जगदीशचंद्र माथुर स्मृति व्याख्यानमाला 2018 आयोजित हुई जिसमें प्रख्यात जैन दर्शन के विद्वान ऋषभचंद्र जैन, प्रो. जयकुमार उपाध्याय, निर्मलकुमार जैन सेठी, डॉ. महावीर पी शास्त्री सोलापुर, डॉ. विजय कुमार मुजफ्फरपुर, कैलाशचन्द्र पाटनी-पटना, स्वराज जैन-दिल्ली, ने भगवान महावीर एवं उनके द्वारा दिये गये संदेश की प्रासंगिकता के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. मंजूबाला द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

भगवान महावीर की जन्म कल्याण भूमि होने के कारण क्षत्रियकुण्डग्राम (वैशाली) का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व है, महावीर का जन्म वैशाली गणतंत्र के किस भूभाग में हुआ था,

बहुत दिनों तक यह शोध का विषय रहा। किंतु ऐतिहासिक अनुसंधानों और जैन परम्परा के सन्दर्भो के परिप्रेक्ष्य में विद्वानों द्वारा महावीर की जन्मस्थली सुनिश्चित कर दी गयी है। बिहार में वैशाली के भगनावशेषों के निकट वासुकण्ड नाम का एक गांव है। वहां के एक जमीन के टफकड़े पर किसान आज भी हल नहीं चलाते हैं। परम्परा से उसे पूज्य मानते आये हैं। वासुकुंड का यही स्थान महावीर की जन्मस्थली प्राचीन क्षत्रिय कुंडलपुर था। वर्तमान में यह बिहार के वैशाली जिले में है जो हाजीपुर से 20 मील एवं मुजफ्फरपुर से 30 मील दूर हैं एवं पटना से 70 किलोमीटर है। इसी स्थान पर पूज्य आचार्य श्री विद्यानंदजी की प्रेरणा एवं दिल्ली के जैन समाज की जागरूकता से भव्य महावीर मन्दिर का निर्माण हाल ही के वर्षो में सम्पन्न हुआ है। यह मन्दिर परिसर इतना मनोरम, हरीतिमा से आच्छादित एवं पवित्र है कि इसमें प्रवेश करते ही व्यक्ति अपूर्व शांति एवं उल्लास का अनुभव करता है। इसी परिसर में महावीर स्मारक समिति द्वारा यात्रियों के लिये सर्वसुविधा सुलभ करायी गयी है। दो भव्य गेस्ट हाउस यात्रियों एवं दर्शनार्थियों के लिये बनकर तैयार है, जहां शुद्ध भोजन निःशुल्क उपलब्ध है। यह परिसर सभी जैन धर्मावलम्बियों के लिये दर्शनीय है।

महावीर जन्म कल्याणक स्थल पर महावीर जन्म कल्याण महोत्सव का भव्य आयोजन न केवल यादगार बनकर प्रस्तुत हुआ, बल्कि जन-जन में महावीर की शिक्षाओं को प्रभावी ढंग से सम्प्रेषित करने का माध्यम भी बना। जैन कहलाने वाले हर व्यक्ति के साथ-साथ हर भारतीय को इस ऐतिहास, सांस्कृति धार्मिक एवं राजनीति स्थल की यात्रा जरूरी करनी चाहिये।

कविता

चेतन ज्योति जलाई

ऐलक : सिद्धांतसागर जी

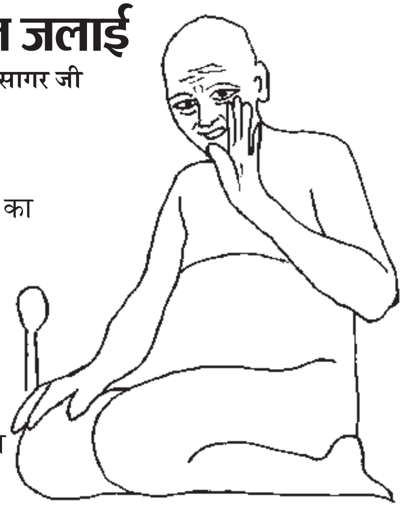

युगप्रर्वतक युग दृष्टा ने ज्ञान की ज्योति जलाई
विद्यासागर गुरुवर ने तो अपनी कलम चलाई
अनगिनित चेतन कृति बनाई सृजन किया साहित्य का
सद्उपदेशों से गुरुवर ने, चेतन ज्योति जलाई
माटी बोल उठी गुरुवर के, जब संपर्क में आई
अनगढ़ पत्थर से गुरुवर ने, सुन्दर मूर्ति बनाई
विद्याभारती पामर जन में, मोक्ष की राह बताई
सूरज चाँद झुके चरणों में, भूधर खर सुर साथी
जिस पर नजर लगी गुरुवर की, राह मोक्ष की भांति
गुरु की कृपा दृष्टि से देखो सबको मिली भलाई

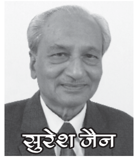

क्रमांक- 10 वरिष्ठ नागरिक

छोटी छोटी ध्यान देने योग्य बातें

आप संसार में कितने भी बड़े हो जाये, कितने ही धनवान हो जाये, कितने ही ऊँचे ओहदे पर पहुँच जाये, आपके द्वारा अपने माता पिता व बुर्जुगों के प्रतिक्रिया हुआ आपका व्यवहार सब देख रहे हैं। आप की इमेज का असल पता सबको उस समय लग जाता है। इसलिये आप अपने माता पिता तथा बुजुर्गों के सामने कुछ सावधानिया अवश्य बरते। इसके लिये कुछ टिप्स नीचे दिये जा रहे हैं।

- उनकी उपस्थिति में अपने फोन को दूर रखे
- वे क्या कह रहे हैं इस पर ध्यान दो
- उनकी राय स्वीकारें
- उनकी बातचीत में सम्मिलित हो
- उन्हें सम्मान के साथ देखें
- हमेशा उनकी प्रशंसा करे
- उनको अच्छा समाचार जरूर बतायें
- उनके साथ बुरा समाचार साझा करने से बचे
- उनके दोस्तों ओर प्रियजनों से अच्छी तरह से बोलें
- उनके द्वारा और किये गये अच्छे काम सदैव याद रखे
- अतीत की दर्दनाक यादों को मत दोहरायें
- उनकी उपस्थिति में कानाफूसी न करें
- उनके साथ तमीज से बैठे
- उनके विचारों को न तो घटिया बताये न ही उनकी आलोचना करें
- उनकी बात काटने से बचें
- उनकी उम्र का सम्मान करें
- उनके सामने उनके पोते/पोतियों को मारने से बचे
- उनकी सलाह और निर्देश स्वीकारे
- उनका नेतृत्व स्वीकार करें
- उनके साथ ऊँची आवाज में बात न करें
- उनके आगे अथवा सामने से न चलें
- उनसे पहले खाने से बचें

- ✲ उन्हें घूरे नहीं।
- ✲ उन्हें अपने आप में गौरवान्वित प्रतीत करायें
- ✲ उनके सामने अपने पैर करके बैठने से बचें
- ✲ उनकी और अपनी पीठ करके बैठने से बचें
- ✲ उनकी बुराई न करें
- ✲ किसी अन्य द्वारा उनकी बुराई को न सुने व उसका उसी समय उसका मुँह बंद करवा दें।
- ✲ उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करें
- ✲ उनके सामने अपने आप को उबने या अपनी थकान का प्रदर्शन न करें
- ✲ उनकी गलतियों अथवा अनभिज्ञता पर हँसने से बचें
- ✲ कहने से पहले उनके काम करें
- ✲ नियमित रूप से उनके पास बैठने का समय निकाले
- ✲ उनके साथ वार्तालाप में उनके शब्दों को ध्यान से सुने
- ✲ उनके साथ वार्तालाप में अपने शब्दों को सम्मान से प्रयोग करें
- ✲ उन्हें उसी सम्बोधन से सम्मानित करें जो वे पसन्द करते हैं
- ✲ अपने किसी भी विषय की उपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दें

सदा याद रखे माता पिता इस संसार का सबसे बड़ा खजाना हैं।

कविता

आखरी अल्फाज

कफन उड़ा जनाजे से मुर्दा ने झांका
उसने अपनी औकात को आंका
लोग बहुत चाहते थे मैं था हजारों का चहेता
अपनी पार्टी का बड़ा नेता
पर आज कोई जनाजे में नहीं आया
किसी ने मेरी मौत पर मातम नहीं मनाया
मैं कितनों के काम आया क्या सबने मुझे भुलाया
तुम दोनों ने ही मेरा जनाजा उठाया
दोनों बोले। तुम भूल गये
दुनिया पर है कोरोना की छाया
विकराल महामारी संकट की घड़ी

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद को मिला आचार्य श्री विद्यासागर जी मंगल आशीर्वाद

जबलपुर- अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन शास्त्री परिषद के यशस्वी अध्यक्ष डॉ. श्रेयांश कुमार जी जैन बड़ौत एवं महामंत्री प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार निशांत भैया जी टीकमगढ़, ने तिलवार घाट पूर्णायु चिकित्सा केन्द्र जबलपुर पहुँचकर संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान उनके साथ डॉ. श्रेयांस कुमार जी की धर्मपत्नी श्रीमति ज्योतिमाला जैन एवं विदुषी डॉ. ज्योति जैन खतौली भी उपस्थित रहीं । 28 एवं 29 सितंबर को विभिन्न विषयों पर आचार्य श्री से विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। इस दौरान ब्रह्मचारी जिनेश मलैया एवं हुकुमचंद जी सावला अंतराष्ट्रीय उपाध्यक्ष विश्व हिन्दू परिषद भी उपस्थित रहे।

शास्त्री परिषद कार्यकारणी सदस्य डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने बताया कि सर्वप्रथम विद्वानों ने संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन किये इसके बाद लगातार चर्चा के दौरान आचार्य कुंदकुंदस्वामी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर दीर्घकालीन चर्चा हुई।

संकल्पः आचार्य श्री कुंदकुंद स्वामी के संपूर्ण साहित्य का आडोलन करके निश्चय एवं व्यवहार में होने वाले विसंगतियों का निरसन करने के लिये संकल्प लिया। आचार्य श्री समक्ष ग्रामीण अचंल से जैन परिवारों के लगातार होने वाले पलायन एवं जिन मंदिरों की सुरक्षा के संबंध में भी चर्चा हुई।

बड़े बाबा के दरवार में : सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में विराजित परम पूज्य ज्येष्ठ मुनि श्री योगसागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में बड़े बाबा का अभिषेक एवं शातिधारा का सौभाग्य प्राप्त किया। पूज्य श्री ने चर्चा के दौरान वर्तमान में धार्मिक अनुष्ठानों में होने वाले प्रदर्शन एवं आगम विरूद्ध कार्यो पर चिंता व्यक्त करते हुये कहा सभी विद्वानों को सामूहिक रूप से बैठकर इनका निराकरण करना चाहिये।

माता जी का मिला आशीषः शाहपुर में विराजित परम पूज्य आर्यिका पूर्णमति माताजी के मंगल सान्निध्य में सभी लोग जिनालय निर्माण के कार्य में संलग्न रहकर गुरुवर के चरण रज की प्रतीक्षा में हैं। पूज्य माताजी से विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा हुई। पूज्य माताजी ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कोनी क्षेत्र वंदनाः अतिशय क्षेत्र कोनी जी में दर्शन का लाभ प्राप्त किया। आचार्य श्री के आशीर्वाद से वहां सतत उन्नयतन की प्रक्रिया संचालित है। तत्पश्चात तेंदूखेड़ा गये, वहाँ विराजित आर्यिका अकंपमति माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया। तेंदूखेड़ा की गौशाला को देखकर मन प्रसन्न हुआ।

दमोह में वरिष्ठ विद्वान डॉ. भागचन्द्र भागेन्दू से नवागढ़ गुरुकुल के संदर्भ में विशेष चर्चा हुई एवं उनका मंगल आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

आतिथ्यः जबलपुर में ब्र. जिनेश भैया जी, महेश जी एवं नरेश जी के आतिशय ने हम सभी को अभिभूत किया। भैया जिनेश जी द्वारा गुरुकुल की विकास यात्रा में भगवान मुनिसुव्रतनाथ का भव्य जिनालय सभी को चमत्कृत करने वाला है। वहां साहित्य केन्द्र में सभी प्रकार का साहित्य उपलब्ध है , जिसका लाभ सभी श्रावक प्राप्त कर रहे हैं।

मुनि सुप्रभसागर जी का मिला आशीर्वादःसागर में परम पूज्य मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज एवं मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान मुनि श्री से विशेष चर्चा करने का अवसर मिला। शास्त्री परिषद को उन्होंने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

कहानी

प्रभात बेला

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

बेला छत पर चहल कदमी कर रही थी पर उसकी नजर आसमान पर थी वह पूर्णिमा के चन्द्रमा को निहारकर बहुत खुश हो रही थी उसके साथ रोज की तरह प्रभात भी वॉकिंग कर रहे थे प्रभात से अचानक बेला ने कहा कितनी सुन्दर पूर्णिमा है झाड़ के ओट से झांकता चांद ऐसा लग रहा है जैसे कोई घूंघट से बाहर आती नववधु हो लजाता-लजाता सा जब चन्द्रमा ऊपर उठता है तो ऐसा लगता है जैसे कोई गणिका अंगड़ाई लेकर नृत्य करने को तैयार हो रही हो। मैं कभी सोचती हूँ ऐसी पूर्णिमा रोज क्यूं नहीं आती है अगर ऐसी पूर्णिमा हर रोज रहे तो सृष्टि में कितना आनंद रहे मुझे तो पूण्रिमा की रात इतनी सुहाती है कि मैं भीतर से जाग उठती हूँ।

प्रभात का उदास चेहरा देखकर बेला ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा क्यों तुम्हें यह पूर्णिमा सुहा क्यों नहीं रही है ? तुम्हारे अन्दर कोई उत्साह क्यों नही है, मेरा तो मन कर रहा है इस पूर्णिमा की रात पर मैं कुछ नृत्य कर लूं अगर आज संगीत की व्यवस्था होती तो मैं नांच उठती प्रभात ने अपनी गंभीरता तोड़ते हुये कहा बेला मुझे क्षमा करना मैं तुम्हारे साथ सहमति नहीं बना पा रहा हूँ क्योंकि मुझे पूर्णिमा की रात नहीं अमावस्या की रात सुहाती है। बेला ने तपाक से कहा हाँ मैं जानती हूँ न यदि मुझे सेव अच्छे लगते हैं तो तुम्हें टमाटर। आपने तो कसम ही खा रखी है जो मुझे अच्छा लगेगा वो आपको नहीं। प्रभात ने मंद मुस्कान देते हुये कहा बेला तुम्हारी सोच मैं ही नकरात्मकता है तुम प्रदर्शन में विश्वास रखती हो मैं दर्शन में, तुम आवरणों के सौंदर्य को देखती हो मैं कुदरत के सौंदर्य को देखता हूँ, तुम अस्थाई सौंदर्य से प्रभावित होती हो मैं स्थाई सौंदर्य की खोज में रहता हूँ, लगता है तुम मुझे शादी के पन्द्रह साल बाद भी नहीं समझ पाई खैर कोई बात नहीं एक दिन जरूर ऐसा आयेगा जब तुम मुझे समझोगी लेकिन मुझे विस्मय इस बात का होता है कि मुझे एक अलग ही नजर से दुनिया देखने की आदत है तुम अगर पूछो तो मैं कुछ बता सकता हूँ मुझे अमावस्या अच्छी क्यों लगती है।

बेला ने कहा कि मैं जानती हूँ न कि

आपका सोच ही अलग है। मैं ऐसे अलग सोच से कोई ज्यादा प्रभावित नहीं होती हूँ। मैं तो जो सामने देखती हूँ उससे प्रभावित होती है।

यही तो समस्या है बेला चेहरे से सुन्दर लोग जरूरी नहीं कि दिल से भी सुन्दर हो। सामने जो दिखता है उसका सच भीतर कुछ और ही होता है तुम पूछो मुझे अमावस्या की रात क्यों अच्छी लगती है। बेला ने तुलक कर कहा मैं क्यों पूछूं मुझे तो आज पूर्णिमा की रात अच्छी लग रही है जो अमावस्या पन्द्रह दिन बाद आयेगी साथ में अंधेरे को लायेगी उस अंधेरे में कई प्राणियों की आंखे चमक उठती है। असुरों और पितरों को ही अमावस्या अच्छी लगती है पर मुझे यह समझ नहीं आता कि निशाचरों को सुहाने वाली अमावस्या आप जैसे देवताओं को क्यों सुहाने लगी है ?

बेला तुम इसका रहस्य नहीं समझ सकती हो जब सारे लोगों को मीठा अच्छा लगता है तो कुछ लगा ऐसे भी होते जिन्हें नमकीन, खट्टा, अच्छा लगता है मुझे अमावस्या क्यों सुहाती है इसका तुमने कारण पूछा है तो सुनो-पूर्णिमा का चांद ऐसा होता है जो तारों के अस्तित्व को प्रगट ही नहीं होने देता है लेकिन अमावस्या की रात ऐसी होती है जिसमें छोटा तारा भी टिमटिमा उठता है और अपने अस्तित्व को प्रगट करने लगता है। पूर्णिमा का चन्द्रमा राजतंत्र का प्रतिनिधित्व करता है और अमावस्या की रात लोकतंत्र को सूचित करती है इससे यह सिद्ध होता है कि पूर्णिमा की रात उपनिवेशबाद की बात है और अमावस्या की रात स्वतंत्रता का निनाद करती है।

जब प्रभात और बेला की यह बात वह रही थी तभी बेला का मोबाईल बजाने लगा। कर भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना बेला ने अपना। मोबाईल कॉलिंग पर लिया तो उसे सुनाई दिया। एक कराह के साथ दर्द तो बेला ने कहा मम्मी क्या हो गया। वहां से आवाज आई बेला मेरे सीने में दर्द हो रहा है और पूरे शरीर में पसीना आ रहा है बहुत तेज घबराहट हो रही है बेला ने कहा मम्मी घबराओ मत कुछ नहीं होगा। थोड़े से आप लेट जाओ सब सही हो जायेगा। टेंशन नहीं लो मैं अभी डॉक्टर को भिजवाती हूँ। बेला की बात सुनकर प्रभात ने पूछा क्या हुआ। तो तुनक कर और मुँह बिगाड़कर बेला बोली जब कभी अच्छे दिन आते हैं तो बस कोई न कोई बुरी बात सुनने को मिल जाती है। अब 10 बजे रहे हैं कौन डॉक्टर मम्मी के घर जायेगा। पूरा दिन पड़ा था मम्मी अगर डॉक्टर को दिखवा लेती तो क्या बिगड़ जाता मम्मी भी सिर्फ परेशानी खड़ी करती है।

बेला तेरी आदत बड़ी खराब है हमेशा आधी अधूरी बात करती है पहले मुझे ये तो बता कि हुआ क्या है। बेला ने बड़े हल्के में लेते हुये कहा अरे कुछ नहीं मम्मी के सीने में दर्द हो रहा है अब इतनी रात को कौन सा डॉक्टर मिलेगा। जिसे मैं भिजवा दूँ। बेला तेरे अन्दर थोड़ी भी संवेदना है कि नहीं क्या ये क्यों नहीं सोचा कि हो सकता है अटैक आया हो। प्रभात की बात सुनकर बेला बोली उन्हें क्या अटैक आयेगा सादा भोजन करने वाली है अटैक तो उन्हें आता है जो अण्डा खाते हैं मांस खाते है, बीड़ी पीते है, सिगरेट पीते शराब पीते हें मेरी माँ सादा जीवन जीने वाली है उसे क्या अटैक आयेगा। प्रभात ने कहा

शरीरं व्याधि मंदिरम् कब कौन से शरीर में क्या रोग हो जाये इसका कोई भरोसा नहीं है। इसीलिये अच्छे-अच्छे योगाचार्यों को भी अटैक आ जाता है फिर तुम कैसे कह सकती हो कि मम्मी जी को अटैक नहीं आया होगा।

अरे तो मैं क्या करूँ उनकी तीन बेटिया और भी तो हैं उनको भी तो फोल लगा सकती थी अकेले मेरे को फोन क्यूं लगाती हैं उनकी सेवा करना मेरे बस की बात नहीं है क्यों मैने ही सब का ठेका ले रखा है।

प्रभात ने कहा तुम्हारे अन्दर वाणी का संयम नहीं है और न ही संवेदना जब तुम अपनी माँ के बारे में अच्छा नहीं सोच कसती हो तो तुम किसके बारे में सोचोगी।

बेला ने कहा ये सब आपकी आदर्शवादी बातें हैं लेकिन ये भी तो सोचो कि सारे काम के लिये हम ही जिम्मेदार हैं माँ अकेली मेरी नहीं है माँ तो सबकी है क्योंकि जिसकी सम्पत्ति को सब बाँटने के लिये तैयार रहेंगे उसकी सेवा के लिये क्या सिर्फ बेला ही रहेगी क्या ये न्याय है आप खुद सोचो।

प्रभात ने कहा देखो बेला वो भाग्यशाली होते हैं जिनके माँ होती है और वो परम भाग्यशाली होते है जो माँ की सेवा करते हें सेवा वह दीपक है जिससे मानवता का प्रकाश होता है काश अगर माँ के पास संपत्ति न होती तो क्या तुम उसे बुढ़ापे में यूं ही छोड़ देती मेरा मन ये कहता है संपत्ति मिले या न मिले संपत्ति से क्या होने वाला है एक वृद्ध माँ की सेवा करना हम सबका महान कर्तव्य है मेरा तो मन कह रहा है चलो अपन चलें और तब तक माँ इस दुनिया में रहे वह मेरी देरी के भीतर ही रहे और माँ की अंतिम सांस मेरे आंगन में ही हो। बेला ने कहा आपके अगर ये विचार हैं तो मुझे ऐसी बात सुनकर भीतर से बहुत खुशी हो रही है लेकिन इतना कहकर कुछ देर के लिये बेला मौन हो जाती है बेला क्या बोलेगी इस प्रतीक्षा में प्रभात ने कहा देखा बेला लेकिन और परन्तु ऐसे दो शब्द है जो हमारे दिमाग तक सीमित रहते हैं जो दिल में होने वाली संवेदना को दबा देते हैं। तर्क बितर्क करना सरल है। ये सिर्फ हमारी बुद्धि का परिणाम है लेकिन संवेग तो दिल से उत्पन्न होता है। क्योंकि दिमाग तो जानकारियों का विशलेषण करता है और नफा और नुकसान को सोचता है किन्तु दिल एक ऐसी चीज होती है जो केवल सच्चा प्रेम करना जानता है। दिल में सिर्फ समर्पण होता है और समर्पण से ही भक्ति और सेवा की भावना पैदा होती है। बेला ने प्रभात की बात बहुत ध्यान से सुनी और प्रभात के कंधे पर सिर रखकर रोने लगी तब प्रभात ने कहा इसमें रोने की क्या बात है रो करके कर्तव्य का निर्वाह नहीं हंसकर के कर्तव्य का निर्वाह करना चाहिये।

बेला ने कहा कि मुझे ये विश्वास नहीं हो रहा है कि एक ओर जहां दहेज के लोभी पत्नी को प्रताड़ित करते हैं और धन के लोभ में मौत क घाट तक उतार देते हैं धन्य है मेरी किस्मत जो मुझे ऐसे पति मिले जिन्हें न धन का लालच और न ही किसी भी ऐस और आराम का शौक, इंसानियत के आगे इन्हें और कुछ नहीं दिखता है। बीच में टोकते हुये प्रभात ने बेला से कहा कि मुकद्दर से ज्यादा और पहले न किसी को कुछ मिला है और न मिलेगा इसलिये मेरा विश्वास है कि आदमी को दौलत के पीछे नहीं इंसानियत के पीछे

भागना चाहिये करूणा और प्रेम से बड़ी कोई संपत्ति नहीं हो सकती है इसलिये तुम आज भले ही अपने विचारों से देर करवट बदल पा रही हो लेकिन मुझे अवश्य होंगे चलोआज अपन माँ को लेने कल सुबह चलने का कार्यक्रम बना लें बेला ने कहा सुबह तक की बात क्यों कर रहे हैं आप मेरा मन कहता है अभी चला जाये।

नहीं बेला इतनी भावुक मत बनो हम यहाँ से कितनी भी जल्दी चलेंगे तो पूरी रात का सफर होगा और अगर गाड़ी चलाने वाले ड्राइवर को झपकी आ गई तो हम दुर्घटना के शिकार हो सकते हैं इसीलिये हम अभी सो जाये और प्रभात में शीघ्र ही निकल चलेंगे।

ठीक है कहकर बेला भी प्रभात के प्रस्ताव से सहमत हो गई।

जैसे तैसे करवट बदलकर बेला ने रात गुजारी उसकी आंखों में नींद नही आई क्योंकि एक तरफ वह अपने पति की महानता को सराहती रही तो दूसरी तरफ अपनी तुच्छता के लिये कोसती रही प्रभात के पांच बजे बेला और प्रभात दोनों तैयार हो गये और अपनी सिफ्ट गाड़ी में सवार होकर पिपरिया की ओर निकल पड़े लेकिन रास्ते में मौसम की सुन्दरता को निहारते हुये कब पिपरिया आ गया उन्हें पता ही नहीं चला। पिपिरिया आने के बाद वे दोनों मम्मी के पास पहुँचे लेकिन भीतर से दरवाजा बन्दर था और खिड़किया भी बन्द थी ड्राइवर से हार्न बजवाया फिर भी भीतर से कोई आवाज नहीं आई तो फिर प्रभात के ड्रा इवर ने दरवाजा बजाना शुरु किया परन्तु जब कोई उत्तर नहीं मिला तो खिड़कियों की तरफ बढ़े पर वहां पर भी कोई सफलता नहीं मिली आखिरकार सब प्रकार से कोशिश करने के बाद जब निराशा ही बढ़ती गई और किसी अनहोनी की आशंका लगने पर प्रभात ने पिपरिया पुलिस थाने पर सूचना दी पुलिस के आने के पहले ही बेला का उतावलापन बढ़ रहा था और वह कहने लगी दरवाजा तोड़कर हमें भीतर जाना चाहिये और देखना चाहिये कि आखिर मम्मी को क्या हुआ है तब प्रभात ने कहा नहीं जब तक पुलिस नहीं आयेगी और तुम्हारी तीन बहनें और नहीं आयेगी तब तक न तुम भीतर जाओगी न मैं।

बेला ने कहा इतनी जिद आपकी अच्छी नहीं लगती है प्रभात ने कहा ये जिद नहीं व्यवस्था है अगर हम जल्दबाजी में भीतर चले गये तो माँ की संपत्ति खुर्द हुर्द करने का आरोप हमारे ऊपर आयेगा और फिर तुम और हम दोनों आरोपो के घेरे में आ जायेंगे। थोड़ी देर सोचने के बाद बेला ने कहा सचमुच आपका सोच बहुत दूर तक का है।

बेला की मम्मी के घर का दरवाजा तोड़ा गया सभी बहने और पुलिस के अधिकारी इकट्ठे हुये पोस्टमार्टम कराया गया और अंतिम संस्कार कर दिया गया पोस्टमार्टम रिर्पोट में हार्टअटैक से मृत्यु का तथ्य उजागर हुआ और प्रभात ने बेला से कहा अगर हम उसी समय कोई व्यवस्था कर देते तो शायद यह दिन नहीं देखना पड़ता जब लड़की और दामाद को ससुराल से हिस्सा लेने का अधिकार है तो सेवा करने का कर्तव्य क्यों नहीं। सब लोगों ने प्रभात की बात को ध्यान से सुना।

संस्मरण विचित्र किन्तु सत्य

✻ सुभाषचंद्र सरल, अशोकनगर (म.प्र.) ✻

ऐतिहासिक एवं प्राचीन नगरी वन्देरी से मात्र 20 किलोमीटर एवं जिला अशोक नगर से मात्र 30 किमी. की दूरी पर प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण उर्वसी एवं लीलट नाम की नदियों के मध्य श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री थूबोन जी अवस्थित है।

अतिशय क्षेत्र श्री थूबोन जी में श्रावक श्रेष्ठी पाड़ाशाह जी के द्वारा बनवायें गये 1100 वर्ष प्राचीन 25 दिगम्बर जैन मंदिर जी हैं इनमें से 24 दिगम्बर जिन मंदिर जी में देशी पाषाण से निर्मित खड्गासन प्रतिमायें विराजमान हैं। मात्र एक मन्दिर में संगमरमर एवं अष्ट धातु से निर्मित प्रतिमायें विराजमान हैं। एक नवीन मंदिर जी का निर्माण भी हुआ है एवं एक संगमरमर द्वारा निर्मित सुन्दर चतुर्मुखी कीर्ति स्तंभ भी निर्मित है।

प्राकृतिक सौन्दर्य युक्त इस प्राचीन तीर्थ वर्तमान के चर्या शिरोमणि आचार्य परम पूज्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज ससंघ के वर्ष 1979 एवं वर्ष 1987 में दो मंगल चातुर्मास अतीव धर्म प्रभावना के साथ सम्पन्न हुये हैं ।

श्री मंदिर नं. 15 में प्रथम तीर्थंकर देवाधिदेव श्री 1008 ऋषभदेव स्वामी जी की 30 फुट उतुंग देशी पाषाण से निर्मित भव्य एवं विशाल प्रतिमा विराजमान है इसी प्रकार मंदिर नं. 6 में देवाधिदेव 1008 श्री शान्तिनाथ स्वामी जी की मन्दिर नं. 16 में देवाधिदेव 1008 श्री अर्जितनाथ स्वामी जी की एवं मन्दिर नं. 9, 12 एवं 13 में देवाधिदेव 1008 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की 15 से 20 फुट उतुंग खड्गासन प्रतिमायें विराजमान हैं शेष सभी मन्दिर जी 2.5 फुट से लेकर 11 फुट उतुंग प्रतिमायें विराजमान हैं।

विचित्र किन्तु सत्य चर्चा आचार्य श्री जी के वर्ष 1987 के पावन चातुमार्स की हैं । पूज्य आचार्य श्री मन्दिर नं. 23 एवं 24 के पीछे अविस्थत कक्ष में पूरे चातुर्मास अपनी साधना करते थे। पूरे संघ की क्लास भी इसी कक्ष में लगती थी एवं आचार्य भक्ति भी इस कक्ष में सम्पन्न होती थी।

आज की तरह परम पूज्य आचार्य श्री के मंगल प्रवचन मन्दिर नं. 24 के सामने अवस्थित चबूतरे पर निर्मित पांडाल में प्रत्येक रविवार को दोपहर 3 बजे से ही होते थे। विचित्र किन्तु सत्य यह है कि एक नागराज प्रतिदिन प्रातः ध्यान साधना में लीन आचार्य श्री के दर्शनाथ कक्ष के द्वार तक आते एवं दर्शन कर वापिस चले जाते। इसी प्रकार प्रत्येक रविवार को आचार्य श्री जी के प्रवचन के समय चबूतरे के आसपास आते एवं प्रवचन पूर्ण होने पर वापिस चले जाते। इस विचित्र सत्य को क्षेत्र पर निवासरत् एवं अनेक जैन श्रावकों ने अपनी आँखों से देखा है । गांव के आसपास निवासरत् हजारों जैन एवं जैनेत्तर समाज में यह धारणा रही कि कोई देव ही इस रूप में आचार्य श्री जी के दर्शनार्थ एवं प्रवचन श्रवण के लिये आते हैं ।

इस विचित्र किन्तु सत्य घटना देखकर सुनकर समस्त श्रद्धालुओं एवं ग्रामीण अचंल की जैनेत्तर समाज की श्रद्धा एवं भक्ति शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान दिन राज बढ़ती ही जा रही थी।

प्रत्येक रविवार को परम पूज्य आचार्य श्री जी दर्शनार्थ एवं प्रवचन श्रवण की भावना से अशोकनगर, चन्देरी, मुंगावली, पिपरई, ललितपुर, गुना, शाढौरा, कुम्भराज, राघौगढ़, बीनागंज, सागर, खुरई, बीना सहित दूरदराज के नगरों से एवं ग्रामीण अंचल के गांवों में निवास कर रहे हजारों जैनेत्तर श्रद्धालु आते थे एवं आचार्य श्री सहित पूरे स्ंघ के दर्शन कर अपने सौभाग्य की सराहना करते थे।

आज भी मेरी स्मृति में स्पष्ट है दीपावली के अगले रविवार को प्रातः से श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती ही जा रही थी, बस कार, ट्रक, ट्रेक्टरों से श्रद्धालु अतिशय क्षेत्र श्री थूबोन जी पर आना प्रारम्भ हो गये हैं। दोपहर 2 बजे तक आचार्य श्री संघ के दर्शनाथ एवं तीर्थ वन्दना एवं प्रवचन श्रवण की भावना, अपने मन में संजोये श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। सेवादलों के सदस्य पुरुष एवं महिलाओं को अलग-अलग स्थान पर बिठाने में व्यस्त थे। मंच से आचार्य श्री के दर्शन एवं प्रवचन की तीव्र लालसा झलक रही है। कमेटी के पदाधिकारी एवं सदस्य आचार्य श्री संघ को मचं पर प्रवचन हेतु निवेदनार्थ गये हैं । कुछ समय बाद श्रद्धालुओं को आचार्य श्री आते दिखाई दे रहे हैं। वायुमण्डल मेंजयकारे की ध्वन तेज हो गई है श्रद्धालु आचार्य श्री जी के दर्शन कर हर्षित भाव से नमोस्तु कर रहे है। आचार्य श्री जी आये परन्तु मंच पर न आकर सीधे आगे निकल गये हैं, श्रद्धालुओं में सुग बुगाहट प्रारंभ हो गई है। आचार्य श्री जी शायद लघुशंका को गये हैं। कुछ लोग आचार्य श्री जी दर्शनार्थ श्रद्धा भाव से खड़े हो गये हैं मंच से श्रद्धालुओं से अपने स्थान पर बैठे रहने की अपील की जा रही है। श्रद्धालुओं में यह जाने की जिज्ञासा है कि आचार्य श्री कहा गये हैं।श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। कुछ श्रद्धालु एवं आचार्य श्री जी के पीछे भागते हुये जाते दिखाई दे रहे हैं पल ही पल बढ़ती जा रही जिज्ञासा के बीच नय दृश्य सामने देखकर श्रद्धालु आश्चर्य चकित हे। संघस्थ मुनिराज एवं ऐलक जी एक-एक कर सामने से निकलते दिखाई देने लगे हैं श्रद्धालु शीश नवाकर श्रद्धालु शीष नवाकर विनयभाव से नमोस्तु करते हैं। इसी बीच आवाज आ गई आचार्य श्री संघ का विहार हो गया है, श्रद्धालु आश्चर्य चकित है, पूरे पांडाल में परम पूज्य आचार्य श्री के मंगल प्रवचन सुनने आये हजारों श्रावक एवं श्राविकायें अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये हैं अनेक उत्साही श्रावक संघ के साथ जाते दिखाई दे रहे हैं।

इसी के बीच श्रद्धालुओं के वाहन आते ही जा रहे हैं हर श्रद्धालु यह जानकार आश्चर्य चकित और असमंजस में था किसी को आचार्य श्री जी के दर्शन न पाने पर अफसोस था कुछ लोगों को प्रवचन श्रवण नहीं कर पाने का दुःख था अनेक श्रद्धालु जो दूरस्थ अचंल से आये थे देरी से आने के कारण अपने भाग्य को कोस रहे थे। ग्रामीण अंचल की जैनेत्तर समाज भी आचार्य संघ का बिहार हो जाने के कारण बहुत दुखी थी।

सांय के 4 बजे रहे हैं सैकड़ों लोग क्षेत्र वन्दना को गये हैं। जिन लोगों ने वन्दना कर ली है उनके वाहन वापिस जा रहे हें रात्रि होने वाली हैं हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ अब पल पल कम होती जा रही है। चार माह से जंगल में आया मंगल समाप्त हो गया है।

34 वर्ष से अतिशय क्षेत्र श्री थूबोन जी के बड़े बाबा आसपास के शहरों , कस्बों और गांवों में निवास कर रही जैन समाज जैनेत्तर समाज आज भी छोटे बाबा के सानिध्य हेतु प्रतीक्षारत है। सभी आशान्वित हैं कि परम पूज्य आचार्य श्री ससंघ बड़े बाबा के दर्शनार्थ श्री देशनोदय अतिशय क्षेत्र थूबोन जी पर चातुमार्स हेतु अवश्य पधारेंगे।

इन 34 वर्षों में अतिशय क्षेत्र थूबोन जी का कायाकल्प हो गया है परम पूज्य आचार्य श्री जी के शिष्य पूज्य श्री सुधासागर जी के निर्देशन में क्षेत्र की तस्वीर बदल गई है क्षेत्र का नाम श्री देशनोदय अतिशय क्षेत्र थूबोन जी हो गया है। समस्त श्री मन्दिरों का जीर्णोद्धार हो गया है क्षेत्र के परम पूज्य बड़े बाबा देवाधिदेव 1008 श्री ऋषभनाथ स्वामी जी का छोटा मंदिर विशाल एवं भव्य श्री मंदिर जी में परिवर्तित हो गया है। सुरक्षा की दृष्टि से क्षेत्र के विशाल भू-भाग के चारों और पक्की बाउण्ड्रीबाल का निर्माण हो गया है आधुनिक यात्री निवास एवं धर्मशालाओं का निर्माण हो चुका है। नवीन एवं भव्य सन्त निवास निर्मित हो चुका है आर.सी.सी का पक्का सड़क मार्ग का कार्य पूर्ण हो गया है सुन्दर बगीचों का निर्माण किया जा रहा है, निर्माण कार्य निरन्तर जारी है इन सबके बाद भी अनेक संभावनायें शेष है।

यह समस्त संभावनायें श्री देशनोदय अतिशय क्षेत्र के परम पूज्य 1008 आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी जी एवं दिगम्बरत्व को आलोकित करते सूर्य के समान परम पूज्य चर्या शिरोमणि 108 श्री विद्यासागर जी महाराज (छोटे बाबा) के दर्शन एवं मिलन के साथ ही पूर्ण हो जावेगी।

सन् 2002 का परम पूज्य आचार्य श्री संघ का मंगलमय चातुर्मास श्री देशनोदय अतिशय क्षेत्र श्री थूबोन जी में ही सम्पन्न हो यही जन-जन की भावना है।

कविता

अमृत उत्सव

✻ ब्र. विवेक भैया, जामघाट ✻

नये दौर में हथकरघा ने पाई नई जवानी
विद्यासागर गुरुवार ने अब लिख दी नई कहानी
भारत भर के जेलों में हथकरघा खूब चला है
व्यसन वासना अपराधों का अब तो दौर टला है
कैदी जन को नई राह है खुशियों की बही रबानी
तागे के ताने बाने से राष्ट्र प्रेम का वस्त्र बना
अरे गुलामी चिन्हमिटाने गाँधी को यह शस्त्र बना
चरखे से डर गई फिरंगी ढूंढी जगह पुरानी
हथकरघा से स्वाभिमान मय रोजगार पाया है
वस्त्र अहिंसा बना जेल में प्रभु गुण को गाया है
अमृत उत्सव में स्वालम्बन की बात सभी ने ठानी

हमारे गौरव

पट्ट महादेवी शान्तला

महारानी शान्तला देवी- महाराज विष्णुवर्धन होयसल की पट्टमहिषी थी। राजा की लक्ष्मी देवी आदि अन्य कइ रानियाँ थी, जिन सबमें प्रधान एवं ज्येष्ठ होने के कारण यह पट्टमहादेवी कहलाती थी। क्योंकि अपनी सपत्नियों को यह नियंत्रण में रखती थी। इनका विरूद्ध उदवृत्त सतिगन्धवारण अर्थात् उच्छंरवल स्त्रोतों के लिये मत्तहस्ति प्रसिद्ध हो गया था अपनी सुन्दरता एवं संगीत वाद्य, नृत्य आदि कलाओं में निपुणता के लिये वह विदुषिरत्न सर्वक विख्यात थी। इनके पिता मारसिंगय्य पेग्गडे कट्टर शेख थे किन्तु जननी माचिकब्बे परम जिनभक्त थी। रानी के नाना बलदेव, मामा सिंगिमय्य अनुज दुधमहादेव तथा मामी, बहन, भानजे, आदि भी जैनधर्म के अनुयायी थे। स्वयं महारानी शालिदेवी बड़ी जिनभक्त और धर्मपरायण थी। मूलसंघ-देशीगण-पुस्तकगच्छ-कोण्डकुन्दाव्वय के महाचन्द्र त्रैविधदेव के प्रधान शिष्य प्रभाचन्द सिद्धान्ति देव रानी के गुरु थे, उनकी वह गृहस्थ शिष्या थी। इस धर्मात्मा महारानी ने श्रवणबेलगोल पर अपने नाम पर सवति गन्धवारण-बसति नाम का एक अत्यन्त सुन्दर एवं विशाल जिनालय बनवाया था जिसका श्री मण्डप 69 कुह लखा 35 फुंट चौड़ा है। सन् 1122 ई. के लगभग महारानी ने उक्त जिनालय में भगवान शान्तिनाथ की पांच फुट उत्तुंग एवं कलापूर्ण प्रभावली संयुक्त मनोज्ञ प्रतिमा प्रतिलिपित की थी। जिन प्रतिमा के दोनों और दो चौरी वाहक खड़े है, सुकनाशा में यक्ष-यक्षी किंम्पुरूष और महामानसी की मूर्तियाँ हैं। गर्भगृह के ऊपर सुन्दर शिखर है और मंदिर की बाहरी दीवारें कलापूर्ण स्तंभों से अलंकृत है। यह बसति अब भी उस स्थान का अति सुंदर मंदिर माना जाता है। महारानी ने 1123 ई. में जिनाभिषेक के लिये वहाँ गंग समुद्र नाम के सुन्दर सरोवर का निर्माण कराया था और बसदि में नित्य देवार्चन तथा उसके संरक्षण आदि के लिये राजा की प्रसन्नता से प्राप्त एक ग्राम स्वगुरु को भेंट किया था। उक्त बसदि के आचार्य पद पर उक्त प्रभाचन्द सिद्धान्ति देव के शिष्य मुनि महेन्द्र कीर्ति को नियुक्त किया गया था। अपने अनुज दुद्दमहादेव के साथ रानी ने एक ग्राम वीर कोणात्व जिनालय के लिये भी प्रदान किया था। सन् 1028 की चैत्र शुक्लपंच भी सोमवार के दिन महाप्रतापी विष्णुवर्धन होयसल की इस प्रिय पट्टमहादेवी महारानी शान्तला देवी शिवगंगे नामक स्थान में सम्भवतया स्वगुरु की उपस्थिति में धर्मध्यान पूर्वक स्वर्गगमन किया था। श्रवणबेलगोल के पीठाचार्य चारूकीर्ति देव के गृहस्थ शिष्य वोकिमय्य नाम के लेखक द्वारा रचित तथा पूर्वोक्त सवति-गन्धवारण वसदि के मण्डल के तीसरे स्तंभ पर उत्कीर्ण शिलालेख में महारानी के स्वर्ग गमन की घटना का वर्णन करते हुये उसके गुणों में धर्मकार्यो की भूरि भूरि प्रसंशा की है। लेख में उसे द्वितीय लक्ष्मी अभिनव रूक्मिणी पति हित सत्यभामा पतिव्रता-प्रभाव-प्रसिद्ध-सीता, उद्वृत्त-सवति-गन्धवारण, जीत, वाद्य, सूत्रधार, मनोजराज, विजय पताका, निजकुलाम्युदय, दीपक, प्रत्युत्पन्नवाचस्पति, विवेक वृहस्पति, लौकिक विख्यात् व्रतगुणशील चारित्र अन्तः करण, पुण्योपार्जनकरण कारण, सकल बन्दीजन, चिन्तामणि मुनिजन-विनेयजन-विनीत, चतुःसमय-समद्धरण, जिनधर्मकथा-कथन-प्रमोद- आराहामयथैसज्य शास्त्रदान विनोद, भव्यजन, वत्सला, जिनसमय- समुदित प्राकार जिनधर्मनिर्मल, जिनगन्धोदक-पवित्रीकृत- उत्तमांग और सम्यक्तचूड़ामणि कहा है। इसमें संदेह नही है कि इस धर्मात्मा महारानी के उपर्युक्त विरूद्ध सार्थक थे।

14 अगस्त 2021 हुई क्षुल्लक दीक्षायें जबलपुर प्रदाता आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

क्र.	नाम	स्थान	उम्र	दीक्षा नाम
01	मल्लकुमार जी जैन	संगम कॉलोनी जबलपुर	70 वर्ष	क्षुल्लक तत्त्वसागरजी
02	अजय मुन्ना लम्हेडा	लार्डगंज जबलपुर	62 वर्ष	क्षुल्लक तत्त्वार्थसागरजी
03	विजय कुमार	बड़ा फुहारा जबलपुर	58 वर्ष	क्षुल्लक तात्पर्यसागरजी
04	ब्र. संतोष बैक वाले	सागर (म.प्र.)	60 वर्ष	क्षुल्लक वर्धनसागरजी
05	विमलचंद सेठी	गया बिहार	74 वर्ष	क्षुल्लक वरदत्तसागरजी
06	कोमलचंद	भोपाल (म.प्र.)	74 वर्ष	क्षुल्लक वरदानसागरजी
07	मुलायमचंद	बांदकपुर (म.प्र.)	79 वर्ष	क्षुल्लक अनुग्रहसागरजी
08	शीतलचंद	सिलवानी (म.प्र.)	79 वर्ष	क्षुल्लक उपकारसागरजी
09	महेन्द्रकुमार	नरसिंहपुर (म.प्र.)	72 वर्ष	क्षुल्लक सहयोगसागरजी
10	कौशलजी	आगरा (उ.प्र.)	69 वर्ष	क्षुल्लक उपयोगसागरजी
11	नेमिचंद जी	अमरावती महाराष्ट्र	76 वर्ष	क्षुल्लक सुयोग्यसागरजी
12	प्रेमचंद सहारनपुर	ईसरी झारखंड	78 वर्ष	क्षुल्लक धर्मसागरजी
13	चमनलाल जी	हनुमानताल जबलपुर	54 वर्ष	क्षुल्लक सुधर्मसागरजी
14	रमेशचंद जी	चिरमिरि जबलपुर	78 वर्ष	क्षुल्लक सुगमसागरजी
15	ज्ञानचंद जी	शाढ़ौरा (म.प्र.)	80 वर्ष	क्षुल्लक प्रशमसागरजी
16	नन्हेलाल बड़कुर	नागपुर (महाराष्ट्र)	71 वर्ष	क्षुल्लक परमसागरजी
17	निर्मलचंद जी	बरेली (म.प्र.)	68 वर्ष	क्षुल्लक साम्यसागरजी
18	सुभाषचंद जी	शहपुरा (म.प्र.)	71 वर्ष	क्षुल्लक समकितसागरजी
19	अभय कुमार	आधारताल जबलपुर (म.प्र)	71 वर्ष	क्षुल्लक संगत कुमारजी
20	निर्मलचंद	गढ़ा जबलपुर (म.प्र.)	65 वर्ष	क्षुल्लक औचित्यसागर
21	सुन्दरलाल जी	तेंन्दूखेड़ा (म.प्र.)	75 वर्ष	क्षुल्लक भाग्यसागरजी
22	सुरेश स्वदेशी	तेंन्दूखेड़ा (म.प्र.)	73 वर्ष	क्षुल्लक आरोग्यसागर
23	वीरेन्द्र नायक	खुरई हथनी (म.प्र.)	77 वर्ष	क्षुल्लक शुक्लसागरजी
24	प्रकाशचंद जैन	परसोरिया (म.प्र.)	59 वर्ष	क्षुल्लक श्वेतसागरजी
25	प्रेमचंद जैन	बांदकपुर (म.प्र.)	69 वर्ष	क्षुल्लक विनयसागरजी
26.	अशोक कुमार	शिवनगर जबलपुर	62 वर्ष	क्षुल्लक विरतसागरजी
27.	महेन्द्र कुमार	शहडोल (म.प्र.)	67 वर्ष	क्षुल्लक अपारसागरजी
28.	सटकलाल जी	अशोकनगर (म.प्र.)	77 वर्ष	क्षुल्लक शमदमसागरजी

पिच्छिका परिवर्तन

क्र.	पिच्छिधारी का नाम	स्थान	पिच्छी प्राप्तकर्ता
01	आर्यिका श्री ऋजुमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति मोना धर्मेन्द्र सिंघई
02	आर्यिका श्री सरलमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति मीनू आलोक जी वर्धमान
03	आर्यिका श्री शीलमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति सुलोचना सचिन जी वर्धमान
04	आर्यिका श्री असीममति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति अनिता हेमेन्द्र जी समैया
05	आर्यिका श्री गौतममति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति सकुन सुनील जी मोदी
06	आर्यिका श्री निर्माणमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति प्रेरणा अनुराग शोले मुल्ला
07	आर्यिका श्री मार्दवमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति मालती अखिलेश जी गडोला
08	आर्यिका श्री मंगलमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति आशा अशोक जी गांधी
09	आर्यिका श्री चारित्रमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति हेमलता राजेन्द्र जी सिंघई
10	आर्यिका श्री श्रद्धामति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति सुलेखा कमलेश जी गडोला
11	आर्यिका श्री उत्कर्षमति माता जी	खुरई (म.प्र.)	श्रीमति सुमन संजय जी समैया
12	आर्यिका श्री दृढ़मति माता जी	खजुराहो	श्रीमति लता राकेश जैन खजुराहो
13	आर्यिका श्री पावनमति माताजी	खजुराहो	श्रीमति शचि सचिन जैन जबलपुर
14	आर्यिका श्री साधनामति माताजी	खजुराहो	श्रीमति रश्मि मनोज जैन शांतिनगर
15	आर्यिका श्री विलक्षणमति जी	खजुराहो	श्रीमति जयश्री विमल जैन छतरपुर
16	आर्यिका श्री वैराग्यमतिजी	खजुराहो	श्रीमति नेहा प्रदीप जैन खजुराहो
17	आर्यिका श्री अकलंकमति जी	खजुराहो	श्रीमति उषा अमिय वर्धन जैन सतना
18	आर्यिका श्री निकलंमति माताजी	खजुराहो	श्रीमति गीता राजकुमार जैन वाजनमठ
19	आर्यिका श्री आगममति जी	खजुराहो	श्री दीपक जैन बड़वाह
20	आर्यिका श्री स्वाध्यायमति	खजुराहो	श्रीमति इंद्रा वीरेन्द्र जैन खजुराहो
21	आर्यिका श्री प्रशममति जी	खजुराहो	श्रीमति निर्मला धीरेंद्र जैन टीकमगढ़
22	आर्यिका श्री मुदितमति माताजी	खजुराहो	श्रीमति अंतिम पवन कुमार जैन
23	आर्यिका श्री सहजमति माताजी	खजुराहो	श्रीमति सुमन राजेन्द्र जैन पन्ना
24	आर्यिका श्री संयममति माताजी	खजुराहो	श्रीमति सितारा विमल जैन बमीठा
25	आर्यिका श्री सिद्धमति जी	खजुराहो	श्रीमति गुणमाला संजय जैन जबलपुर
26	आर्यिका श्री समुन्नतमति जी	खजुराहो	श्रीमति ज्योति संदीप जैन सतना
27	आर्यिका श्री शास्त्रमति जी	खजुराहो	श्रीमति सुरुचि नरेन्द्र जैन पन्ना
28	आर्यिका श्री तथ्यमति जी	खजुराहो	श्रीमति नीतू बंगलेश जैन खजुराहो
29	आर्यिका श्री वात्सल्यमति	खजुराहो	श्रीमति मंजु संजीव जैन छतरपुर

30	आर्यिका श्री पथ्यमति जी	खजुराहो	श्रीमति नीतू राजेन्द्र जैन जबलपुर
31	आर्यिका श्री संस्कारमति जी	खजुराहो	श्रीमति मीना अनिल जैन गुना
32	आर्यिका श्री विजितमति जी	खजुराहो	श्रीमति रश्मि अनिल जैन, ब्र. शिवाली
33	आर्यिका श्री आप्तमति माताजी	खजुराहो	श्रीमति साधना देवेन्द्र जैन फट्टा परिवार
34	आर्यिका श्री स्वभावमति जी	खजुराहो	श्रीमति कमला सुरेश जैन बमीठा
35	आर्यिका श्री धवलमति जी	खजुराहो	श्रीमति डिम्पल शांत जैन खजुराहो
36	आर्यिका श्री समितिमति जी	खजुराहो	श्रीमति सुमन अरविंद जैन छतरपुर
37	आर्यिका श्री मननमति जी	खजुराहो	श्रीमति नीता सुशील जैन कटनी
38	मुनिश्री नियमसागरजी महाराज	तिरेहट्टीहोई	श्रीमति सुशीला अशोक जी किशनगढ़
39	मुनि श्री ऋषभसागरजी	तिरेहट्टीहोई	श्रीमति सुनीता संतोष करेन्नवर
40	मुनि श्री अभिनंदनसागरजी	तिरेहट्टीहोई	श्रीमति आशा बाहुबलि अनिगोल
41	क्षुल्लक श्री संयमसागरजी	तिरेहट्टीहोई,	श्री रुद्रप्पा नेमिनाथ करेन्नवर
42	आर्यिका श्रीअनंतमति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति शालिनी शैलेन्द्र बजाज
43	आर्यिका श्री विमलमति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति आशा मनोहर जैन, मुंबई
44	आर्यिका श्री निर्मलमति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति रंजना मनोज जैन, एमपीईबी
45	आर्यिका श्री शुक्लमति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति अंजना निर्मल जैन सट्टू भैया
46	आर्यिका श्री भावनामति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति श्वेता ईशान जैन, दीनदयाल
47	आर्यिका श्री आलोकमति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति कामिनी सतीश जैन
48	आर्यिका श्री संवेगमति जी	सागर (म.प्र.)	श्री निर्मल जैन सचिन जैन, सानोधा
49	आर्यिका श्री निर्वेगमति जी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति आशा कुंदन जैन, संजीवनी
50	आर्यिका श्री सविनय माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति मीना जिनेश जैन शिक्षक
51	आर्यिका श्री समयमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति प्रभा पंडित विमल जैन
52	आर्यिका शोधमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति प्राची सचिन कोठिया
53	आर्यिका शाश्वतमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति सुषमा राजीव भारिल्ल
54	आर्यिका श्री सुशीलमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति सुनीता राजेन्द्र जैन, बैंकवाले
55	आर्यिका श्री सुसिद्धमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति रीना नवीन जैन, नेहानगर
56	आर्यिका श्री सदयमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति सुलेखा अजय जैन, इंदौर
57	आर्यिका श्री उदारमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति सुलेखा अजय जैन, देवरी
58	आर्यिका श्री संतुष्टमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति मधु कुशल जैन, एमपीईबी
59	आर्यिका श्री निकटमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति उषा जिनेश जी शास्त्री
60	आर्यिका श्री अमितमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति सुमन अशोक, सोनम अक्षय

61	आर्यिका श्री निसर्गमति माताजी	सागर (म.प्र.)	पंडित सुखेदव जी
62	आर्यिका श्री भक्तिमति माताजी	सागर (म.प्र.)	श्रीमति आकांक्षा अरविंद जैन रिछावर वाले
63	मुनिश्री विनीतसागरजी महाराज	भवानी मंडी	श्री बाबूसिंह जी विजय कुमार प्रभव जैन
64	मुनिश्री चन्द्रप्रभसागरजी महाराज	भवानी मंडी	श्री ऋषभ जी, अर्पित जी जैन
65	मुनि श्री वीरसागरजी महाराज	आगरा	श्री विशाल जैन परिवार, आगरा
66	मुनि श्री विशालसागर जी	आगरा	श्री अमित जी बॉबी (ओल्ड ईदगाह)
67	मुनि श्री धवलसागरजी	आगरा	श्रीमति अंजू नीरज जैन
68	मुनि श्री प्रसादसागरजी	गुना (म.प्र.)	श्रीमति अर्चना गिरीश जैन
69	मुनि श्री उत्तमसागरजी	गुना (म.प्र.)	श्रीमति संगीता आजाद सिंघई
70	मुनि श्री शैलसागर जी	गुना (म.प्र.)	श्रीमति वंदना महेश जैन
71	मुनि श्री पुराणसागरजी	गुना (म.प्र.)	श्रीमति सरिता राजकुमार जैन, गुना
72	मुनि श्री कुंथुसागरजी	तेंदूखेड़ा म.प्र.	श्रीमति सुषमा प्रदीप चौधरी
73	मुनि श्री मार्दवसागरजी	पानीगांव म.प्र.	श्रीमति कमलाबाई बाबूलाल, वैरागढ़
74	मुनिश्री अभयसागरजी महाराज	सिरोंज म.प्र.	श्रीमति सपना सुनील जैन
75	मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज	सिरोंज म.प्र.	श्रीमति कल्पना संदीप जैन
76	मुनि श्री निरीहसागरजी महाराज	सिरोंज म.प्र.	श्रीमति शोभा धर्मेन्द्र जैन प्याराखेड़ी
77	निर्यापकश्रमणश्रीसमयसागरजीमहाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति मनीषा मनोज जी, सागर
78	मुनिश्री प्रशस्तसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति स्वाती प्रियेश जैन, सागर
79	मुनिश्री मल्लिसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति नेहा अनुपम जैन
80	मुनि श्री आनंदसागर जी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति अपर्णा सोनल जैन
81	मुनि श्री निर्ग्रन्थसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति स्नेहा विकाश जी
82	मुनि श्री निर्भ्रांतसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति सरिता अरविंद जैन
83	मुनि श्री निरालससागर जी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति किरण कमल जी
84	मुनि श्री निराश्रवसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति रूपाली नीतेश
85	मुनि श्री निराकारसागर जी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति मनाली विशाल
86	मुनिश्री निश्चिंतसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमती संध्या चक्रेशजी
87	मुनि श्री निर्माणसागर जी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति रूचि अनुरागजी
88	मुनि श्री निशंकसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति साधना अनिलजी
89	मुनि श्री निर्लेपसागरजी महाराज	सागर म.प्र.	श्रीमति शशि श्रीलाल जी
90	मुनि श्री समतासागरजी महाराज	सिलवानी म.प्र.	श्रीमति समीक्षा सनील मेडिकल सिलवानी
91	एलक श्री निश्चयसागरजी महाराज	सिलवानी म.प्र.	श्रीमति कल्पना मुकेश बेरुआ वाले

शरीर के स्वेद ग्रंथियों का महत्वपूर्ण योगदान व उनकी देखभाल

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

पसीना शरीर से पसीने की ग्रंथियों जिन्हें स्वेद ग्रंथियों भी कहते हैं निकलने वाला खारा तरल द्रव्य है। ये ग्रंथियों सिम्पेथैटिक नसों के नियंत्रण में कार्य करती हैं, जिसमें लगभग 99% दूषित पदार्थ युक्त पानी और 1% रक्त रहता है। हमारे शरीर के हानिकारक पदार्थ पसीने के रूप में निकलता है, यदि शरीर के अन्दर रहें तो अनेक व्याधियों का कारण बन जाता है। स्वेद ग्रंथियाँ दिन रात काम करती हैं और अदृश्य रूप से पसीना शरीर से निकलता रहता है। चौबीस घंटे में लगभग दो औंस तक पसीना निकलता है।

स्वेद ग्रंथियों, स्वेद ग्रंथि नली से जुड़ी रहती है जो त्वचा के रोम छिन्दों में खुलती है। हमारी त्वचा लाखों रोम छिन्दों से भरी पड़ी है, मनुष्य के शरीर में लगभग 23,00000 स्वेद ग्रंथियाँ पाई जाती है। प्रत्येक ग्रंथि की लम्बाई 1/15 इंच और कुल ग्रंथियों की लम्बाई लगभग 21/2 मील होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार हथेली में एक वर्ग इंच में लगभग 3528 रोम छिन्द पाये जाते हैं, रोम छिन्द की नली 1/4 इंच लम्बी होती है, एक वर्ग इंच में सारे रोम छिन्द की लम्बाई 882 इंच या 731/2 फुट होती है। उगली के सिरे पर छिद्रों को संख्या हथेली से अधिक होती है। एडी के पास रोम छिद्रों की संख्या प्रत्येक वर्ग इंच में 2268 होती है। सम्पूर्ण शरीर में स्वेद नली की लम्बाई लगभग 1,75,000 इंच या लगभग 28 किमी. होती है।

ईश्वरीय प्रदत्त कितना रहस्मय हमारा शरीर है 28 किमी. लम्बी नाली केवल पसीने को बाहर निकालने के लिये है। हमारे शरीर का सामान्य तापमान 98.4 फैरन हीट होता है, परन्तु 97 से 99 तक हो सकता है। सुबह के समय सबसे कम तापमान और शाम 5 से 7 के बीच सबसे अधिक होता है। स्वेद ग्रंथियाँ के कार्य -

1. वायो डायलेशन- ग्रीष्म ऋतु, अधिक परिश्रम करने या किसी आंतरिक बिमारी में शरीर का तापमान अधिक हो जाता है। तब धमनियाँ फैल जाती हैं और रक्त का प्रवाह त्वचा की ओर होने लगता है तब स्वेद ग्रंथियों की क्रियाशीलता बढ़ जाती है जिसके फल स्वरूप बूंद-बूंद के रूप में पसीना त्वचा के बाहर निकल जाता है व शरीर का तापमान नियंत्रण हो जाता है। **2. वासो कांस्ट्रिक्शन-** ठंड लगने अथवा भूख या चोट आदि लगने पर शरीर का तापमान कम हो जाने पर त्वचा की वाहिकाये सिकुड जाती है व त्वचा

पीली और ठंडी हो जाती है और पसीना निकालना बंद हो जाने से शरीर का तापमान बढ़ता है जिससे शरीर कांपता है और निचला जबड़े में किटकिट की आवाज आती है।

शरीर की त्वचा को स्वच्छ रखना कितना आवश्यक है आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं जिस प्रकार नालियाँ बन्द हो जाती हैं तो उसमें पानी सड़कर दुर्गंध युक्त हो जाता है वही दशा हमारे शरीर के स्वेद प्रणालियों की है अतः हम सभी को शरीर की सफाई विशेष तौर पर त्वचा को साफ रखना चाहिये। जिसमें 1. नहाने के पानी में नीम पत्तियों को पानी में उबालकर पानी का उपयोग करें या अच्छी गुणवत्ता का ऐंटीसेप्टिक घोल मिलायें। 2. नहाने में केमिकल युक्त साबुन की जगह आयुर्वेद या होम्योपैथिक विधि से तैयार साबुन या नीम का साबुन का उपयोग करना चाहिये। 3. शरीर में नारियल तेल में कपूर मिलाकर लगाने से त्वचा में संक्रमण नहीं होता। 4. शरीर में ऐलोवेरा का रस, नींबू का रस, पुदीना, तुलसी की पत्तियों का उपयोग करना। 5. त्वचा को बाहरी गर्मी, प्रदूषण, हानिकारक केमीकल क्रीम, लोशन से दूर रखना। 6. त्वचा को ज्यादा गर्म या ठंडे पानी से नहीं धोना, नरम कपड़े या व्रश का उपयोग करें। 7. शरीर में तनाव, नकारात्मक सोच से बचाना, प्राणायम योग ध्यान अच्छी नींद लेना चाहिये। 8. जब हम अधिक गर्मी से ठंडी जगह या ठंडी जगह से गर्म जगह जाते हैं स्वेद ग्रंथियों की क्रिया शीलता प्रभावित होती हैं जिससे सामान्य तापमान होने पर ही स्थान परिवर्तन करना चाहिये।

यदि स्वेद ग्रंथियों से पसीना स्वच्छता पूर्वक न निकले तो हम भयंकर व्याधियों से पीड़ित हो सकते हैं क्योंकि शरीर का विषैला मल रक्त में मिलकर चर्म रोग, खुजली, मुंहासे, फुंसिया, एक्जिमा, काले धब्बे आदि रोगों से पीड़ित हो सकते हैं। शरीर से अत्याधिक पसीना निकालना भी हानिकारक हो सकता है। जिससे पावों बगल में बदबू आना, पांव छिल जाना व अंगुलियों के बीच में घाव पहुँच जाना, पोषण क्रिया की विकृति, चर्बी बढ़ना, मन्दगति होना, मानसिक लक्षणों का बढ़ना शरीर कमजोर होना, जोड़ों का दर्द, शरीर कांपना, शरीर के अंगों में खुश्की होना, जुखाम, बुखार, दस्त लगना, ऐठन, दौरे पड़ना, सर्द गर्म होना आदि।

सभी चिकित्सक पद्धति में इलाज संभव है होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में लक्षणों के आधार पर कैलके रिया कार्ब, साइलीशिया, बैराटाकार्व, पैट्रोलियम, चायना, पल्सेटिला, फास्फोरस, कोनायम, सैम्बूकस, सेरिनम, सल्फर, एकोनाईट नक्स, कोलचिकम, इल्कामारा आदि औषधियाँ उपयोगी है। इलाज के पूर्व किसी अनुभवी योग्य चिकित्सक से परामर्श कर निदान करना जरूरी होता है।

हास्य तरंग

1. पत्नी-सेठी जी से आप झूठ बोलना कब बंद करोगे ? सेठी जी लेकिन मैंने झूठ कब बोला। पत्नी - अच्छा झूठ क्यों बोलते हो कल ही कौन बनेगा करोड़पति देखते हुये लाईट चली गई थी, तब बच्चों से कह रहे थे कि मैं किसी से नहीं डरता हूँ।

2. रेडीमेड ड्रेस बेचने वाले दो दुकानदारों में बड़ी प्रतिस्पर्धा चलती थी हमेशा एक दूसरे से सस्ता माल बेचने की कोशिश में लगे रहते थे। एक दिन दोनों दुकानदार चाय की दुकान पर मिले तो एक दूसरे से पूंछा समझ में नही आता, तुम मेरे से सस्ता माल कैसे बेच लेते है जबकि मैं तो जिस कपड़े से ड्रेस बनवाता हूँ उस कपड़ों को चोरी से मंगाता हूँ। दूसरा में भी तो सिली हुई ड्रेस चोरी से मंगवाकर बेचता हूँ।

3. नई नवेली पति पत्नी कहीं घूमने जा रहे थे। पति रास्ते में रूक कर पत्नी के लिये टाफी खरीदता है तो पत्नी कहती है अपने लिये भी कुछ ले लो। पति मैं बिना कुछ खाये भी चुप रह सकता हूँ।

4. सचिन पेंशन न मिलने पर सरकारी कार्यालय गये वहाँ उनके पूर्व परिचित मित्र को देखकर खुश होकर अपनी समस्या बताई तो मित्र बिना बात किये अगले सप्ताह आना। सचिन ने उनके हाथ में पांच सौ का नोट रखा तो मित्र ने पूंछा हाँ यार कैसे हो, भाभी जी बच्चे कैसे हैं, थोड़ा देर रूको काम हो जायेगा।

5. भावित अपने दोस्त को उल्टा लटका देखकर पूंछता है क्या बात हो गई। दोस्त मैंने सिर दर्द की गोली खाई है मुझे डर है वह गलती से पेट में न रह जाये।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✲ गुरुदर्शन

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- इसमें ब तथा स शेष खिलाड़ियों को पकड़कर रखेंगे। गुरु ही जाकर उन्हें आशीर्वाद देंगे। 2. सब खिलाड़ी मंडल में लंगड़ी स्थिति में रहेंगे। 3. अ गुरु बनकर एक ओर खड़ा रहेगा। उसके दो सहायक ब तथा स शेष को पकड़-पकड़कर गुरु के पास लायेंगे। गुरु उनके सिर पर हाथ रखकर उन्हें अपना शिष्य बना लेगा। अर्थात् वे खेल से बाहर हो जायेंगे। अ, ब तथा स भी लंगड़ी अवस्था में ही रहेंगे।

✲ अंधा चौकीदार

खिलाड़ियों की संख्या- 15-30

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- 50-60 से.मी. व्यास का एक मंडल बनाकर उसमें 10-15 पत्थर के टुकड़े/चप्पल आदि रखे। एक खिलाड़ी आँखों पर पट्टी बांधकर उसकी रक्षा करेगा। उससे बचते हुये वे पत्थर है जो स्वयंसेवक छुआ जायेगा या जो सबसे कम पत्थर उठायेगा। अब उसे चौकीदार बनना होगा।

✲ जय महावीर

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- मंडल में बैठकर सब 1,2,3 गिनती बोलेंगे। तीन से कटने वाले अंक (3,6,9,12) पर जय महावीर पांच से कटने वाले (5,10,15) पर जय महावीर तथा इन दोनों में से कटने वाले अंक (15,30,45) पर जय महावीर जय महावीर बोलना है। गलती करने वाले बाहर होते रहेंगे। एक चक्र पूरा होने पर अब उल्टी गिनती (100,99,98) बोलते हुये यही खेल होगा।

बाल कहानी

सड़क पर माँ

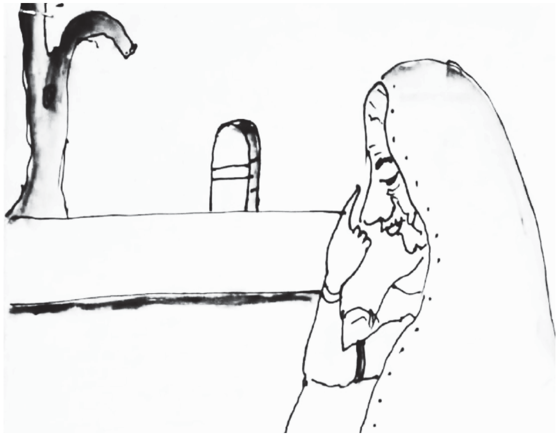

13 अप्रैल की दोपहरी में टीकमगढ़ के मोटे मोहल्ले में रहने वाली सुंदर बाई जिनकी उम्र 90 वर्ष थी। अनुविभागी पुलिस अधिकारी सुरेश सेजवाल अपनी गाड़ी से गस्त पर निकले हुये थे। सड़क पर बैठी सुंदर बाई को देखकर उन्होंने अपनी गाड़ी रोकी।

पहले तो डांटते हुये कहा क्यों अम्मा जी आपको पता नहीं लॉकडाउन चला रहा है। और तुम लॉक डाउन में बाहर बैठी हो।

सुंदरबाई ने अपनी व्यथा सुनाना शुरु कर दिया

बेटाः मेरा कोई घर ही नही है मैं किसके घर में चली जाऊँ।

सुरेश सेजवाल ने रूमाल निकाला और पसीना पोछा और कहा अम्मा जी कल तक आप जिस घर में रहती थी उसी घर में चली जाओ।

अम्मा बोलीः बेटा मेरे चार लड़के है। कल तक मैं मजले लड़के के पास रहती थी। और एक महीना तक उसने मुझे रखा कल फिर उसने धक्का मारकर निकाल दिया और कहा तेरे तीन बेटे और भी हैं। उनके घर जा और जो रखे उसके घर रह। सुरेश सेजवाल ने सुंदर बाई की कहानी सुनकर अपने भीतर का मानवीय दृष्टिकोण प्रकट किया और सुंदर बाई को चारों बेटों को थाने बुलवाया प्रकाशचंद्र जैन, सुभाषचंद जैन, जयकुमार जैन, मनोज कुमार जैन को भी पुलिस थाने ले आयी।

माता-पिता के भरण पोषण एवं पाल अधिनियम धारा 24 के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज किया। परंतु चारों बेटो ने अपने ऊपर कानून की लटकती तलवार को देखकर आत्म समपर्ण कर दिया।

संस्कार गीत

दो ज्ञान का उजेरा

तुम बिन न कोई मेरा सारे जग में अंधेरा
विद्यासागर गुरुवर मेटो भव का फेरा

1.
दौलत न काम आये गुरुवर चरण शरण है
विद्या सुविनय विभूषित गुरु वर तारण तरण है
हो तार तार विपदा जिसने भी मुझको घेरा

2.
आगम कुशल गुरुवर युगदृष्टा संत स्वामी
इतिहास रचा हो भाति हो मोक्ष गामी
विद्या का सूरजनि कला सद्‌बोध का सबेरा

3.
हे संत सदलगा के तुमसे है आश इतनी
झोली भरेंगे पूरी फैलाई मैंने जितनी
मैं आया तेरे दर पर दो ज्ञान का उजेरा

बाल कविता

हल्दी

हल्दी खाओ रोग भगाओ
कोरोना से बचते जाओ
रोग निरोधक हल्दी है
इससे मिटती सर्दी है
त्वचा तेज अरू साफ बनाये
संक्रामकता पास न आये
चोट दर्द को दूर भगाये
रोगाणु को मार गिराये
हल्दी एक मसाला है
रंगत देने वाला है
हल्दी की इक चुटकी खाओ
फिर हल्दी की महिमा गाओ

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

सम्मेदशिखर जी- आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के करकमलों से 14 नवम्बर 2021 को श्री दिगम्बर सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी मधुवन झारखंड में ब्र. श्वातम भैया, ब्र ब्रिजेश भैया, ब्र अविरल भैया, ब्र संजय भैया, ब्र अंकुश भैया को जैनेश्वरी दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री निर्ग्रंथसागरजी, मुनि श्री निर्मोहसागर जी, मुनि श्री निसंगसागरजी, मुनि श्री निवृत्तसागरजी, मुनिश्री निर्विकल्पसागर रखा गया।

लखनऊ- आचार्य श्री सुबलसागर जी महाराज के करकमलों से 14 नवम्बर 2021 को डालीगंज लखनऊ में दीक्षायें क्षुल्लक अनुभव सागरजी, ब्र. अशोक भैया आष्टा, ब्र जयकुमार जी भिण्ड, ब्र. राजेश जी भोपाल को जैनेश्वरी दीक्षाये दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनि श्री अभेदसागरजी, मुनि श्री अगर्भसागरजी, मुनिश्री अडोलसागर जी, मुनिश्री अचेलसागरजी रखा गया।

मांगीतुंगी महाराष्ट्र- आर्यिका श्री सुनंदामति माताजी करकमलों से क्षुल्लिका सुलोचनामति माताजी को आर्यिका दीक्षा श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी महाराष्ट्र में 16 नवम्बर 2021 को दी गई जिनका नाम आर्यिका सुबोधमति माताजी रखा गया।

आगामी दीक्षायें

सम्मेदशिखर जी- मुनि श्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलों से 3 दिसम्बर 2021 को मध्यलोक शिखर जी में ब्र. शकुन्तला बाई शिलापधार असम, ब्र. बबली बाई मुंबई को दीक्षायें दी जावेगी।

ईडर- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलो से 10 दिसम्बर 2021 को ब्र. कुसुम बहन दोशी को दीक्षा दी जावेगी।

बांसवाडा- आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. अंगुरी देवी शाहगढ़ को 14 दिसम्बर 2021 को कामरशियम कॉलोनी बांसवाडा में दीक्षा दी जावेगी।

समाधिमरण

शौरीपुर बटेश्वर- आचार्य श्री चैत्यसागर महाराज जी के सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री शौर्यमति माताजी का समाधिमरण 27 अक्टूबर 2021 को रात्रि 9.42 पर हुआ।

जबलपुर- ब्र. अर्चना दीदी बण्डा का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पिशनहारी मणिया जबलपुर में 16 नवम्बर 2021 को हुआ।

गढ़ाकोटा-श्री मति तारा बाई जी जो मुनि श्री अजितसागर महाराज जी की गृहस्थ अवस्था की मातेश्वरी थी जिनका समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी गढ़ाकोटा में 17 नवम्बर 2021 को हुआ।

पंचकल्याणक सम्पन्न

इंदौर-मुनि श्री मार्दवसागर महाराज जी के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर सुखलिया का पंचकल्याणक 22 से 27 नवम्बर 2021 को प्रतिष्ठाचार्य सनतकुमार विनोद कुमार रजवास, पं. भरत कुमार, पं. मनोज जी के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

नैनागिर-आचार्य श्री उदारसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र में 20 नवम्बर 25 नवम्बर 2021 को प्रतिष्ठाचार्य जयकुमार जी निशांत टीकमगढ़ पं. मनीष संजू टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

शहपुरा जबलपुर- आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 10 से 16 नवम्बर 2021 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर शहपुरा भिटोनी जिला जबलपुर का पंचकल्याणक ब्र. विनय भैया बण्डा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ।

सम्मेद शिखर जी-आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 14 से 19 नवम्बर 2021 तक 24 पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें क्षुल्लिका पूजाभूषण, भक्तिभूषण माताजी का निर्देशन रहा।

बनारस- आचार्य श्री विशदसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 21 नवम्बर से 25 नवम्बर 2021 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर हाथी बाजार बनारस में सम्पन्न हुआ।

अम्बाह- आचार्य श्री विनम्रसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में 21 से 26 नवम्बर 2021 तक श्री दिगम्बर जैन मंदिर अम्बाह का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई।

आगरा- मुनि श्री प्रणम्यसागर जी, मुनि श्री चन्द्रसागर जी महाराज के सान्निध्य में 15 से 20 नवम्बर 2021 तक एम.के.पुरम पश्चिमपुरी आगरा का पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ।

आगामी पंचकल्याणक

चरगुंवा-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के शिष्य निर्यापक मुनि श्री योगसागर जी महाराज के सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन मंदिर चरगुंवा जबलपुर का पंचकल्याणक 28 नवम्बर 4 दिसम्बर तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया बण्ड़ा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

गाजियाबाद- श्री दिगम्बर जैन मंदिर विश्वाचंल का पंचकल्याणक 27 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2021 तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

फिरोजाबाद-आचार्य श्री चैत्यसागर जी महाराज, आचार्य श्री विवेकसागर जी महाराज, आचार्य श्री सौभाग्यसागर जी महाराज, आचार्य श्री सुरत्नसागरजी महाराज, आचार्य श्री आदित्यसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर नित्या एनक्लेव फिरोजाबाद (उ.प्र.) में 26 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य पं. सतीश जी सरल दिल्ली की प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

तेंदूखेड़ा-आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के सुयोग्य शिष्य निर्यापक मुनि श्री समयसागर महाराज जी के सान्निध्य में पाषाण निर्मित श्री दिगम्बर जैन मंदिर तेंदूखेड़ा जिला दमोह का पंचकल्याण 9 दिसम्बर 15 दिसम्बर 2021 तक प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनय भैया की प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

सम्मेदशिखर जी- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में गोलापूर्व महासभा द्वारा निर्मित बुदेंलखण्ड भवन का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 8 से 13 दिसम्बर 2021 को प्रतिष्ठाचार्य में ब्र. जयकुमार जी निशांत टीकमगढ़, पं. सनत कुमार विनोद रजवास, पं. मनीष टीकमगढ़, पं. ऋषभ शिखर जी की प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगी। जिसमें सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य नवलकुमार मलैया मुंबई वालों को प्राप्त हुआ।

कुण्डलपुर- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुंडलपुर विहार का पंचकल्याणक 7 से 11 फरवरी 2021 को सम्पन्न होगा।

चांदखेड़ी- निर्यापक श्रमण श्री सुधासागर महाराज के तथा मुनि श्री प्रसादसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 14 से 19 दिसम्बर 2021 तक पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चांदखेड़ी में प्रतिष्ठाचार्य ब्र. प्रदीप सुयश अशोक नगर के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा।

कुटौरा- आचार्य श्री विनिश्चय सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 27 नवम्बर से 02 दिसम्बर 2021 तक पंचकल्याणक महोत्सव श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन जैनोदय तीर्थ कुटौरा घुंवारा छतरपुर (म.प्र.) में पं. सनतकुमार विनोद रजवास के प्रतिष्ठाचार्यत्व में संपन्न होगा।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर का वार्षिक उत्सव एवं महामस्तकाभिषेक संपन्न

इंदौर- श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर विद्यासागर नगर इंदौर का वार्षिक उत्सव एवं महामस्तकाभिषेक मुनि श्री मार्दवसागर महाराज जी के सान्निध्य में 28 नवम्बर 2021 को प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य श्री हर्ष जैन, श्री अमित जैन, श्री गौरव जैन, श्री संदीप धर्मचन्द्र जैन, श्री के.सी. जैन छतरपुर, श्री आशीष जैन बीना, संदीप जैन भाना, श्री सुरेश जैन बैंक, श्री सतीश जैन सतना, श्री अक्षय कासलीवाल आदि ने प्राप्त किया। मूलनायक पार्श्वनाथ छत्र चढ़ाने का सौभाग्य अमित जैन खुरई वालों ने प्राप्त किया।

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-2021

सन्मति तर्क सूत्र पुस्तक से लिये गये- यह पुस्तक कार्यालय में उपलब्ध हैं।

01. सन्मति तर्क सूत्र के रचयिता कौन है ?
02. सन्मति तर्क सूत्र में कुल कितनी गाथायें हैं ?
03. सन्मति तर्क सूत्र में कुल कितने अध्याय है ?
04. सन्मति तर्क सूत्र के पहले काण्ड का नाम क्या है ?
05. सन्मति तर्क सूत्र के तीसरे काण्ड का नाम क्या है ?
06. सन्मति तर्क सूत्र के दूसरे काण्ड का नाम क्या है ?
07. सन्मति तर्क सूत्र के प्रथम काण्ड में कितनी गाथायें हैं ?
08. सन्मति तर्क सूत्र के द्वितीय काण्ड में कितनी गाथायें हैं ?
09. सन्मति तर्क सूत्र के तृतीय काण्ड में कितनी गाथायें हैं ?
10. ज्ञाता और वक्ता के अभिप्राय को क्या कहते हैं ?
11. मूल नय कितने होते हैं ?
12. द्रव्यार्थिक नय का विषय क्या है ?
13. पर्यायार्थिक नय का विषय क्या है ?
14. गुण कौन से नय का विषय है ?
15. गुण और पर्याय के समूह को क्या कहते हैं ?
16. द्रव्य और गुण के विकार को क्या कहते हैं ?
17. आचार्य सिद्धसेन का गुणगान आदिपुराण के कौन से श्लोक में किया गया है ?
18. आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में आचार्य सिद्धसेन को किस रूप में माना है ?
19. निक्षेप कितने होते हैं ?
20. निक्षेप किस व्यवहार को बताता है ?
21. ऋजुसूत्रनय का क्या विषय है ?
22. नैगमनय किसको ग्रहण करता है ?
23. नैगमनय कितने काल को ग्रहण करता है ?
24. निरपेक्ष नय क्या होता है ?
25. द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नय दोनों परस्पर में कैसे होते हैं ?
26. संग्रहनय कौन सी सत्ता ग्रहण करता है ?
27. द्रव्य का लक्षण क्या है ?
28. योग के निमित्त से कौन-कौन सा बन्ध होता है ?
29. कषाय के निमित्त से कौन-कौन से बन्ध होते हैं ?
30. निरपेक्ष नय कैसा होता है ?
31. सापेक्ष नय कैसा होता है ?
32. एक क्षण की पर्याय कौन सी पर्याय होती है ?

33. सदृश्य प्रवाह वाली कौन सी पर्याय होती है ?
34. सप्तभंगी न्याय में स्वचतुष्टय ग्राही कौन सा भंग होता है ?
35. सप्तभंगी न्याय में परचतुष्टय ग्राही कौन सा भंग होता है ?
36. द्रव्य में कौन सी दो पर्यायें होती है ?
37. जैनेन्द्र दृष्टि में क्या होता है ?
38. छद्मस्थ के ज्ञान और दर्शन कैसे होते हैं ?
39. केवलज्ञानी के ज्ञान और दर्शन में किस चीज का भेद नहीं होता है ?
40. श्वेताम्बर मत में केवलीज्ञान के ज्ञान और दर्शन में क्या नहीं माना जाता है ?
41. केवलज्ञानी के युगपत कौन से दो उपयोग होते हैं ?
42. मनः पर्याय ज्ञान होता है किन्तु क्या नहीं होता है ?
43. अवग्रह कौन से ज्ञान में होता है ?
44. तत्वार्थ की रूचि को क्या कहते हैं ?
45. श्रुतज्ञान में कौन सा शब्द लागू नहीं होता है ?
46. सम्यग्ज्ञान होने पर नियम से क्या होता है ?
47. वह कौन सा ज्ञान है जो कभी नष्ट नहीं होता है ?
48. गुणी से गुण किस रूप नहीं होता है ?
49. अनन्त ज्ञान को क्या कहते हैं ?
50. वस्तु की दो वह कौन सी चीजें हैं जो वस्तु से कभी भिन्न नहीं होती है ?
51. सामान्य यदि बिना विशेष के हो तो क्या होगा ?
52. यदि सामान्य और विशेष अलग-अलग हों तो क्या होगा ?
53. अस्ति और नास्ति में कौन सा संबंध है ?
54. परिणमन को क्या कहते हैं ?
55. स्पर्श, रस, गंध, वर्ण किस द्रव्य के गुण हैं ?
56. एकान्त से अभेदवादी क्या हो जाता हैं ?
57. उत्पाद कितने प्रकार का होता है ?
58. कुम्भ की उत्पत्ति कौन सा उत्पाद है ?
59. आकाश में बादलों का उत्पन्न होना कौन सा उत्पाद है ?
60. अनेकान्त दृष्टि से वस्तु के अनेक धर्मों में क्या नहीं होता है ?
61. द्रव्य के सत को क्या कहते हैं ?
62. द्रव्य के असत रूप को क्या कहते हैं ?
63. धर्मवाद के कितने प्रकार होते हैं ?
64. दो अणुओं के संयोग से क्या उत्पन्न होता है ?
65. एक ही समय में द्रव्य में कौन से तीन धर्म रहते हैं ?
66. भव्य जीव के क्या उत्पन्न होता है ?
67. अभव्य जीव के क्या उत्पन्न नहीं होता है ?
68. जितने वचन होते हैं उतने क्या होते हैं ?

69. जितने नय होते उतने क्या होते हैं ?
70. सांख्य दर्शन के प्रसिद्ध गुरु का नाम है ?
71. बौद्ध दर्शन के प्रसिद्ध गुरु का क्या नाम है ?
72. वैषेशिक दर्शन के प्रणेता कौन हैं ?
73. महर्षि कणार कौन से दर्शन के प्रणेता है ?
74. अनित्य पक्ष को मानने वाला कौन सा दर्शन होता है ?
75. सतकार्यवाद मानने वाला कौन सा दर्शन हैं?
76. गति हेतुत्व वाला कौन सा द्रव्य है ?
77. स्थिति हेतुतत्व कौन से द्रव्य का गुण है ?
78. अवगाहना हेतुत्व किस द्रव्य का गुण हैं ?
79. वर्तना हेतुत्व किस द्रव्य का गुण हैं ?
80. आकाश द्रव्य में कितने प्रदेश होते हैं ?
81. इन्द्रिय से कौन सा उपयोग होता है ?
82. आँख से कौन सा दर्शन होता है ?
83. आँख छोड़कर शेष इंद्रियों से जो दर्शन होता है वह कौन सा दर्शन हैं ?
84. अवधि दर्शन किसे कहते हैं ?
85. संपूर्ण द्रव्य गुण और पर्याय को देखने वाला कौन सा दर्शन होता है ?
86. भक्ति मात्र से क्या नहीं होता है ?
87. अपनी प्रशंसा के पुल बांधने से क्या नष्ट हो जाता है ?
88. आचरण का सार क्या है ?
89. किन आचार्यों से जिनशासन में विडम्बना होती है ?
90. किस समय में लीन आचार्य सिद्धांत के प्रतिकूल होते हैं ?
91. अनेकान्त किस नय का भी साधक होता है ?
92. जिनवचन किसका हरण करता है?
93. आत्म प्रशंसा से क्या रूक जाता है ?
94. एकांतवाद से आगम अमृत क्या बन जाता है ?
95. एकांतीजन किसका नाश करते है ?
96. पक्ष का ज्ञान कैसा होता है?
97. एकांतीजन यदि सकलज्ञान का दंभ भरते हैं तो वे कहाँ जाते हैं ?
98. सन्मति तर्क सूत्र में कुल कितने पृष्ठ हैं ?
99. सन्मति तर्क सूत्र का पद्यानुवाद किसने किया ?
100. सन्मति तर्क सूत्र का भाष्य अनुवाद किसने किया ?

इन प्रश्नों के उत्तर आप प्लेन कागज पर लिखकर दिनांक हर माह 29 तारीख तक डाक द्वारा अथवा व्हाट्सअप नम्बर 6232967108 पर भेज सकते है। यह प्रश्न प्रत्येक माह 100-100 रहेंगें जिसका समापन दिसम्बर माह में किया जायेंगा।

जिसमें प्रथम पुरुस्कार 1 लाख रुपये, द्वितीय पुरुस्कार 51000/- रुपये, तृतीय पुरुस्कार 31000/- रुपये तथा सभी को सांत्वना पुरुस्कार दिया जावेगा। अतः आप भी उत्तर भरकर ज्ञानार्जक कर पुण्य लाभ लें।

वर्ग पहेली 266

1	2	3	4	■	5		6	7
8				■			9	
10		■	■	11		12		■
	■	13			■		■	14
■	15		■	16			■	
17			■		■	■	18	
	■	■	19		20	21	■	
22	23	24	■	■	25		26	■
27					■	28		

ऊपर से नीचे

1. संगीत के सुरों का समूह -4
2. शेर, बाघ -3
3. अंधकार -2
4. झुका हुआ, नमन करता हुआ -2
5. बुढ़ापे से रहित -3
6. तह, पटल -3
7. करूणा, कृपा, रहम -2
11. सहयात्री, साथ चलने वाला -5
12. छल, फरेब -3
13. गंभीर, घना, गहना -3
14. क्षमाधारी, क्षमा करने वाला -4
15. लगाव, प्रेम -2
17. समवशरण का प्रमुख मुनि, गणेश -4
20. आदत, सवय -2
21. शिक्षा (उर्दू) -3
23. धूल, धूरा -2
24. अविमत, विचार, वोट -2
25. पानी, नीर -2

बाये से दाये

1. लगातार, सतत प्रवाह मान -4
5. आदिनाथ भगवान की निर्वाण भूमि -4
8. दया, रहम, करूणा -4
9. बनाबटी, मक्कारी -2
10. अगर, यदि -2
11. चेष्टा -4
13. ऊष्ण, ऊष्म -3
15. रास्ता, मार्ग, पथ -2
16. गाड़ी -3
17. आकाश, अम्बर, आसमान -3
18. खोवा -2
19. निष्कपटता, सीधापन -4
22. धर्म, स्वभाव -3
25. अदब, शिष्टाचार -3
27. पर्दा, स्क्रीन, थ्रेटर का पर्दा -4
28. इच्छा, जिज्ञासा, चाहत -3

वर्ग पहेली 265 का हल

1 रा	2 फे	ल	■	3 व	4 म	न	■	5 ती
6 त	ल	■	7 र	त	न	■	8 पा	र्थ
■	■	9 सा	व	न	■	■	10 र	ङ्क
11 दे	12 व	ता	■	■	13 वी	र	■	र
14 व	स	■	15 स	16 त	त	■	17 कः	■
18 दि	न	■	■	19 ब	रा	20 ह	■	■
वा	■	21 श	22 मा	■	23 ग	र	■	24 स
25 ली	26 ला	■	27 त	28 न	■	29 क	30 स	र
■	31 र	ह	म	त	■	32 त	र	ल

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

मेरी प्यारी गुड़िया रानी

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।

२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।

३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.

४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

जैन विद्या संस्कृति प्रश्न मंच-इसे संभालकर रखें दिसम्बर माह में एक साथ चिपकाकर भेजना रहेंगे

होदरा:

कूपन नं-10

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

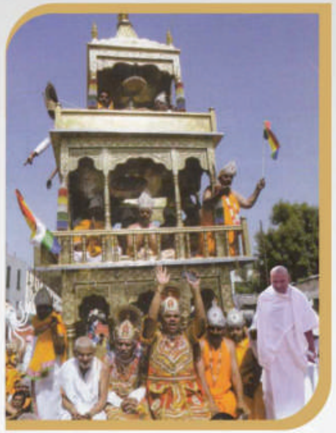

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध है। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 30/11/2021, पोस्टिंग दिनांक : 03/12/2021